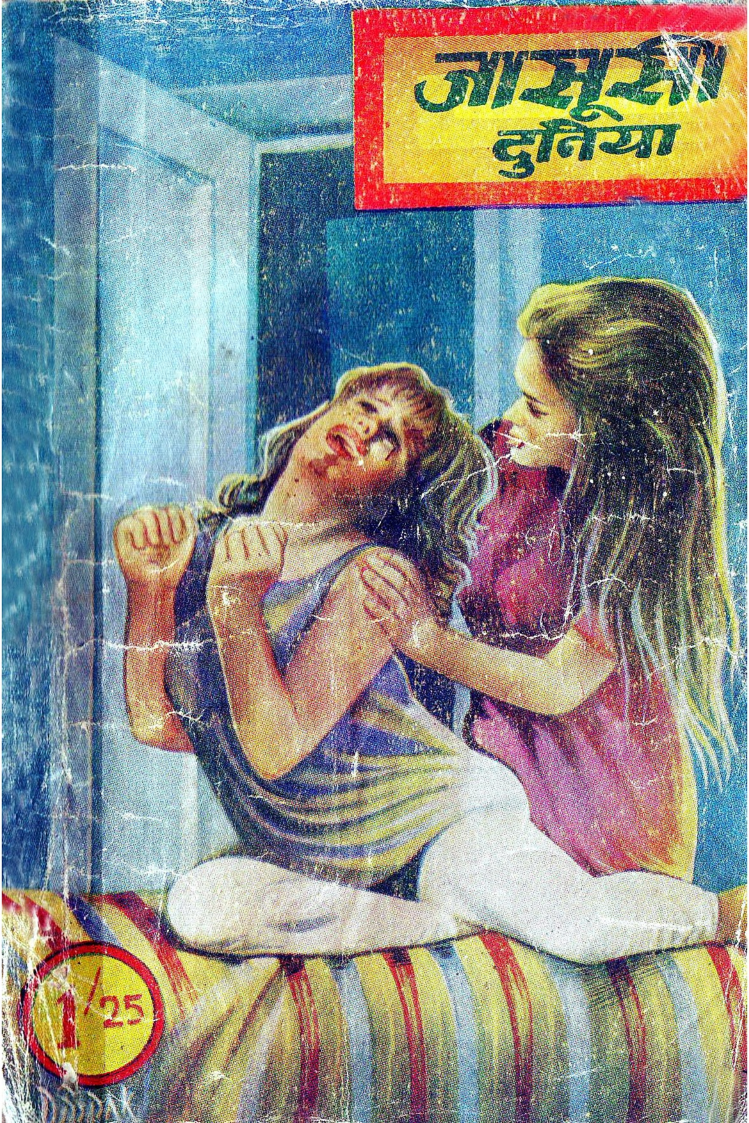

जासूसी
दुनिया
1/25

जासूसी दुनिया हिन्दी

का

सनसनी पूर्ण अंक

खून का उजाला

लेखक

श्री इब्ने सफी बी० ए०

अनुवादक

प्रेम प्रकाश

(२२८वां अंक)

वार्षिक मूल्य
१२ रुपये ५० पैसे

इस अंक का मूल्य
१ रुपया २५ पैसे

प्रकाशक :
जासूसी दुनिया प्रकाशन
इलाहाबाद-३

[इस कहानी के पात्र तथा घटनायें काल्पनिक हैं]

प्रकाशक :
जासूसी दुनिया प्रकाशन
इलाहाबाद—३

टेलीफोन नम्बर ५१२०

अब्बास हुसैनी, सम्पादक मुद्रक तथा प्रकाशक, ने नकहत पब्लिकेशन के लिये जनता प्रेस, इलाहाबाद से छपवाकर जासूसी दुनिया कार्यालय इलाहाबाद—३ से प्रकाशित किया

सम्पादकीय

जासूसी दुनिया का यह अङ्क "खून का उजाला" आप
[की] सेवा में उपस्थित है।

इसकी पूरी कहानी बड़ी अनोखी और विचित्र घटनायें सामने
[आ]ती है जो निस्सन्देह अपनी नवैयत के विचार से बहुत ही मनोरंजक
[औ]र सनसनीपूर्ण है।

कर्नल विनोद और कैप्टन हमीद जो कारनामा इस कहानी में
प्रस्तुत करते हैं वह उनके पिछले कारनामों से बिल्कुल ही भिन्न है और
[घ]टनाओं की नवैयत भी इतनी अनोखी है कि आप चकित रह जायेंगे।
[लेख]क इब्ने सफी हमेशा इस बात का विचार रखते हैं कि कहानी में
समानता न पैदा होने पाये इसलिये वह नित्य नये नये मार्ग पैदा करते
रहते हैं।

प्रस्तुत अङ्क "खून का उजाला" एक ऐसा उपन्यास है
[ज]ो अपनी अनोखी कहानी के कारण विवेक पर बहुत ही सुरुचिपूर्ण
प्रभाव छोड़ जाता है। इस कहानी के लगभग सभी पात्र अत्यन्त
रहस्यपूर्ण नजर आते हैं और हर पात्र अपराधी प्रतीत होता है—
[ले]किन इस कहानी की एक विशेषता यह भी है कि जिन जिन पात्रों
[प]र अपराधी और हत्यारा होने का सन्देह किया जाता है वह सब
[खु]द ही बारी बारी कत्ल होते रहते हैं और इस प्रकार जब कर्नल
[वि]नोद की तीक्ष्ण बुद्धि और सदैव खुली रहने वाली नजरें वास्तविक
[अ]पराधी को तलाश कर लेती हैं तो पढ़ने वाला चकित रह
[ज]ाता है।

इस उपन्यास की कहानी ट्रेन की एक यात्रा से आरम्भ होती
है। कैप्टन हमीद के कम्पार्टमेन्ट में एक झक्की बूढ़ा...एक मोटा

आदमी और एक लड़की भी है। हमीद अपनी प्रकृति के अनुसार उसे बूढ़े झक्की को छेड़ता रहता है। कभी कभी उस मोटे आदमी को भी निशाना बनाता रहता है···लेकिन जब वह लड़की उसे "साजिद भाई" कह कह सम्बोधित करती है तो उसकी खोपड़ी हवा में नाच कर विलम्बित हो जाती है—और फिर जब वही लड़की उसे कुंवर अमर सिंह की हवेली में भी दिखाई देती है तो हमीद का विस्मयऔर अधिक बढ़ जाता है। वह लड़की जिसका नाम साराड्यूड उर्फ चंचल था, हमीद के लिये अन्त तक रहस्य बनी रहती है। एक लड़की और भी है जिसका नाम तरुन है। पढ़ने वाले तरुन को बहुत दिनों तक याद रखेंगे।

कुंवर अमर सिंह की हवेली का वातावरण बहुत ही रहस्यपूर्ण प्रतीत होता है। सब से विचित्र बात यह है कि हवेली में न कोई बूढ़ा दिखाई देता है न कोई बच्चा। इसका कारण जान कर आप चौंक उठेंगे।

हमें यह घोषणा करते हुये हर्ष की अनुभूति हो रही है कि जासूसी दुनिया हिन्दी का आगामी अङ्क "आग की परियां" विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा।

लोहे का आदमी :—

जासूसी दुनिया हिन्दी के द्वितीय संस्करण में १५ दिसम्बर, सन १९७१ ई० को प्रकाशित हो रहा है। यह वह उपन्यास है जिसे इब्ने सफी ने चैलेन्ज के साथ लिखा था और अब यह अप्राप्य है।

जासूसी दुनिया प्रकाशन ने सदैव आपके लिये उत्तम जासूसी साहित्य प्रस्तुत किया है और आपने भी हमेशा सहयोग और उचित राय दी है इसलिये हमें आशा है कि आप आगे भीहमें अपने परामर्श और सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

—अब्बास हुसैनी

खून का उजाला

लेखक :—इब्ने सफी बी० ए०

ट्रेन पूरी स्पीड से आगे बढ़ती चली जा रही थी।

फर्स्ट क्लास कम्पार्टमेन्ट में लगभग दस यात्री थे और उन्हीं के मध्य हमीद जैसा सदाबहार आदमी भी मौजूद था। प्रकट है कि जहां हमीद हो वहां अट्टहासों की फुलझड़ियां अवश्य छूटेंगी—और फिर यहाँ तो एक सुन्दर और अग्रेंज़ा माडर्न लड़की भी मौजूद थी—मगर इस समय हमीद उस लड़की में दिलचस्पी न लेकर एक बूढ़े को अपना निशाना बनाये हुये था—बूढ़ा कुछ इस प्रकार का झक्की था कि हवा के झोंकों से भी मरने मारने को तैयार हो जाता था।

"वह देखिये श्रीमान जी—दरवाजा फिर खुल गया—" हमीद ने मुस्कुरा कर कहा।

"खुल गया तो तुम से क्या ?" बूढ़ा आंखें निकाल कर हमीद ही पर चढ़ दौड़ा।

"यही कि ठण्डी हवा के झोंके शरीर को झुलसा कर रख देंगे—" हमीद ने कहा। लोग हंसने लगे और बूढ़ा किचकिचा कर बोला।

"तुम होश में हो या नहीं—ठण्डी हवा के झोंके झुलसाते नहीं—।"

"आप कहते हैं तो फिर न भुलसाते होंगे—" हमीद ने कुछ इस प्रकार का मुँह बनाकर कहा कि लोग फिर खिलखिला पड़े।

"आप लोगों को हँसने की बीमारी है—" बूढ़े ने अपनी डाढ़ी खुजाते हुये कहा "क्या आप नहीं जानते कि अधिक हँसना पागलपन का लक्षण है।"

"जी हाँ—" हमीद ने सर हिला कर कहा "मैंने तो यहाँ तक सुना है कि अगर किसी कारणवश किसी की शादी न होती हो तो अधिक हँसने के कारण हो जाती है—एक बार की बात है कि...।"

हमीद ने एक लतीफा छेड़ दिया। बूढ़े ने कदाचित पराजय की अनुभूति से दूसरी ओर मुँह फेर लिया था लेकिन दूसरे लोग हमीद की कहानी में पूरी दिलचस्पी ले रहे थे! उन लोगों में से केवल एक आदमी ऊपर की बर्थ पर लेटा हुआ था। शेष सब नीचे ही वाली सीटों पर थे। बैठे हुये लोगों में एक मोटा आदमी भी था। अगर वह झक्की बूढ़ा न होता तो शायद हमीद के मजाक का निशाना वहीं बनता। एक लड़की भी थी जो हमीद के पास ही बैठी हुई थी और कोई मेगजीन देख रही थी। नाक नक्शा तीखा था और चेहरे से बुद्धिमानी टपक रही थी। बड़े फूलों वाली प्रिन्टेड साड़ी पहने हुये थी। हमीद का विचार था कि वह स्वयं उसकी ओर आकृष्ट होगी, मगर उसने किसी भी प्रकार की दिलचस्पी का प्रदर्शन नहीं किया था।

अचानक ट्रेन की गति धीरे धीरे कम होने लगी और बूढ़ा बड़बड़ा उठा।

"यह लीजिये—फिर स्टेशन आ गया—मैं कहता हूँ कि हर बार स्टेशन ही क्यों?"

"जी हां—और क्या—" हमीद ने पाइप सुलगाते हुये कहा

"अभी एक स्टेशन आया था। यह दूसरा भी आ गया और उसके बाद तीसरा भी आयेगा—हालांकि कायदे से स्टेशन के बजाय हाथी आना चाहिये था...।"

लोग एक साथ ठहाका मार उठे मगर बूढ़े ने न तो हमीद की बात पर ध्यान दिया और न लोगों के हँसने पर...वह अपनी धुन में बड़बड़ाता रहा।

"अभी गाड़ी यहां रुकेगी और घन्टों रुकी रहेगी। मैं कहता हूँ आखिर व्हाट इज दिस घिस घिस! रुकी तो घन्टों रुक गई और चली तो ऐंठ ऐंठ कर।"

जब बूढ़ा बड़बड़ा रहा था उसी समय वह लड़की उठ कर लेबोरेट्री की ओर जा रही थी। हमीद चेहरे पर क्रोध के लक्षण उत्पन्न करता हुआ बोला!

"आपको शर्म आनी चाहिये—आप की लड़की के बराबर हैं...।"

"क्या?" बूढ़ा फाड़ खाने वाले भाव में बोला।

"आप उन श्रीमती जी को कह रहे थे कि चली तो ऐंठ ऐंठ कर—यानी वह ऐंठ ऐंठ कर चल रही थीं।"

"होश की दवा करो—" बूढ़ा चीखता हुआ उठ खड़ा हुआ।

"वह तो हो रही है..." हमीद ने कहा, फिर यह सोच कर कि कहीं बात बढ़ न जाये, दूसरों से कहने लगा "स्टेशन आ गया। शायद इन महाशय को यहीं उतरना था।"

हमीद का संकेत उस आदमी की ओर था जो ऊपर वाली बर्थ पर लेटा हुआ था।

"तो फिर जगा दिया जाये..." एक ने कहा और उठ कर उस बर्थ तक गया और फिर लौट आया।

"क्या हुआ?" हमीद ने पूछा।

"वह साहब जाग रहे हैं...।"

"अरे भाई साहब ! स्टेशन आ गया है..." हमीद ने चीख कर कहा मगर लेटे हुये आदमी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह चुपचाप छत को देखे जा रहा था !

जब से हमीद डब्बे में सवार हुआ था उस समय से अब तक उस आदमी के पोज में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। न उसने दाहिने बायें करवट ली थी और न पैर फैलाये या सिकोड़े थे—बस कभी कभी हाथों में गति हुई थी बस। जब कि दो घन्टे बीत गये थे।

"अरे भाई साहब ! नीचे आइये—आपको याद कर रहे हैं—" हमीद ने बूढ़े की ओर संकेत करते हुये कहा।

लेटे हुये आदमी ने सर झुका कर देखा मगर उठा नहीं। वैसे ही लेटा रहा।

"बड़े विचित्र आदमी मालूम हो रहे हो...." हमीद ने झल्ला कर कहा "डेढ़ सेर का सर हिला रहे हो, मगर दो तोले की जबान नहीं हिला सकते।"

"शायद गूंगे हों..." किसी दूसरे ने कहा।

"नहीं भाई—" प्रथम बार बूढ़े ने ऐसे स्वर में कहा जिसमें झल्लाहट नहीं थी "जब यह ट्रेन में सवार हुये थे तो गाना गा रहे थे !

"आपको देख कर ना...." हमीद ने चहक कर कहा, वही गाना ना—मैं क्या करूँ राम, मुझे बुड्ढा मिल गया।"

लोग हँसने लगे। बूढ़ा भन्ना कर कुछ कहने ही जा रहा था कि मोटे आदमी ने ऊपर वाली बर्थ पर लेटे हुये आदमी के बारे में अपना विचार प्रकट किया।

"हो सकता है भाई साहब कोकीन प्रयोग करते हों।"

ऊपर लेटे हुये आदमी ने करवट बदली—गर्दन झुकाई और कुछ इस प्रकार मुँह खोल कर जम्हाई ली कि मुख का भीतरी भाग साफ नजर आ गया था।

"यह क्या?" मोटे आदमी ने कहा।

"भाई बता रहे हैं कि मैं कोकीन नहीं खाता..." हमीद ने कहा "कोकीन पान में खाई जाती है और इनका मुँह बता रहा है जैसे शायद इन्होंने जीवन में पान चखा भी न हो।"

"तो फिर यह बोलते क्यों नहीं?" मोटे ने कहा।

"नहीं बोलते तो तुम लोगों से मतलब!" बूढ़ा फिर झल्ला गया "क्या तुम लोग खुदाई फौजदार हो...।"

"मैं मिनिस्टर हूँ..." हमीद ने झट से कहा "बोलने के विभाग का मिनिस्टर। मेरा काम यह है कि खुद भी बोलता रहूँ और अपने साथियों को भी बोलने पर विवश करता रहूँ—।"

इतने में टी टी दाखिल हुआ और बूढ़ा चिड़चिड़ा कर बोला।

"अब यह नई विपत्ति। टी टी भी आ गया। टिकिट निकालिये ...इन्हें दिखाइये।"

"बहुत बड़ी विपत्ति..." हमीद ने कहा और बूढ़ा उसे घूरने लगा।

उधर टी टी टिकिट चेक करता हुआ उस सीट पर आ पहुंचा जिस पर हमीद था, मगर हमीद ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया और अपनी हाँकता रहा—आकृष्ट तो उस समय हुआ जब टी टी ने उससे "प्लीज" कहा।

"ऐसी वस्तु मांगने से क्या लाभ जिसे आप फिर वापस कर दें—" हमीद ने पूरी गम्भीरता के साथ कहा "और मेरा सिद्धान्त यह है कि जो वस्तु दे देता हूँ उसे वापस नहीं लेता। एक बार एक

लड़की ने नमूने के तौर पर मुझ से मेरा दिल मांगा था। मैंने दे दिया था—फिर वह कईं बार वापस करने आई थी मगर मैंने हर बार वापस लेने से इन्कार कर दिया था क्योंकि यह मेरे सिद्धान्त के विरुद्ध...।"

"आप टिकिट दिखाने जा रहे थे—" टी टी ने टोका।

"ओह टिकिट—" हमीद ने कोट की भीतरी जेब से एक टिकिट निकाल कर टी टी की ओर बढ़ा दिया।

"यह क्या..." टी टी ने आश्चर्य के साथ पूछा "यह तो एक ही है...।"

"जी हां—मगर आप चिन्ता न कीजिये ! अगले सीजन में इसकी शादी करा दूँगा...और यह एक से दो हो जायेगा...।"

"मजाक नहीं...दूसरा भी दिखाइये..." टी टी ने कहा।

"आज यह बात मुझे मालूम हुई है कि यात्रियों को दो टिकिट रखना चाहिये......एक असली और एक नकली......हमीद ने कहा।

"ठीक है...फिर मैं चार्ज करता हूँ..." टी टी ने बुरा मानते हुये कहा।

"जरूर कीजिये, मगर इसका भी ध्यान रखियेगा कि कहीं चार्ज करने के चक्कर में पड़ कर आप डिसचार्ज न हो जायें...." हमीद ने शुष्क स्वर में कहा। बात वास्तव में यह थी कि हमीद को अपमान का एहसास हुआ था, कदाचित इसलिये कि उसकी बगल में बैठी हुई लड़की अब हंस रही थी।

टी टी का मुंह और बिगड़ गया।

"क्यों साहब।" एक दूसरे आदमी ने टी टी से कहा "इन्होंने अपना टिकिट तो आपको दे दिया अब आप इनसे दूसरा टिकिट क्यों मांग रहे हैं।"

"इन महाशय के साथ यह भी हैं—" टी टी ने उसी लड़की की ओर संकेत किया, फिर चार्ज बुक निकालते हुये कहा "लाइये श्रीमती जी। अट्ठारह रुपये अस्सी पैसे।"

"साजिद भाई! मजाक अब समाप्त कीजिये और टी टी साहब को टिकिट दे दीजिये—" लड़की ने हँसते हुये कहा।

हमीद की खोपड़ी हवा में नाच कर बिलम्बित हो गई। उसने घूर कर लड़की ओर देखा।

"बेचारे टी टी साहब अधिक देर तक आपके मजाक से आनन्दित नहीं हो सकते···" लड़की ने उससे कहा, फिर टी टी से बोली "आप कुछ ख्याल न कीजियेगा। साजिद भाई बहुत दिलचस्प आदमी हैं और हमेशा इस प्रकार की शरारतें किया करते हैं···मगर दिल के बुरे नहीं हैं···।"

"क्यों श्रीमान जी। अब क्या ख्याल है!" टी टी ने मुस्कुरा कर चुभते हुये स्वर में हमीद से पूछा।

"ख्याल तो वही है जो पहले था···" हमीद ने कहा।

"तो फिर मैं चार्ज करता हूँ!"

"जरूर···मेरी ओर से जुर्माना भी।"

"मजाक समाप्त कीजिये साजिद भाई···लड़की ने कहा।

"साजिद!" हमीद ने उसे घूरते हुये कहा "कौन साजिद।"

"हाँ हाँ···आप कह देंगे कि मेरा नाम डाक्टर जैटू है—" लड़की ने हँस कर कहा "मगर टिकिट दे दीजिये।"

हमीद आश्चर्य से मुँह खोले बैठा रहा। लड़की अपनी सीट से उठी और हमीद के सामने खड़ी होकर बोली।

"दे दीजिये ना।"

"क्यों भेजा चाट रही हो—" हमीद ने भन्नाकर कहा "बिना टिकिट सफ़र करती हो और···।"

"आप लोग कुछ ख्याल न कीजियेगा । हम भाई बहन इसी तरह लड़ते रहते हैं—" लड़की ने हाथ उठा कर लोगों को सम्बोधित करते हुये कहा और फिर दूसरा हाथ हमीद की कोट की जेब में डाल दिया ।

"अरे अरे..." हमीद भौंचक्का होकर रह गया । उसी समय लड़की का हाथ बाहर निकला । चुटकी में टिकिट दबा हुआ था जिसे उसने टी टी की ओर बढ़ा दिया ।

टी टी ने टिकिट देख कर वापस कर दिया और लड़की हंसती हुई अपनी सीट पर बैठ गई ।

"क्या मूर्खता है—" बूढ़ा बड़बड़ाने लगा "टिकिट रखे हुये थे मगर दे नहीं रहे थे । यह क्या मजाक है ।"

"तो क्या कर लेंगे आप ।" हमीद झल्ला कर बोला ।

"यह देखिये—काट खाने को दौड़ रहे हैं..." बूढ़ा बोला ।

"जब कि मुझे आपको निगल जाना चाहिये था..." हमीद ने कहा ।

"क्षमा कीजियेगा..." एक ने कहा "इस समय तो आप ही चिड़चिड़ाहट का प्रदर्शन कर रहे है ।"

"कोई तुक है...." हमीद ने कहा "मुझसे दो टिकिट मांग रहा था...अरे भाई । माँगा होता तो आप से मांगा होता..." उसने मोटे आदमी की ओर संकेत किया, फिर उसी मोटे से पूछा "क्यों साहब । आपके पास तो दो टिकिट होगा...।"

"मेरे ऊपर तो दया ही कीजिये—" मोटे आदमी ने प्रथम बार मुँह खोला "देखिये । सब लोग हँस रहे हैं...।"

"इन लोगों को अपने अपने दाँत दिखाने का शौक है... अकारण हँस रहे हैं !" बूढ़ा बोला ।

"तो आपको क्यों दर्द हो रहा है..." हमीद ने कहा ।

बूढ़ा कुछ बोला नहीं—केवल घूर कर रह गया।

"हां तो सज्जनों।" हमीद ने हाँक लगाई "तारा गढ़ आ रहा है! हम लोग एक दूसरे से बिदा हो जायेंगे…मैं सब को सावधान कर देना चाहता हूँ कि होशियार रहियेगा।"

"मगर किससे?" एक यात्री ने पूछा।

"उन सुन्दर लड़कियों से जो जेब काटती फिरती हैं…जैसे इन्हीं श्रीमती को देखिये। कितनी सफाई से मेरा बटुआ उड़ा लिया है।"

"अपनी बहन का मजाक उड़ाते हुये तुम्हें लज्जा नहीं प्रतीत होती…" बूढ़ा फिर बोल पड़ा।

"और आपको नकली डाढ़ी लगाते हुये लज्जा नहीं प्रतीत होती…" हमीद ने कहा।

"मेरी डाढ़ी नकली है!" बूढ़ा हत्थे से उखड़ गया।

"नहीं है तो साबित करो कि असली है—वर्ना मुझे आज्ञा दो… मैं साबित करूँ।"

"तुम कैसे साबित करोगे?"

"डाढ़ी पकड़ कर झटका दूँगा। अगर मेरे हाथ में आ गई तो नकली और यदि आपके चेहरे ही पर लगी रही तो असली।"

बूढ़ा मुट्ठियाँ भींच कर कुछ इस प्रकार उठा जैसे हमीद पर घूँसे बरसायेगा, मगर वह उसे घूरता हुआ लेबोरेटरी की ओर बढ़ गया।

गाड़ी की गति अब बहुत ही कम हो गई थी और तारागढ़ के नगरांत दिखाई देने लगे थे। हमीद को तारागढ़ ही पहुंचना था। यह एक स्टेट थी। स्टेट के मालिक का नाम अमर सिंह था और हमीद को अमर सिंह से ही मिलना था मगर वह यह नहीं जानता था कि मिलने का ध्येय क्या है! टेलीफोन पर उसे कर्नल विनोद कावस के द्वारा इतना सन्देश मिला था कि उसे आज ही तारागढ़ पहुँच

कर कुँवर अमर सिंह से मिलना है—यह भी कहा था कि वह खुद भी किसी दिन तारागढ़ पहुँच जायेगा। चूँकि उसे कुछ भी नहीं मालूम था इसलिये उलझन भी थी। उसने विनोद से पूछा भी था कि वह तारागढ़ क्यों भेजा जा रहा है मगर हमेशा की तरह इस बार भी विनोद टाल गया था।

यह यात्रा होती तो मनोरंजक ही मगर उस लड़की ने उसे एक दूसरी उलझन में डाल दिया था। पहले तो उसने कुछ और सोचा समझा था, मगर जब स्टेशन पर उतरते समय भी उसने उसे साजिद भाई ही कह कर सम्बोधित किया तो उसकी झल्लाहट और बढ़ गई। उसने अपना अटैची केस भी उसी कुली के हवाले कर दिया था जिसने हमीद का सामान उठाया था।

"तुम आखिर हो कौन ?" हमीद ने झल्ला कर पूछा।

"आपकी बहन···" लड़की ने कहा।

"बकवास है···मेरे बाप ने शादी ही नहीं की थी।"

"न की होगी···मगर मैं हूँ आपकी बहन ही।"

"जबरदस्ती किसी की बहन बनना जुर्म है—।"

"मगर मैं जबरदस्ती आपकी बहन कहाँ बन रही हूँ—" लड़की ने कहा "मुझे यह सोच कर तकलीफ हो रही है कि आप मुझे इतनी जल्दी भूल गये। मगर मैं आज भी आपको उतना ही चाहती हूँ जितना बचपन में चाहती थी—जब कि आप बचपन ही से मुझे सताते रहे थे। सच कहती हूँ—अब भी जब ठण्डी हवा चलती है तो आपका मेरा कान ऐंठना याद आ जाता है—ओह—हम कितने दिन बाद मिले हैं—।"

वह बोलती जा रही थी और हमीद की झल्लाहट बढ़ती जा रही थी। उसने निश्चय कर लिया था कि उसका अटैची केस वह अपने साथ ही लेता जायेगा, मगर जब वह स्टेशन से बाहर आने के

बाद टैक्सी में सारे सामान रखवा कर बैठने लगा तो लड़की भी उसी टैक्सी में बैठ गई और टैक्सी चल पड़ी। हमीद ने इतना बुरा सा मुँह बनाया कि लड़की हँस पड़ी, फिर बोली।

"आप कुछ नाराज हैं शायद...।"

"नहीं...बल्कि मैं खुदकुशी यानी आत्म हत्या करने के बारे में सोच रहा हूँ।"

"जरूर सोचिये—मगर इतना बता देती हूँ कि इस टैक्सी के अन्दर आत्म हत्या न कीजियेगा वर्ना कत्ल के जुर्म में मेरे साथ साथ बेचारा टैक्सी ड्राइवर भी पकड़ा जायेगा—" लड़की ने कहा।

"तुम कब तक मेरा भेजा चाटती रहोगी!" हमीद ने भन्ना कर कहा।

"ओह! अब वह जमाना आ गया कि भाई को बहन की बातें बुरी लगने लगी...." लड़की ने ठण्डी सांस खींच कर कहा और खिड़की से बाहर देखने लगी और हमीद ने सन्तोष की सांस ली।

कुँवर अमर सिंह की हवेली स्टेशन से अधिक दूर नहीं थी। एक जमाना था जब यह तारागढ़ एक छोटी सी आजाद रियासत थी। उस समय अमर सिंह के पिता स्टेट के मालिक थे और बड़े ठाकुर कहे जाते थे। बड़े बड़े सरहंग उनके नाम से कांपते थे। उनकी अपनी पुलिस थी—छोटा सा सैन्य दल भी था। आठ तोपों की सलामी दी जाती थी...फिर आजादी मिलने के बाद जब रियासतों का विलीनीकरण आरम्भ हुआ तो बड़े ठाकुर ने एकान्तवास ले लिया और कुछ ही दिनों बाद परलोक सिधार गये। उनका स्थान नवयुवक कुँवर अमर सिंह ने लिया। स्टेट को एक लाख रुपये वार्षिक पेन्शन मिलती थी—लेकिन इससे राजमहल का खर्च भी पूरा नहीं पड़ता था। बड़े ठाकुर की ऐयाशियों के कारण स्टेट का बच

कोष पहले ही खाली हो चुका था—और स्टेट पर कर्ज भी लद गया था, मगर होनहार अमर सिंह ने रियासत की आन बान में अन्तर नहीं आने दिया। कोई खर्च भी कम नहीं किया। उन्होंने काश्तकारी की ओर ध्यान दिया—और अब उनके पास दो दो सौ बीघे के कई फार्म थे। चीनी की दो मिलें थीं। इस प्रकार वह शान के साथ खर्च पूरा कर रहे थे और छोटी सी पहाड़ी पर बना हुआ किला जो ठाकुर की हवेली के नाम से प्रसिद्ध था, उसी प्रकार गर्व से मस्तक उठाये अब भी खड़ा था जैसे उस समय खड़ा था जब तारा गढ़ का नाम तारागढ़ स्टेट था।

टैक्सी जैसे ही फाटक के अन्दर दाखिल हुई···हमीद को ऐसा लगा जैसे हवेली के अन्दर खुद एक छोटा मोटा शहर आबाद है···।

पोर्टिको में टैक्सी रुकी। हमीद ने टैक्सी ड्राइवर को पैसे देने के लिये पर्स खोला लेकिन ड्राइवर ने कहा।

"नहीं श्रीमान जी!"

"क्यों?" हमीद ने आश्चर्य से पूछा।

"यहाँ आने वालों से पैसे नहीं लिये जाते। उनके पैसे कुँवर साहब देते हैं। इस हवेली की यही रीति है—यही परम्परा है।"

इतीने देर में डिके खोल कर एक नौकर ने हमीद का सामान निकाल लिया था। फिर वह सामान सहित हमीद को दाहिनी ओर बने हुये अतिथि शाला में लाया। लड़की भी साथ ही थी, मगर न हमीद उससे बोल रहा था और न लड़की ही उससे बोल रही थी।

"आपका शुभ नाम?" नौकर ने बड़ी शिष्टता से पूछा!

"साजिद हमीद···" हमीद ने कहा "राजधानी से आया हूँ।"

"कुँवर साहब दोपहर से आपको याद कर रहे हैं...।" नौकर ने कहा और चला गया।

मगर दूसरे ही क्षण दूसरा नौकर आया और उसने पूछा।

"आप चाय पीना पसन्द करेंगे या काफी?"

"काफी..." हमीद ने कहा।

"सिगरेट कौन सा ब्रान्ड प्रयोग करते हैं?"

"मैं हुक्का पीता हूँ—।" हमीद ने कहा।

"खमीरा या दो रसा?"

"अनन्नास का खमीरा...।"

"जी—अच्छा—" कह कर वह चला गया।

फिर तीसरा आया और उसने पूछा।

"आप रात में सोने से पहले कुछ पढ़ने के आदी तो नहीं हैं?"

"आदी हूँ..." हमीद ने कहा।

"किस प्रकार की पुस्तक पढ़ना पसन्द करेंगे?"

"हाजी बहलोल की कहानी..." हमीद ने झल्ला कर कहा।

नौकर सर हिलाकर चला गया और लड़की जो अब तक मौन बैठी हमीद की झल्लाहटों से आनन्द उठा रही थी एकदम से खिलखिला कर हँस पड़ी। हमीद भन्ना कर कुछ कहने ही जा रहा था कि अचानक उसकी नजर एक प्रभावशाली व्यक्ति पर पड़ी जो उसी के कमरे की ओर आ रहा था। उसकी आयु पैंतीस चालीस के मध्य थी। बड़ा गोल चेहरा...विशाल नेत्र...दोहरा शरीर...लम्बा कद...चौड़ा वक्ष और अधरों पर मुस्कान।

कमरे में दाखिल होते ही उसने शेक हैन्ड के लिये हाथ आगे बढ़ाते हुये कहा।

"अमर सिंह!"

"ओह।" हमीद ने उठकर हाथ मिलाया।

"आपको कोई कष्ट तो नहीं हुआ?" अमर सिंह ने पूछा और फिर अचानक उनकी निगाहें लड़की की ओर घूम गईं और वह चौंक कर बोले "अरे! तुम कब आईं।"

"साजिद भाई के साथ ही आई हूँ..." लड़की ने कहा।

"क्या आप इनको जानते हैं?" हमीद ने पूछा।

"अच्छी तरह..." अमर सिंह ने हँसते हुये कहा "इसका नाम चंचल है। मेरी किजन की सहेली है। असल नाम तो सारा ब्यूड है मगर हम लोग इसे चंचल के नाम से ही पुकारते हैं। मैंने जब कर्नल साहब को पत्र लिखा था तो इसे भी लिख दिया था कि कर्नल से मिलना।"

चंचल उठी। उसने झुक कर खालिस लखनवी भाव में तीन बार हमीद को सलाम किया और फिर अपना सूटकेस उठा कर चली गई।

"हां...अब बताइये...?" हमीद ने कहा।

"कर्नल ने आपसे कुछ कहा है?"

"बस इतना ही कि मुझे आप तक पहुँचना है..."

"अच्छा..." अमर सिंह ने कुछ सोचते हुये कहा "मैं आप से रात में ग्यारह और एक के मध्य बात करूँगा तब तक आप आराम कीजिये। वैसे उचित समझिये तो एक नजर हवेली को देख लीजिये...।"

"आपके निजी नौकर कितने हैं?" हमीद ने पूछा।

"जब आप आये थे तो अस्सी थे मगर अब उन्यासी रह गये हैं। एक मर गया।"

"अरे!" हमीद के नेत्र फैल गये।

"जी हां..." अमर सिंह ने ठण्डी सांस लेकर कहा "अगर वह न मरा होता तो मुझे मरना पड़ा होता है।"

हमीद को यह स्थान बड़ा विचित्र मालूम हुआ था। यह हवेली से अधिक जिन्दा अजायब घर था जिसमें भांति भांति के जानवर मौजूद थे। हवेली के अन्दर रहने वालों की संख्या किसी दशा में भी सौ से कम नहीं थी। हवेली की चार दीवारी से मिले हुये आउट हाउसेज थे जिनमें नौकर रहा करते थे। सबसे दिलचस्प बात यह थी कि हमीद को न तो यहाँ कोई बच्चा दिखाई दिया था और न कोई बूढ़ा। जितने थे वह सब सोलह से चालीस के मध्य ही आयु वाले थे और हर आदमी अधीर तथा व्याकुल नजर आता था""इसका कारण यह था कि यहाँ कुछ दिनों से विचित्र प्रकार का खतरा मंडला रहा था और छोटी छोटी घटनायें हो रही थीं। कोई अज्ञात व्यक्ति कुँवर अमर सिंह को कत्ल करने की धमकियाँ दे रहा था"""मगर क्यों?

न तो इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास था और न यही कोई जानता था कि वह अज्ञात आदमी है कौन? हां इतना अवश्य सोचा जा रहा था कि वह अज्ञात व्यक्ति हवेली में रहने वालों में से ही कोई हो सकता है। दूसरे उस अज्ञात व्यक्ति ने अपने साहस और होने वाली घटनाओं से यह साबित कर दिया था कि वह जब चाहेगा कुँवर अमर सिंह को बड़ी सरलता से कत्ल कर सकता है।

हमीद उचटती नजरों से निरीक्षण करता हुआ हवेली के विभिन्न भागों में घूम रहा था। वह अकेला ही था। हवेली के नौकरों ने उसका साथ देना चाहा था मगर उसने किसी को साथ नहीं लिया था—अकेला ही चल पड़ा था।

इस समय सूरज पहाड़ियों की आड़ में छिप चुका था। हवाओं में मादक शीतलता भर आई थी। पक्षी अपने अपने घोंसलों की ओर गोल बनाये उड़े चले जा रहे थे। सामूहिक तौर पर बड़ी सुहानी

सन्ध्या थी—मगर हमीद अपने विचारों में डूबा हुआ था। सुनी हुई बातों और हवेली के निरीक्षण के मध्य मालूम होने वाली बातों ने उसे विचारों में गर्त कर रखा था। घूमता घामता वह हवेली के पश्चिमी भाग की ओर निकल आया। इस भाग में दूसरे भागों की अपेक्षा बहुत अधिक शान्ति थी और यहाँ का वातावरण बड़ा स्वप्निल लग रहा था। इस भाग को किसी सीमा तक वाटिका भी कहा जा सकता था क्योंकि यहाँ आम, जामुन, शहतूत, अमरूद के अतिरिक्त और दूसरे फलों के वृक्ष थे। फालसा, नीबू इत्यादि के पेड़ भी थे। एक तो सन्ध्या बेला—दूसरे इन वृक्षों के कारण यहां मलगजा सा अंधेरा फैल रहा था। चलते चलते अचानक चौंक कर वह रुक गया इसलिये कि उसके कानों में किसी फुसफुसाहट की आवाज पड़ी थी। वह सोचने लगा कि यहाँ इस समय कौन हो सकता है। उसने जेब में पड़े हुये रिवाल्वर पर बन्धन पुष्ट किया और धीरे धीरे पैर दबाता हुआ उसी ओर बढ़ा जिधर से उसके अनुमान के अनुसार आवाज आई थी। कुछ ही आगे बढ़ने पर अंगूर की बेलों की आड़ में उसे दो परछाइयाँ नजर आईं। वह पेड़ों की आड़ लेता हुआ उनके इतना निकट पहुंच गया कि उन की आवाजें उसे सुनाई देने लगीं पहली आवाज स्वच्छ रूप से उसके कानों में जो पड़ी वह किसी लड़की की थी। वह कह रही थी।

"सुना है कोई विपत्ति आई है—।"

"कैसी विपत्ति ?" पुरुष की आवाज।

"चंचल ने बताया है कि जो आदमी राजधानी से आया है उसका नाम हमीद है—और इसलिये आया है कि पता लगाये कि कुँवर जी को धमकियां देने वाला कौन है।"

"तो इसमें विपत्ति की क्या बात है ?"

"बात तो कुछ नहीं है—मगर न जाने क्यों मेरा दिल डर रहा

है। मुझे ऐसा लगता है जैसे कोई न कोई कत्ल होने वाला है—हो सकता है वह कुँवर जी ही हों—।"

"सुनो तरुन। जिसकी मौत आजाती है उसे कोई नहीं बचा सकता। तुम अकारण ही डर रही हो।"

"मैं तो इस लिये डर रही हूँ कि यदि ऐसी वैसी कोई बात हुई तो फिर हमारी लग्न रुक जायेगी।"

"हां—यह तो है—" पुरुष की आवाज ढीली पड़ गई।

"तो फिर क्यों न हम दोनों भी उस आदमी का पता लगाने की कोशिश करें जिस के कारण आज पूरी हवेली की बान तलवार के धार पर चल रही है।"

"तुम तो पागल हो रहीं हो तरुन—यह तो वही मसल हुई कि बड़े बड़े बह जायें और कौन कहे कि कितना पानी—"

"क्या तुम मुझे मूर्ख समझते हो सुरेश?"

"है तो कुछ ऐसी ही बात—" अट्टहास के साथ कहा गया।

फिर कुछ क्षणों तक खामोशी छाई रही और उसके बाद कुछ आहट महसूस हुई। हमीद और आड़ में हो गया। फिर उसने दोनों को कुंज से बाहर निकलते हुये देखा। थोड़ी देर बाद वह भी ओट से बाहर निकला और हवेली की ओर चल पड़ा।

अपने कमरे में पहुँचा तो एक नौकर बैठा ऊँघ रहा था। आहट पाकर वह जल्दी से उठकर खड़ा होगया और पूछा।

"आप भोजन यहीं करेंगे या...।"

"मेरा खाना यहीं लाना— मगर अभी नहीं..." हमीद ने कहा।

"जी अच्छा..." कहकर नौकर चला गया और हमीद दरवाजा अन्दर से बन्द करके आराम कुर्सी पर गिर पड़ा और सोचने लगा। हवेली में सैकड़ों आदमी थे कुँवर के बाप के चाचा—कुँवर के चाचा मौसी मामा और इन सब के परिवार के लोग। कुछ स्थानीय कालेज

में पढ़ते थे और कुछ शिक्षा प्राप्त करके ऐश कर रहे थे। कुछ लोग ऐसे भी थे। जो बड़े ठाकुर के केवल मित्र थे। परिवार के लोग भी हवेली ही में रहते थे। कुँवर की शादी नहीं हुई थी और उन्होंने एलान कर दिया था कि वह शादी करेंगे ही नहीं··· आखिर हवेली में रहने वालों में से ऐसा कौन हो सकता है जो कुँवर को धमकियां दे रहा है। अगर यह धमकी ब्लैक मेलिंग के लिये है तो फिर इसकी नवैयत कुछ दूसरी हो सकती है···और यदि धमकी सच मुच कत्ल ही के लिये है तो फिर वही आदमी कुँवर को कत्ल करना चाहेगा जिसे कुँवर की मौत से लाभ हो—।

एक दिलचस्प बात यह भी मालूम हुई थी कि विगत पांच वर्षों से हवेली में कोई शादी नहीं हुई थी—लेकिन इससे भी विचित्र बात यह थी कि हवेली में न कोई बूढ़ा था न कोई बालक।

वह सोचता रहा कि नौकर भोजन ले कर आगया। भोजन कर के उसने काफी पी और जब नौकर बर्तन ले कर चला गया तो वह पाइप सुलगा कर लान पर आगया। चांदनी छिटकी हुई थी और हर वस्तु साफ नजर आ रही थी।

टहलते टहलते वह आचानक चौंक पड़ा। उस मार्ग पर जो हवेली के पिछले भाग की ओर जाता था उसे एक परछाईं सी नजर आई थी। आंखें फाड़ कर देखा तो वह वही चिड़चिड़ा बूढ़ा था जिससे ट्रेन में उसकी नोक झोक होती रही थी। उसने बूढ़े को पकड़ना चाहा, लेकिन वह हाथ न आ सका। उसके फुर्तीले पन हर वह चकित रह गया था। वापस पलटा ही था कि एक नौकर मिल गया। उसने सूचना दी कि कुँवर साहब अतिथि शाला में उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वह लम्बे लम्बे डग भरता हुआ जब अपने कमरेमें पहुंचा तो कुँवर अमर सिंह ने धीमी मुस्कान के साथ उस का स्वागत किया। हमीद ने दरवाजा अन्दर से बन्द किया और बैठता हुआ बोला।

"मैं पूरी स्थिति समझना चाह रहा हूँ कुँवर साहब।"

"कर्नल साहब कब तक आयेंगे?"

मैं उनके प्रोग्राम के बारे में कुछ नहीं जानता। आप मुझे सारी बातें बताइये। शायद मैं कुछ कर सकूँ।"

"क्या बताऊँ!" कुँवर ने हाथ मलते हुये कहा "इधर एक महीने से मुझे बराबर धमकियां मिल रही है कि मुझे कत्ल कर दिया जायेगा। पहले तो मैं इन धमकियों को मजाक में टालता रहा था लेकिन···।"

"ठहरिये!" हमीद ने टोका "पहली धमकी कब मिली थी?"

"आज से ठीक एक महीना पहले। मुझे अपनी कार की ड्राइविंग सीट पर एक कागज मिला था जिस पर लिखा हुआ था "कुँवर तुम सुबह का उजाला देख रहे हो, लेकिन तुम्हें खून का उजाला भी देखने के लिये तैयार रहना चाहिये।"

"आप की कार उस समय कहां खड़ी थी?" हमीद ने पूछा।

"फार्म के किनारे—।"

"आप के साथ कोई था?"

"नहीं—" कुँवर ने कहा "दूसरी बार मैं अपने फार्म पर खड़ा गन्ने की फसल देख रहा था कि एक बड़ा सा सांप तेजी से रेंगता हुआ मेरे पैरों पर से गुजर गया था। आज भी जब वह दृश्य याद आजाता है तो झुरझुरी सी आजाती है। सांप खेत में घुस कर गायब होगया था लेकिन मुझे अपने पैरों के पास एक कागज पड़ा हुआ मिला था जिस पर लिखा था "यह सांप तुम्हें डस भी सकता था। अब भी होश में आजाओ कुँवर वर्ना खून का उजाला देखना ही पड़ेगा।"

"आप ने फार्म के आस पास किसी को देखने या तलाश करने की कोशिश की थी?" हमीद ने पूछा।

"हां—मगर कोई नहीं दिखाई दिया था। इन दोनों घटनाओं से मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा था कि मुझे धमकी देने वाला फ़ार्म के आस ही पास कहीं रहता है मगर बाद में यह धारणा गलत साबित हुई थी...इसलिये कि एक रात मैं अपने कमरे में बैठा हुआ हिसाब किताब देख रहा था कि अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मेरे कमरे के सामने खड़ा है। मैंने सर उठा कर जब दरवाजे की ओर देखा तो कोई आदमी मुझे भागता हुआ दिखाई दिया था। मैं भी उठा और दरवाजे की ओर झपटा, मगर दरवाजे से बाहर नहीं निकल सका क्योंकि दरवाजे के पास ही अन्दर की ओर एक कागज पड़ा हुआ था। उसे उठाकर देखने लगा। लिखा था जिस प्रकार यह कागज तुम्हारे कमरे में डाला गया है उसी तरह तुम्हें गोली भी मारी जा सकती थी। चाकू फेंक कर भी तुम्हें समाप्त किया जा सकता था—मगर फिर सावधान किया जा रहा है।"

"आपने पुलिस को सूचना दी थी?" हमीद ने पूछा।

"नहीं...पुलिस को सूचना देने का यही अर्थ होता कि होता हवाता तो कुछ नहीं—एक दूसरी विपत्ति सर आ जाती—इसलिये मौन ही रहा। फिर आज से लगभग दस दिन पहले मुझे फिर धमकी मिली थी और धमकी वाला कागज मेरी कोट की निचली जेब से बरामद हुआ था। विवरण इस प्रकार है कि मैं एक जन समारोह में भाग लेकर लौट रहा था कि अचानक मेरा हाथ कोटकी जेब में चला गया था। जेब में वह कागज मौजूद था। निकाल कर देखा तो उस पर लिखा हुआ था "जिस प्रकार यह कागज तुम्हारी कोट की जेब में पहुँच गया उसी प्रकार सीसे की गोली तुम्हारे सीने में भी उतर सकती है। अब भी सावधान हो जाओ—।" उसके बाद ही मैंने कर्नल विनोद को पत्र लिखा था—और फिर आपके यहां पहुँचने से थोड़ी ही देर पहले मेरा एक नौकर कत्ल कर दिया गया

था।"

"कत्ल।" हमीद ने चौंकते हुये पूछा।

"जी हाँ—यद्यपि डाक्टरों की रिपोर्ट यह है कि उसका हार्ट फेल हो गया था, मगर मेरी नजर में वह खुला हुआ कत्ल था। इसलिये कि उसकी लाश के पास मुझे एक पर्चा पड़ा हुआ मिला था जिस पर लिखा था "यह तुम्हें बचाना चाहता था इसलिये कत्ल कर दिया गया।"

"बस इसी आधार पर आपने इसे कत्ल मान लिया है?" हमीद ने पूछा।

"नहीं—उसकी मौत विचित्र स्थिति में हुई थी। वह हृदय रोग ग्रसित था—साधारण से झटके पर मर सकता था। डाक्टरों ने उसे हिलने डुलने के लिये मना कर रखा था। दूसरे नौकरों का बयान है कि उन्होंने उसे उसके कमरे से निकल कर मेरे कमरे की ओर भागते हुये देखा था। इसी भागने में वह ठोकर खा कर मुँह के बल गिरा था और मर गया था।"

"उसकी आयु क्या थी?" हमीद ने पूछा।

"पचास वर्ष···।"

"लेकिन मैंने तो सुना है कि हवेली में चालीस वर्ष से अधिक आयु का कोई है ही नहीं।"

"किसी की असल आयु क्या है इसका पता लगाना कठिन है—हाँ यह आप अवश्य कह सकते हैं कि देखने में कोई चालीस वर्ष से अधिक का नहीं मालूम होता···और फिर आयु वाली यह समस्या केवल हवेली में रहने वालों से सम्बन्ध रखती है······नौकरों से नहीं।"

"ऐसा क्यों है?" हमीद ने पूछा।

"इसके पीछे न कोई रहस्य है न कोई भावना···बस है···"

"आपसे कभी किसी वस्तु की मांग भी की गई थी ?"

"नहीं ?"

"आपने शादी क्यों नहीं की ?"

"कर्नल विनोद ने क्यों शादी नहीं की ?" कुँवर ने व्यंगात्मक ढंग से कहा, फिर मुस्कुरा कर बोले "और खुद आप अब तक कुँआरे क्यों हैं ?"

"आपकी मौत से किसको लाभ पहुँच सकता है ?" हमीद ने पूछा।

"किसी को भी नहीं—मेरे जीवित रहने ही में सब का लाभ है।"

"मैं समझा नहीं ?"

"जिस दिन मैं मर जाऊँगा यह हवेली और सारी जायदाद नीलाम हो जायेगी। मेरा बाल बाल कर्ज में बिका हुआ है और इसे हवेली के तमाम लोग जानते हैं।"

"आपका इन्शोरेन्स है ?"

"हां—"

"आपने किसे नामजद किया है ?"

"चार आदमियों को""चाचा जी के लड़के रनबीर सिंह"" मामा के लड़के जालिम सिंह""मौसी के लड़के महेन्द्र सिंह और अपने सौतेले भाई रनजीत सिंह को।"

"तो बड़े ठाकुर साहब ने दो शादियां की थीं ?" हमीद ने कहा।

"नहीं—शादी एक ही थी। रनजीत सिंह उनकी अनुचित सन्तान है। समाज की नजरों में वह हरामी है मगर मेरी नजरों में महान है। एम० सी० सी० करने के बाद रिसर्च कर रहा है।"

"आपने कर्ज जायदाद पर लिया है या निजी तौर पर…मतलब यह कि जायदाद रेहन तो नहीं रखी है ?"

"नहीं…रेहन नहीं है—लेकिन जायदाद का वारिस जिम्मेदार है कि वह मेरे कर्जे अदा करे ।"

"केवल आपका वारिस ही जिम्मेदार है ?" हमीद ने पूछा ।

"हाँ…"

"मान लीजिये कोई ऐसा आदमी भी है जो आपका वारिस नहीं है, लेकिन आपकी जायदाद में आधे भाग का मालिक अवश्य है…तो फिर वह आपके कर्जे अदा करने का जिम्मेदार नहीं हो सकता ।"

"जी हां…मगर आप कहना क्या चाहते हैं ?" कुँवर ने अधीरता के साथ पूछा ।

"रनजीत सिंह…" हमीद ने कहा "अगर वह यह साबित कर देगा कि वह बराबर का हिस्सेदार है तो उसे आप की जायदाद का आधा भाग मिल जायेगा……मगर उसे आपका कर्ज अदा नहीं करना पड़ेगा ।

"मैं रनजीत पर सन्देह करने के बारे में सोचना भी पाप समझता हूँ ।"

"मैं भी रनजीत पर सन्देह नहीं कर रहा हूँ—बस एक बात कही है…वैसे जालिम सिंह…रनवीर सिंह और महेन्द्र सिंह तो आपके वारिस हो ही सकते हैं ?"

"जी हां…मैंने इन्हीं तीनों को अपना वारिस बनाया भी है ।"

"तो कुँवर साहब ! अगर आप कत्ल कर दिये जायेंगे तो आप की जायदाद इन्हीं तीनों को मिलेगी और वारिस होने के नाते इन्हें आपके कर्ज भी अदा करने पड़ेंगे । कर्ज तो जायदाद बेच कर

अदा कर दिया जायेगा…कुछ नहीं बचेगा।"

"जी हाँ…"

"लेकिन इन्शोरेन्स से जो रुपये मिलेंगे वह भी इन्हीं तीनों के होंगे…और वही इनकी बचत होगी। आपका इन्शोरेन्स तो लाखों का होगा?"

"जी हाँ मगर…।"

"अगर मगर नहीं…हमें हर बात पर विचार करना है…यह बताइये कि इन चारों में से किस किस की शादी हुई है…?"

"किसी की नहीं…।"

"यह सारा ड्यूड कौन है?" हमीद ने पूछा।

"शायद मैंने आपको बताया था कि मेरी किजन की सहेली है…।"

"जी हाँ…मगर बात मेरी समझ में नहीं आई थी। इसलिये फिर से पूछा है।"

"मेरे दादा दो भाई थे। बड़े भाई की सन्तान से मैं हूँ। छोटे भाई की सन्तान से मेरे एक चाचा थे जो आज से पन्द्रह वर्ष पहले मर गये। उनके कई लड़के लड़कियाँ हैं। सबसे छोटी लड़की का नाम तरुन है। सारा ड्यूड या चंचल उसी तरुन की सहेली है।"

"सुरेश साहब कौन हैं?" हमीद ने पूछा।

"अरे!" कुँवर साहब एक दम चौंक पड़े "यानी कि आप…।"

"मैं सुरेश के बारे में पूरी जानकारी चाहता हूँ…" हमीद ने बात काट कर कहा।

सुरेश मेरे मित्र मिस्टर सेठी का भतीजा है। बहुत ही विवेकी और होनहार है। इस वर्ष उसका एम० सी० सी० का फाइनल है

मेरा विचार है कि सहन का विवाह उसी से कर दिया जाये—दोनों एक दूसरे को पसन्द भी...।"

कुँवर की बात समाप्त भी नहीं होने पाई थी कि कमरे की खुली हुई खिड़की से सनसनाता हुआ एक तीर आया और कुँवर तथा हमीद की कुर्सियों के मध्य वर्ती फासिले से होता हुआ सामने की कुर्सी में जा घुसा। हमीद एक क्षण की भी देर किये बिना दरवाजे की ओर झपटा।

कुँवर अमर सिंह तीर की ओर झपटे और तीर को खींचा। तीर में एक कागज लिप्टा हुआ था। उन्होंने उसे जलदी से खोला और टाइप की हुई इबारत पढ़ने लगे। पढ़ने के बाद उनका चेहरा श्वेत पड़ गया। उसी समय हमीद कमरे में दाखिल हुआ। वह हांफ रहा था।

"कक...कौन था ?" कुँवर ने अटक अटक कर पूछा।

"मैं नहीं बता सकता कि कौन था...बहर हाल जो भी था हाथ न आ सका, मगर यह आप इतना घबड़ाये हुये क्यों हैं !"

कुँवर ने उत्तर देने के बजाय वही कागज हमीद की ओर बढ़ा दिया हमीद खड़ा ही खड़ा पढ़ने लगा। लिखा था 'कुँवर ! यह तीर तुम्हारा दिल भी छेद सकता था। जिन चार आदमियों पर तुम दोनों सन्देह कर रहे हो उन में से जालिम सिंह की लाश तुम्हें उनके कमरे में मिलेगी। अगर अब भी तुम होश में नहीं आये तो खून का उजाला तुम्हारी लाश पर मुस्कुरायेगा।"

"ओह !" हमीद ने लम्बी सांस खींची, फिर जल्दी से बोला "चलिये ! जालिम सिंह के कमरे तक चलिये।"

जब यह दोनों जालिम सिंह के कमरे के पास पहुँचे तो हवेली के बहुत सारे लोग वहां पहुँच चुके थे और कुछ आते भी जा रहे थे। हमीद उन को हटाता हुआ कमरे में घुस पड़ा और जालिम सिंह

की लाश को देखने लगा। लाश के सीने में एक तीर पूरे फल के साथ घुसा हुआ था और लाश का एक हाथ तीर को पकड़े हुये था। लाश का पांव कुर्सी के नीचे दबा हुआ था, आंखे खुली हुई थी और उनमें भय की झलकियां नजर आ रही थी। सीने से निकल कर फर्श पर बहने वाला खून अभी जमा नहीं था। जहां तीर चुभा हुआ था उसकी दूसरी ओर सफेद कमीज पर कुछ काले धब्बे पड़े हुये थे और सिगरेट का बुझा हुआ टुकड़ा एक फर्श पर पड़ा हुआ था। इन सारी बातों से हमीद ने यह नतीजा निकाला कि जालिम सिंह कुर्सी पर बैठा सिगरेट पी रहा था कि तीर आकर उसके सीने में धंस गया। उसने तीर निकालने की कोशिश की और इसी कोशिश में अंगुलियों में दबा हुआ सिगरेट कमीज से रगड़ खा कर बुझ गया और नीचे गिर पड़ा। जालिम सिंह सीने से तीर निकालने में असफल रहा और कुर्सी सहित फर्श पर गिर कर दम तोड़ दिया। जालिम सिंह को मरे हुये दस मिनिट हुये होंगे...क्यों कि खून अभी ताजा था।

उसी समय सूचना मिली कि पुलिस आ रही है। हमीद ने मुड़ कर कुँवर की ओर देखा जो लाश के पास ही दोनों हाथों से सर पकड़े बैठे थे। उसने उससे पूछा।

"क्या पुलिस को किसी ने इस दुर्घटना की सूचना दी थी?"

"मैं नहीं जानता—मैं तो आप ही के साथ था—" कुँवर ने कहा!

"पुलिस स्टेशन यहाँ से कितनी दूर है?" हमीद ने पूछा।

"जीप से आने में भी पन्द्रह मिनिट का मार्ग है—" कुँवर ने कहा।

इतने में पुलिस आगई और हमीद धीरे से बाहर निकल आया। पुलिस इन्स्पेक्टर ने थोड़ी देर के बाद लाश वहां से उठवा दी और बाहर निकल कर बयान लिखवाना आरम्भ कर दिया। हमीद भी

एक ओर खड़ा सुन रहा था। पुलिस इन्स्पेक्टर ने कुछ देर बाद एक नौकर जिरह करना आरम्भ कर दिया।

"तुमने कितनी देर पहले जालिम सिंह को अन्तिम बार जीवित देखा था?"

"आधा घन्टा पहले—।" नौकर ने कहा।

"इसी कमरे में?"

"जी नहीं...बाटिका में..." नौकर ने कहा।

"बाटिका में तुम क्या करने गये थे?"

"ठाकुर जालिम सिंह को खोजता हुआ उधर पहुँच गया था—" नौकर ने कहा।

"किस लिये खोज रहे थे?"

"उन्हें यह सूचना देनी थी कि फल उनके कमरे में रख दिये गये हैं?"

"क्या वह रात में सोने से पहले फल खाया करते थे?"

"रात को वह भोजन नहीं करते थे......फल ही खा कर रहते थे?"

"रात में भोजन न करने का कारण क्या था?"

"कुछ दिनों से उनके मन में यह सन्देह उत्पन्न हो गया था कि किसी दिन रात के भोजन में उन्हें जहर दे दिया जायेगा—" नौकर ने कहा।

"उनके इस सन्देह का पता तुम्हें कैसे लगा था?"

"खुद उन्होंने ही मुझे बताया था—" नौकर ने कहा।

"तब तो यह भी बताया होगा कि उनका सन्देह किस व्यक्ति पर है?"

"जी हाँ...इस सम्बन्ध में उन्होंने ठाकुर महेन्द्र सिंह का नाम लिया था।"

हमीद ने कुंवर अमरसिंह की ओर देखा जिनका चेहरा अभी तक श्वेत पड़ा हुआ था। उधर इन्स्पेक्टर ने एक कानेस्टेबिल को कुछ संकेत किया और वहां से चला गया। इन्स्पेक्टर उसी नौकर से फिर जिरह आरम्भ की।

"हाँ...तो जब तुम वाटिका में पहुँचे थे तो वहाँ क्या हो रहा था।"

"ठाकुर जालिम सिंह और ठाकुर महेन्द्र सिंह में झगड़ा हो रहा था—" नौकर ने कहा।

"किस बात के लिये ?"

"दोनों ठाकुर एक दूसरे पर कत्ल का अभियोग लगा रहे थे...ठाकुर जालिम सिंह का कहना यह था कि ठाकुर महेंद्र सिंह उन्हें कत्ल करना चाहते हैं और ठाकुर महेंद्र सिंह कह रहे थे कि ठाकुर जालिम सिंह उन्हें कत्ल करना चाहते हैं।"

"फिर।"

"मुझे देख कर दोनो ठाकुर मौन हो गये थे......।" नौकर ने कहा।

"फिर क्या हुआ था।"

"मैंने ठाकुर जालिम सिंह को फल के बारे में सूचना दी थी और वापस लौट आया था...फिर कुछ ही देर बाद मैंने ठाकुर जालिम सिंह की चीख सुनी थी जो उन्हीं के कमरे से आई थी।"

"जब फल के बारे में तुम उन्हें सूचना देने वाटिका में गये थे तो क्या समय था।"

"साढ़े ग्यारह से तीन चार मिनिट अधिक रहे होंगे।" नौकर ने कहा।

"क्या तुमने समय देखा था।"

"जी हां...।"

"क्यों।"

"उनकी आज्ञा थी कि ठीक साढ़े ग्यारह बजे उनके कमरे में फल पहुँच जाया करें।"

"और चीख तुमने किस समय सुनी थी।"

"ग्यारह पचास पर..." नौकर ने कहा।

इन्स्पेक्टर उछल पड़ा, फिर उसने पूछा।

"क्या तुम्हारे पास घड़ी है?"

"जी हां—" नौकर ने कहा और अपनी कलाई दिखादी जिस पर घड़ी बंधी हुई थी।

"तुम्हारी घड़ी में क्या समय हो रहा है?"

"बारह बीस—" नौकर ने घड़ी देखते हुये कहा।

इन्स्पेक्टर ने अपनी घड़ी देखी। उस में भी यही समय था। फिर उसने दूसरे लोगों से चीख का समय पूछा। कुछ ने विवशता प्रकट की और कुछ ने ग्यारह पचास ही का समय बताया।

इन्स्पेक्टर ने गर्दन कुँवर अमर सिंह की ओर मोड़ी और बोला।

"सुना आप ने! कत्ल ग्यारह पचास पर हुआ और मुझे कत्ल की सूचना ग्यारह पैंतालीस ही पर मिल गई थी—है ना विचित्र बात।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है—" कुँवर ने माथा रगड़ते हुये कहा।

इतने में वह कानेस्टेबिल वापस आगया जो अपने इन्स्पेक्टर का संकेत पाकर चला गया था।

उसके साथ तीन चार नौकर भी आये थे। उसने इन्स्पेक्टर से कहा।

"ठाकुर महेन्द्र सिंह अपने कमरे में नहीं है श्री मान जी।"

"यहीं कहीं होंगे—जायेंगे कहा—" एक आदमी बोला।

"कहीं नहीं है साहब—" कानेस्टेबिल ने कहा "मेरे साथ साथ इन नौकरों ने भी उन्हें तलाश किया मगर वह कहीं नहीं दिखाई दिये।"

इन्स्पेक्टर ने अर्थ पूर्ण भाव से सर हिलाया, फिर कुँवर साहब से बोला।

"पोस्टम मार्टम होने के बाद अन्तिम संस्करण के लिये लाश आप के हवाले कर दी जायेगी। अब ऐसी कोई आवश्यक बात नहीं है जो पूँछू। मामिला बिल्कुल साफ है। कातिल महेन्द्र सिंह है—बच कर जायेंगे कहां।"

फिर इन्स्पेक्टर चला गया। उसने जालिम सिंह का कमरा बन्द करा दिया था। हमीद कुँवर को लिये अपने कमरे में वापस आ गया। कुँवर साहब बहुत ही नर्वस नजर आ रहे थे इसलिये हमीद ने उन से कुछ पूछना उचित नहीं समझा। थोड़ी देर बाद कुँवर साहब उठ गये और बोले।

"मैं अपने कमरे में जा रहा हूँ कैप्टन। अपने खुदा से दुआ कीजियेगा कि मैं कल सुबह का उजाला देख सकूँ।"

"मैं आप का कमरा देखना चाहता हूँ—" हमीद ने कहा।

"आइये—" कुँवर ने कहा और हमीद को लिये हुये अपने कमरे में आये। हमीद ने ध्यान पूर्वक कमरे को देखा, फिर अपने हाथों से कमरे की खिड़कियां बन्द करता हुआ बोला।

"हवेली में कितने टेलीफोन हैं और उनके कितने एक्सटेन्शन हैं?"

"केवल दो फोन हैं। एक्सटेन्शन नहीं है—" कुँवर ने कहा।

"एक तो मैं यही आप के कमरे में देख रहा हूँ। दूसरा कहां है?"

"दूसरा आप की बगल वाले कमरे में है।"

"वहां टाइपराइटर भी है!"

"जी हां क्यों?"

"जब हम बैठे बातें कर रहे थे और आप ने चार आदमियों पर सन्देह प्रकट किया था उसी समय तीर द्वारा आप को धमकी मिली थी, इबारत टाइप की हुई थी। दूसरे जालिम सिंह की हत्या से पहले ही पुलिस स्टेशन फोन पहुँच गया था कि जालिम सिंह कत्ल कर दिये गये। इसलिये मैं इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ कि वही टेलीफोन और वही टाइप राइटर प्रयोग किया गया था अगर यह सच है तो टेलीफोन या टाइप राइटर पर कहीं न कहीं उस आदमी की अंगुलियों के चिन्ह अवश्य मिलेंगे जिस ने उन्हें प्रयोग किया था।"

"तो क्या महेन्द्र सिंह पर आप का सन्देह नहीं है?"

"हम इतनी जल्दी किसी बात का फैसला नहीं करते—" हमीद ने कहा "अब मैं जा रहा हूँ। आप दरवाजा अन्दर से बन्द कर के सोइयेगा।"

"बाहर निकल कर वह अपने कमरे की ओर बढ़ा। मार्ग में ध्यान आया कि उसने कुँअर से यह तो पूछा ही नहीं कि दूसरे टेलीफोन वाला कमरा बन्द रहता है या खुला रहता है। यदि बन्द रहता है तो उसकी कुँजी किसके पास रहती है। कमरा कौन खोलता और बन्द करता है। लेकिन यह पूछने के लिये वह वापस नहीं लौटा बल्कि उस कमरे तक आया जिसमें टेलीफोन और टाइप राइटर था। दरवाजा खुला ही हुआ था मगर अन्दर अन्धेरा था। उसने पेन्सिल टार्च जला कर दरवाजे पर से ही अन्दर का निरीक्षण किया फिर हाथों में रूमाल लपेट कर दरवाजा बन्द किया और अपने कमरे का ताला लगा कर उस में बन्द कर दिया। लगभग आधे घन्टे तक अपने कमरे में पड़ा रहा उसके बाद कमरे से बाहर निकला और दबे पांव वाटिका के उस भाग की ओर चला जहां नौकर के बयान के अनुसार जालिम सिंह

महेन्द्र सिंह में झगड़ा हुआ था। वातावरण सन्नाटे में डूबा हुआ था। मगर कुछ ही दूर चलने के बाद उसे रुक जाना पड़ा। सन्नाटे में खुसुर फुसुर की आवाज उसे सुनाई दी थी। वह जमीन पर पेट के बल लेट गया और रेंगता हुआ आवाज की ओर बढ़ने लगा। खुसुर फुसुर की आवाजें क्रमशः साफ होती जा रही थी।

और फिर उसने खुसुर फुसुर करने वालों की आवाजें पहचान लीं। यह तरुन और सुरेश थे। तरुन कह रही थी।

"तुम ने इस समय यहां मुझे क्यों बुलाया है?"

"जब यह सुना कि जालिम सिंह कत्ल कर दिये गये तो बदहवास होगया!" सुरेश की आवाज सुनाई दी।

"बदहवास तो मैं भी हूं सुरेश—"

"क्यों न हम दोनों भाग चलें—!"

"यह नहीं हो सकता सुरेश। मैं हवेली की परम्परा पर कलंक का टीका नहीं लगाना चाहती।"

"लेकिन यह तो सोचो तरुन कि आखिर हम कब तक इसी प्रकार छिप छिप कर मिलते रहेंगे। कुँवर के अतिरिक्त हवेली का हर व्यक्ति हमारा मिलना जुलना पसन्द नहीं करता। जालिम सिंह ने यदि कभी हमें मिलते हुये देखा होता तो हम दोनों को कत्ल कर देता। यही हाल महेन्द्र सिंह का है—बताओ कि हम करें क्या।"

"मेरी समझ में कुछ—नहीं आता।"

"अब हमारी शादी फिर टल गई—कम से कम दो महीने के लिये—मैं कल रात फिर आऊँगा तब तक यह निर्णय कर लेना कि हमें क्या करना चाहिये। कौन सा कदम उठाना चाहिये। वैसे मेरा अपना विचार यह है कि इस हवेली में अब कत्ल होते ही रहेंगे और हमारी शादी टलती ही रहेगी—।"

"तुम किधर से आये थे ?"

"चारदीवारी फांद कर...और यह मेरा ही जिगरा है जो इस तरह आता हूँ। तुम जानती ही हो कि हवेली के चारों ओर खाई है। केवल फाटक ही से आया जाया जा सकता है, मगर उधर से मैं आ नहीं सकता—इसलिये यह खतरा मोल लेना पड़ता है—।"

"अच्छा अब जाओ...।"

फिर हमीद ने दोनों को चार दीवारी की बढ़ते हुये देखा, इसलिये वह भी रेंगता हुआ उसी ओर बढ़ने लगा। निगाहें उन्हीं दोनों पर जमी हुई थीं। दीवार के निकट पहुँच कर सुरेश ने जेब से डोर का गुच्छा निकाला जिसके एक सिरे से कोई जानवर बंधा हुआ था। जानवर वाला सिरा ही उसने दीवार पर फेंका और फिर बन्दरों के समान ऊपर चढ़ गया। दूसरे क्षण वह दूसरी ओर था।

तरुन दीवार ही के किनारे किनारे चलती हुई इमारत की ओर बढ़ने लगी...और फिर किसी वस्तु से ठोकर खा कर गिरी। उसके मुख से चीख निकल पड़ी। फिर वह उठी मगर आगे बढ़ने के बजाय उसी जगह खड़ी रही। उसके दोनों हाथ उसकी आँखों पर जमे हुये थे।

हमीद ने सर उठा कर देखा और चौंक पड़ा। तरुन के सामने एक आदमी धरती पर पड़ा हुआ था। हमीद समझ गया कि तरुन ने उसी से ठोकर खाई थी...लेकिन वह आदमी अब भी शिथिल क्यों पड़ा है। इस विचार के आते ही वह उठ कर खड़ा हो गया और तेजी से तरुन की ओर बढ़ा और फिर उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं। जमीन पर पड़ा हुआ आदमी मर चुका था। वह उकड़ूं बैठ गया और उसे देखने लगा। वह सचमुच मर चुका था, मगर उसके शरीर पर कहीं भी घाव का निशान नहीं था। जब

हमीद ने ध्यान पूर्वक देखा तो मालूम हुआ कि उसे गला घोंट कर मारा गया है। गर्दन की नसें फूली हुई थीं और रस्सी का निशान नरखरे पर साफ दिखाई दे रहा था। मरने वाला जवान और सुन्दर था। वह उठ कर खड़ा हो गया और तरुन की ओर देखने लगा जो खड़ी किसी ऐसी पत्ती के समान काँप रही थी जो बहुत तेज तूफान में घिर गई हो। उसकी निगाहें अब भी लाश पर ही जमी हुई थीं। हमीद ने उसे सम्बोधित कर के कहा।

"तुम इसे जानती हो।"

"जज...जी...हां..." तरुन ने कम्पित स्वर में कहा।

"कौन है।"

"ठाकुर महेंद्र सिंह...।"

"क्या।" हमीद उछल पड़ा, फिर तरुन की ओर देखता हुआ बोला "मैं तुमसे यह नहीं पूछूंगा कि तुम इस समय यहाँ क्या करने आई थीं...... बस इतना बता दो कि तुम्हें सुरेश पर तो सन्देह नहीं है।"

एक क्षण के लिये तरुन का चेहरा भयानक हो गया। उसने उत्तर देने के लिये मुँह खोला मगर आवाज न निकल सकी। हमीद ने कोमल स्वर में कहा।

"यह प्रश्न मैंने इसलिये किया है कि मुझे यह बात मालूम है कि महेंद्र और सुरेश के आपसी सम्बन्ध अच्छे नहीं थे।"

"जी हां...महेंद्र सिंह सुरेश को एक आंख देखना नहीं चाहते थे। उनको मेरा और सुरेश का मिलना बिल्कुल पसन्द नहीं था..." तरुन ने कहा।

"क्या तुम्हें इस बात का विश्वास है कि जालिम सिंह को महेंद्र ने कत्ल किया था।"

"जी नहीं—दोनों को कत्ल करने वाला...।"

तरुन की बात पूरी न हो सकी। उसकी गर्दन में रस्सी का फन्दा पड़ा था। उसके मुख से घुटी हुई चीख निकली थी और वह कई गज तक पीछे खिसकती चली गई थी।

हमीद एक क्षण के लिये बौखला गया'''फिर तेजी से लपका मगर समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। तरुन की आंखें निकली पड़ रही थीं। अगर वह मध्य से रस्सा कशी करता तो तरुन मर ही जाती। जिस ओर से डोर आई थी वह तो दिखाई दे रहा था मगर डोर का दूसरा सिरा कहाँ है यह नजर नहीं आ रहा था। हमीद सोचने लगा कि अगर वह दूसरे सिरे का पता लगाने की कोशिश करेगा तो तब तक तरुन जिन्दा न रह जायेगी।

फिर वह क्या करे। अचानक एक विचार बिजली के समान दिमाग में आया। उसने एक हाथ से तरुन को रोका और दूसरे हाथ से रस्सी पर दबाव डाला और फिर तरुन को छोड़ कर उसी हाथ से रस्सी का फन्दा खोलने की कोशिश करने लगा। रस्सी पतली और मजबूत थी। जब उसने देखा कि वह इसमें सफल नहीं हो सकता तो उसने फिर तरुन को रोका और दांतों से रस्सी काटने लगा। उधर तरुन भी फन्दा ढीला करने का प्रयास करने लगी।

अन्त में एक झटके के साथ रस्सी टूटी और तरुन मुंह के बल जमीन पर गिरी। मगर साथ ही हमीद की खोपड़ी भी झनझना उठी। वह चकरा कर गिरा, मगर किसी अज्ञात शक्ति ने उसे फिर उठा दिया। उसने देखा कि एक नकाबपोश अब उसके गले में रस्सी का फन्दा डालने जा रहा है। उसने अपने को बचाने की कोशिश तो की मगर असफल रहा सर पर पड़ने वाली चोट ने उसे बेकार कर दिया था। गले में रस्सी का फन्दा पड़ गया और उसका बन्धन सख्त होता गया, फिर उसे कुछ याद नहीं रह गया। होश आया तो

उसने अपने आपको अपने ही कमरे में मसहरी पर पड़ा हुआ पाया। गर्दन घुमाई तो विनोद को आराम कुर्सी पर बैठा सिगार पीता हुआ देखा। चौंक कर बोला।

"अरे! आप जन्नत में कैसे आ गये और यहाँ इतना सन्नाटा क्यों है...सब फरिश्ते कहां चले गये। कोई हूर भी नजर नहीं आ रही है।"

"प्लान तो ऐसा ही था कि अगर मैं न पहुँच गया होता तो तुम इस समय जन्नत या दोजख हीं में होते—" विनोद ने मुस्कुरा कर कहा "वैसे क्या तुम उस नकाबपोश को देख सके थे।"

"क्षमा कीजियेगा। मैं पर्दा नशीनों की ओर नहीं देखता..."

"मुझे भी अफसोस है कि मैं उसे न देख सका। वह निकल गया।"

"चिन्ता न कीजिये...बच कर जायेगा कहाँ। मैंने उसे पहचान लिया है।"

"कौन था!"

"सुरेश..." हमीद ने कहा।

"भङ्ग तो नहीं पी रखी है..." विनोद ने कहा।

"क्या मतलब।"

"सुरेश तो मेरे साथ आया था...वही मुझे खाई के उस पार से अन्दर लाया था।"

"मेरा दिल चाहता है कि वही बात मैं आपके लिये कह दूं जो अभी आपने मेरे लिये कही थी......वही भंग वाली बात...।"

"तुम्हें विश्वास नहीं हो रहा है।"

"नही..." हमीद ने कहा।

"क्यों!" विनोद ने पूछा।

"मैंने सुरेश को तरुन से यह कहते हुये सुना था कि वह खाई पार करके दीवार फलांग कर आता है। मैंने अपनी आंखों से देखा था कि उसके पास डोर का एक लच्छा था जिसके एक सिरे से कोई जानवर बंधा हुआ था और वह जानवर गोह ही हो सकता थी। उसी डोर के द्वारा वह बाहर गया था। जालिम सिंह और महेन्द्र सिंह दोनों ही उससे घृणा करते थे। वह नहीं चाहते थे कि वह तरुन से मिले, इसलिये उसने बारी बारी दोनों को खत्म कर दिया...।"

"अब मुझ से सुनो कि मैं सुरेश को क्यों निर्दोष समझ रहा हूं—" विनोद ने कहा "जब सुरेश वापसी के लिये दिवार से खाई की ओर उतर रहा था तो मैं वहाँ मौजूद था। उस ने मुझे बताया था कि वह तरुन को बाटिका में छोड़ कर आ रहा है। मैंने उससे अन्दर पहुँचने की इच्छा प्रकट की और मुझे वह दीवार ही के रास्ते से अन्दर ले आया।

जब मैं अन्दर पहुँचा तो वह नकाबपोश तुम्हारी गर्दन में फांसी का फन्दा डाल चुका था लेकिन शायद उसने भी मुझे दीवार से नीचे उतरते हुये देख लिया था—इसलिये तुम्हें छोड़ कर भाग निकला और जब मैं धरती पर पहुँचा था तो वह न जाने कहाँ गायब हो गया था।"

"इस बात को इस प्रकार भी सोचा जा सकता है कि सुरेश महेन्द्र को कत्ल करके भागा। उसका दूसरा साथी भी वहीं मौजूद था। उसने मुझे और तरुन दोनों ही को मार डालना चाहा—।"

"यह बकवास है..." विनोद ने कहा "हाँ यह सच है कि दोनों की हत्या किसी एक ही आदमी ने की है और वह अकेला है। उसका कोई साथी नहीं है।"

"अपने अपने सोचने का ढंग है...." हमीद ने मुँह बना कर

कहा।

"अच्छा...अब मैं कुँवर के पास जा रहा हूँ। वापस लौट कर तुम्हारी पूरी रिपोर्ट सुनूँगा—तब तक तुम नाश्ता कर लो।"

"कुँवर के पास क्यों जा रहे हैं—क्या कोई खास बात है।"

"खास बात यह है कि तुमने और कुँवर साहब ने चार आदमियों पर सन्देह प्रकट किया था...जिनमें से दो तो मार डाले गये—तीसरा आदमी रनबीर सिंह गायब है...और जालिम सिंह तथा महेन्द्र सिंह की हत्या के सम्बन्ध में उसी पर सन्देह किया जा रहा है।"

"इस सन्देह का कोई कारण तो अवश्य होगा?" हमीद ने पूछा।

"उसके कमरे से डोर के वैसे ही लच्छे बरामद हुये हैं जिनसे महेन्द्र सिंह का गला घोंटा गया था...जैसा तुम्हारी गर्दन में पड़ा था। दो तीन तीर भी मिले हैं जो वैसे ही हैं जैसा जालिम सिंह के सीने में धँसा था।"

इतना कह कर विनोद चला गया और फिर जैसे ही हमीद स्नान और नाश्ते से निवृत्त हुआ वह फिर आ धमका और हमीद से पूछा।

"हां—अब तुम मुझे पूरी रिपोर्ट सुनाओ।"

हमीद ने रेल की यात्रा से लेकर रात तक की सारी बातें विवरण सहित बता दीं, फिर पूछा।

"उस बूढ़े को आप किस खाने में रखेंगे?"

"अभी मैं कुछ नहीं बता सकता—" विनोद ने कहा।

"मत बताइये...लेकिन यह तो बताना ही पड़ेगा कि आप तारा गढ़ कब पहुंचे।"

"जिस दिन तुम आये थे उसी दिन लगभग एक बजे मैं भी यहाँ आगया था।"

"जब उसी दिन आप को भी आना था तो साथ ही क्यों नहीं आये थे ?"

"मैं कार से यात्रा करना चाहता था—"

"क्यों ?"

"बस दिल चाह गया था—।"

"आप खाई के उस पार क्या कर रहे थे—मतलब उधर आप की मौजूदगी का क्या कारण था ?" हमीद ने पूछा।"

"मुझे सूचना मिली थी कि कोई आदमी पिछली खाई की ओर से दीवार फांद कर अन्दर जाता है। रात में एक बजे के बाद...बस उसी की तलाश में उधर मौजूद था।"

"अन्तिम प्रश्न..." हमीद एक दम गम्भीर हो गया "सुरेश और तरुन की शादी होगी या नहीं ?"

"अगर सचमुच तुम्हारा यह प्रश्न अन्मि प्रश्न हो तो उत्तर दूँ..." विनोद मुस्कुरा पड़ा।

"यह मैं कैसे कह सकता हूँ...वैसे एक बात दिमाग से टकरा रही है।"

"कह डालो..."

"ऐसा भी हुआ है कि जिन लोगों ने हमें बुलाया था वही अपराधी साबित हुये थे।"

"हाँ...मगर तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"आप की बात तो मैं नहीं जानताकि आप यहाँ कहाँ थे औरक्या कर रहे थे...लेकिन मैं यहीं मौजूद था। जब जालिम सिंह मारा गया था तो कुँवर साहब मेरे ही साथ थे। जब महेन्द्र सिंह मारा गया तो कुँवर साहब अपने कमरे में थे—मैं सोच रहा हूँ कि दोनों के कातिल कुँवर अमर सिंह ही हैं। उन्होंने हमें इसलिये यहाँ बुलाया था ताकि हमें अपनी तरफ से सफाई का गवाह बनाकर अदालत में प्रस्तुत करें—

प्रकट है कि दोनों हत्याओं के समय वह घटना स्थल पर या उसके आस पास मौजूद नहीं थे। उन्हों ने बड़ी सफ़ाईसे अपनी गर्दन बचाने का प्रयास किया है।"

"तुम्हारी यह बात मैं सच्चे दिल से मान लेता हूँ –" विनोद ने कहा "अब यह बताओ कि इन हत्याओं का ध्येय क्या था ?"

"अब आप ने काम की बात की है…" हमीद ने विनोद की नकल करते हुये कहा "यह बिल्कुल सच है है कि जब तक अपराध का कारण नहीं मालूम होता तब तक इस प्रकार के अपराधी पकड़े नहीं जाते…और इन दोनों हत्याओं का ध्येय या कारण उसी समय मालूम होगा जब यह पता लग जायेगा कि इस हवेली में बच्चे और बूढ़े क्यों नहीं रहते…।"

"उसने विनोद को चौंकते हुये देखा, फिर उसने हमीद के कन्धे पर हाथ रख कर कहा।

"आज सन्ध्या तक तुम इसका पता लगा लो कि यहाँ बूढ़े और बच्चे क्यों नहीं रहते। मैं कल सवेरे वास्तविक अपराधी को तुम्हारे हवाले कर दूगां।"

उसी समय ऐसा लगा जैसे बाहर कोई उत्पात खड़ा हो गया हो। ज़ोर ज़ोर से चीखने की आवाजें आ रही थीं। दोनों लपक कर बाहर निकले तो देखा कि कुँवर अमर सिंह खड़े हैं। उनके चेहरे की नसें तनी हुई थी। नेत्र लाल हो रहें थे। मुँह से झाग निकल रहा था और वह चीख रहें थे।

"मैं देखता हूँ कि कोई मेरा क्या बना बिगाड़ लेता है। अब मुझे किसी की चिन्ता नहीं है। कर्नल विनोद आगये हैं। अब मैं एक एक से समझ लूँगा।"

"क्या बात है ?" विनोद ने आगे बढ़ कर पूछा।

"मैं तंग आ गया हूँ कर्नल—रोज रोज की धमकी..." कुँवर ने कहा "मैं कहता हूँ कि जो मुझे कत्ल करना चाहता है वह कत्ल कर क्यों नहीं डालता। इन धमकियों से क्या लाभ...अपनापरिणाम सोचो—सब भूखों मर जाओगे... मेरे मरने के बाद कुछ नहीं रह जायेगा...मार डालोमुझे नीचो... उतार दो मेरे सीने में कटार...।"

वह बात पूरी भी नहीं कर पाये थे कि एक ओर से कई नौकर दौड़ते हुये आये और कुँवर के सामने रुक कर हांफने लगे।

"क्या हुआ?" कुँवर ने पूछा।

"वह निकल गया कुँवर जी..." एक ने कहा।

"किधर से निकल गया?" कुँवर ने उसे थप्पड़ मारते हुये चीख कर पूछा।

"हमने उसे खाई में छलांग लगाते देखा था कुँवर जी..." दूसरे नौकर ने कहा।

"बात क्या है कुँवर साहब...मुझे भी तो बताइये—" विनोद ने उनके कन्धे पर हाथ रख कर कोमल स्वर में पूछा।

मगर कुँवर ने उत्तर देने के बजाय नौकरों से कहा।

"जाओ... तुम लोग जाओ! वह जहां भी नजर आये उसे गोली मार देना...यह बात मैं कर्नल विनोद और कैप्टन हमीद के सामने कह रहा हूँ—जाओ।"

अपनी बात समाप्त करके कुँवर पलटे और हवेली की ओर बढ़े। विनोद और हमीद भी उनके पीछे लग गये। कुँवर सीधे ड्राइङ्ग रूम में आये। कुछ देर तक सोफे पर बैठते हांफते रहे, फिर एक गिलास पानी पिया उसके बाद विनोद से कहा।

"मेरी अशिष्टता क्षमा कीजियेगा कर्नल साहब! मैं अपने होश में नहीं था... अरे! आप लोग खड़े क्यों हैं... बैठिये...।"

विनोद और हमीद उनके सामने वाले सोफे पर बैठ गये।

"मैं एक बार फिर अपनी अशिष्टता के लिये क्षमा चाहता हूँ कर्नल और कैप्टन साहब...।"

"कोई बात नहीं कुंवर साहब—" विनोद ने मुस्कुरा कर कहा "बात क्या थी ?"

कुँवर ने फौरन ही कुछ नहीं कहा। कमरे में जान लेवा, खामोशी छाई रही।

अगर कर्नल विनोद ने दुबारा न टोका होता तो न जाने कब तक ड्राइङ्ग रूम मे स्तब्धता छाई रहती।

"वह एक बूढ़ा है कर्नल साहब..." कुँवर ने कहना आरम्भ किया "उसका नाम अब्राहम है। दादा जी का प्राइवेट सेक्रेटरी था। पिता जी के जमाने में भी इसी पद पर था। जब पिता जी का देहान्त हुआ और मैं अधिकारी बना तो उसने मुझसे यह कहना आरम्भ किया कि मैं अपने सौतेले भाई रनजीत को हवेला से निकाल दूँ। जब मैंने कारण पूछा तो वह कहने लगा कि हवेली का हर बूढ़ा आदमी यह जानता है कि रनजीत आपका सौतेला भाई नहीं बल्कि आपके पिता की अनुचित सन्तान है। वह हरामी है और किसी ठाकुर की हवेली मे किसी हरामी का क्या काम है। मैं टालता रहा, मगर मुझे यह भी मालूम होता रहा कि हवेली में रहने वाले हर बूढ़े व्यक्ति की जबान पर रनजीत की मां की अबारगी की कहानिय हैं—फिर यह सुना कि रनजीत की मां अधेड़ होने के बाद भी अपनी आवारगी से बाज नहीं आई और अब हवेली की जवान लड़कियों को अपने ही मार्ग पर चलाने की कोशिश कर रही। फिर मालूम हुआ कि कई जवान अविवाहित लड़कियां अनुचित सन्तान की मां बनने वाली हैं। मैं व्याकुल हो उठा। बहुत सोच विचार के बाद मुझे एक मार्ग नजर आया। मैंने घोषणा कर दी कि हवेली में कोई

बूढ़ा नहीं रह सकता। मैंने यह सोचा था कि बूढ़ों के हट जाने से हवेली में रनजीत के बारे में कही सुनी जाने वाली बातें एकदम से बन्द हो जायेंगी। बूढ़े हट गये मगर फिर मुझे मालूम हुआ कि कुछ और लड़कियां गर्भवती हो गई हैं। फिर मैंने यह घोषणा की कि हवेली में कोई बच्चा नहीं रह सकता—इसलिये वह लड़कियां भी हवेली से निकल गईं…और इसीलिये मैंने शादी भी नहीं की…यह सोच कर कि कहीं मेरी सन्तान के बारे में भी इसी प्रकार की बातें न उड़ाई जायें कि पता नहीं कुँवर ही की सन्तान है या किसी दूसरे की…यही वह कारण हैं जिससे इस हवेली में न कोई बूढ़ा नजर आता है न कोई बच्चा।"

"अब्राहाम की बात रह गई कुँवर साहब?" हमीद ने कहा।

"हां…वह गायब हो गया था—मगर अब फिर नजर आया है। उसकी मांग है कि मैं रनजीत को हवेली से निकाल दूं। अगर मैंने ऐसा न किया तो यह पूरी हवेली तबाह हो जायेगी और रनजीत का रहस्य तारागढ़ का बच्चा बच्चा जान जायेगा…।"

"रनजीत सिंह इस समय कहां होंगे?" विनोद ने पूछा।

"अपने कमरे में होगा…क्यों?"

"मैं उनसे मिलना चाहता हूं।"

"मैं यहीं बुलवा देता हूं…" कुँवर साहब ने कहा और घन्टी बजाई। फौरन ही एक नौकर अन्दर आया। उन्होंने नौकर से कहा "रनजीत बाबू को भेज दो।"

नौकर के जाने के बाद विनोद ने पूछा।

"रनबीर सिंह का पता चला?"

"अभी नहीं…।" कुँवर ने कहा।

"दूसरा वाला टेलीफोन और टाइप राइटर जिस कमरे में रहता है क्या रात में उस कमरे में ताला नहीं लगाया जाता?"

"जी नहीं··· क्यों ?" कुँवर ने चौंकते हुये कहा ।

"पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट मैं देख चुका हूँ। जालिम सिंह की हत्या से पहले ही उनके कत्ल की सूचना फोन पर थाने भेजी गई थी··· प्रकट है कि वही टेलीफोन इसके लिये प्रयोग किया गया होगा।" विनोद ने कहा ।

"हो सकता है कि किसी दूसरे स्थान से फोन किया गया हो।"

"दूसरी जगह से टेलीफोन करने के बाद इतने कम समय में कोई भी हवेली तक नहीं पहुँच सकता। दूसरे अब तक जितने धमकियों वाले कागज आपको मिले हैं उन सब की इबारत आपके उसी टाइप राइटर पर टाइप की गई थीं।"

"ओह !" कुँवर ने माथा रगड़ते हुये ठण्डी सांस ली।

इतने में नौकर ने आकर सूचना दी कि रनजीत अपने कमरे में नहीं हैं।

"ठीक है—जब वह आयेगा तो मिल लीजियेगा···" कुँवर ने कहा।

"अगर आज्ञा हो तो एक बात मैं भी पूछूँ ?" हमीद ने कहा।

"पूछिये···" कुँवर ने कहा।

"आपकी उम्र क्या है ?"

"चालीस वर्ष··।"

"मैं बिलकुल सन्जीदा हूँ कुँवर साहब···" हमीद ने कहा "आप ने अभी तक शादी नहीं की—इसका कारण भी बता चुके हैं··· लेकिन यह कैसे मान लिया जाये कि इस मध्य आपके जीवन में कोई लड़की न आई हो।"

विनोद ने घूर कर हमीद की ओर देखा, मगर हमीद तो कुँवर साहब की ओर देख रहा था।

"कर्नल विनोद के बारे में आप की क्या राय है ?" कुँवर साहब ने पूछा।

"पहली बात तो यह है कि कर्नल साहब चालीस साल के नहीं हैं...दूसरे क्या यह आप का दावा है कि आप भी कर्नल हैं ?"

"नहीं...यह दावा तो नहीं है...लेकिन आप के प्रश्न का सही उत्तर यही है कि आज तक मेरे जीवन में कोई लड़की नहीं आई।"

"चलिये...आप कहते हैं तो मान लेता हूँ...लेकिन क्या आप यह भी कह सकते हैं कि आप खुद किसी लड़की के जीवन में दाखिल नहीं हुये...हो सकता है कोई लड़की आप को अपने मन मन्दिर का देवता बना कर पूजती हो...।"

"इसका उत्तर दायित्व मुझ पर तो नहीं..." कुँअर ने मुस्कुरा कर कहा।

"बात उत्तर दायित्व की नहीं है कुँअर साहब ! मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि क्या आप को कभी यह महसूस हुआ है कि कोई लड़की आपको चाहती है...कोई एक या कई एक—!"

"यह तफरीही बातें फिर हो सकती हैं कैप्टन...यह अवसर ऐसी बातों का नहीं है ..." कुँअर ने रूखे स्वर में कहा।

"यह तफरीही नहीं बल्कि बहुत ही आवश्यक बात है...." हमीद का स्वर भी रूखा ही था।

"हमीद !" विनोद ने डांटा।

"मैंने अपने कान बन्द कर रखे हैं..." हमीद ने कहा और कुँअर के चेहरे पर नजरें जमा दीं।

विनोद ने भी महसूस किया कि कुँअर बौखला गये हैं और हमीद को टालने की कोशिश कर रहे हैं।

"मुझे अपने प्रश्न का उत्तर चाहिये कुँवर साहब..." हमीद ने कहा।

ठीक उसी समय एक नौकर अन्दर दाखिल हुआ। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं।

उसने हकलाते हुये कहा।

"लाश...तीसरी हत्या कुँवर साहब...।"

"क्या ?" तीनों के मुख से एक साथ निकला और तीनों उठ खड़े हुये और तेजी के साथ बाहर निकले।

मेन गेट के निकट लगभग सारी हवेली वाले इकत्रित थे और सब के चेहरों पर भय के लक्षण छाये हुये थे। विनोद को देखते ही लोग एक ओर हट गये और इन लोगों को लकड़ी का एक क्रेट रखा हुआ दिखाई दिया। उसका एक तख्ता हटा हुआ था। अन्दर एक लाश पड़ी हुईथी जिसके गले पर रस्सी के चिन्ह थे। रगें फूली हुई थीं

"रनबीर !" कुँअर चीख पड़े और दोनों हाथों से सर थाम कर वहीं बैठ गये और बड़ बड़ाने लगे।

"अब इस लाश का भी पोस्ट पार्टम होगा। तीनों की अर्थियाँ एक साथ हवेली से बाहर निकलेंगी। हे भगवान ! यह सब क्या हो रहा है।"

"यह सन्दूक यहाँ कैसे आया ?" विनोद ने जन समूह से पूछा।

"कार से..." एक नौकर ने आगे बढ़ कर कहा।

"पूरी बात बताओ ?" विनोद ने पूछा।

"साहब ! एक कार अन्दर दाखिल हुई थी और जहाँ आप खड़े हैं वहीं रुक गई थी।"

"जब कोई कार अन्दर दाखिल होती है तो किस की ड्युटी होती है कि कार से समान उतारे ?" विनोद ने पूछा।

"मेरी..." दूसरे नौकर ने आगे बढ़ते हुये कहा।

"जब कार अन्दर दाखिल हुई थी तो तुम कहां थे ?" विनोद ने पूछा।

"मैं पोर्टीको में बैठा हुआ था। कार रुकती हुई देख कर मैं कार की ओर दौड़ा। उधर से बिन्दू भी आया—" उसने पहले वाले नौकर की ओर संकेत किया।

"कार से यह सन्दूक किसने उतारा था ?" विनोद ने पूछा।

"सन्दूक डिके में नहीं था बल्कि कार के ऊपर रखा हुआ था। जब वह दोनों कार के निकट पहुँचे थे तो ड्राइवर ने सन्दूक की ओर संकेत करते हुये कहा था कि इसमें कुंवर साहब के लिये मछलियां हैं—हम लोग सन्दूक उतारने लगे थे।"

"सन्दूक उतारते समय तुम्हें वजन का एहसास नहीं हुआ था।"

"हुआ था। दुर्गन्ध का भी एहसास हुआ था—मगर ड्राइवर ने यह कह कर हमें सन्तुष्ट कर दिया था कि मछली की दुर्गन्ध है और यह भी कहा था कि बड़ी मछली का शिकार हुआ है। फिर उसने भी हमारा हाथ बटाया था। सन्दूक नीचे रखवा कर उसने कार बैक की थी और चला गया था।"

"फिर तुम लोगों ने इसे खोला कब?" विनोद ने पूछा।

"नीचे रखते ही दुर्गन्ध से हम लोगों का दिमाग फटने लगा था। बिन्दू ने उस नौकर को आवाज दी जो बाहर से आये हुये ब्रीफ़के रखता है। वह आया। उसके साथ दो आदमी और थे। जब उन्होंने उसे उठाना चाहा तो ठिठक गये। दो चार आदमी आ गये और किसी ने कहा कि इसमें लाश है।"

"यह बात किसने कही थी कि इसमें लाश है?" विनोद ने पूछा।

एक क्षण के लिये सन्नाटा छा गया और सब एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

"क्या किसी को याद नहीं कि लाश वाली बात किसने कही थी?" विनोद ने कठोर स्वर में पूछा।

उत्तर में फिर खामोशी छाई रही।

"अच्छा...जब किसी को याद आये मुझे बता दें..." विनोद ने कहा 'फिर क्या हुआ?"

"सन्दूक का ढक्कन हटाने पर हमारे मुंह से चीख निकल गई

और एक नौकर कुंवर साहब को सूचना देने भागा। पूरी हवेली में यह खबर फैल गई।"

"पुलिस को किसी ने फोन किया या नहीं?" विनोद ने पूछा।

"पता नहीं साहब—रनजीत बाबू तो हैं नहीं। फोन वही किया करते हैं।"

"किसी ने उस कार का नम्बर देखा था?" विनोद ने पूछा।

"हम उस गाड़ी को पहचानते हैं साहब' कई नौकरों ने एक साथ कहा।

"किसकी गाड़ी थी?" कुंवर साहब ने पूछा।

"सेठा साहब जज की···मगर ड्राइवर उनका नहीं मालूम होता था।"

विनोद ने हमीद को संकेत किया और हमीद कुंवर के आफिस रूम में आया। उसने सेठी के नम्बर मिलाये। दूसरी ओर सेठी ने ही टेलीफोन उठाया था।

"मैं कुंवर अमर सिंह की हवेली से बोल रहा हूं–" हमीद ने कहा।

"कौन हो तुम···कुंवर साहब कहां हैं?" पूछा गया।

"वह बाहर लान पर हैं···आपने कुंवर साहब के लिये मछलियां भिजवाई थीं?"

"हां···अभी तक मेरी कार भी लौट कर नहीं आई।"

"आपकी कार यहां आई थी। उस पर से एक क्रेट उतारा गया था मगर उसमे से मछलियां नहीं बल्कि एक लाश बरामद हुई है।"

"क्या।" सेठी दहाड़ा।

हमीद ने रिसीवर पर हाथ रख कर उसे छत की ओर कर दिया और इधर उधर देखने लगा मगर दूसरे ही क्षण उसे चौंकना पड़ा, क्योंकि दरवाजे पर उसे तरुन खड़ी नजर आई थी। उसका चेहरा

उतरा हुआ था। अधरों पर पपड़ियाँ जमी हुई थीं। बाल बिखरे हुये थे और वई सालों की बीमार नजर आ रहा था। उसने हमीद से पूछा ।

"क्या जज साहब अपनी कोठी पर हैं ?"

"हां...इस समय वह हाथी की आवाज में बोलने की कोशिश कर रहे हैं—"

"लाइये...फोन मुझे दीजिये...।"

मगर हमीद ने फोन उसे देने के बजाय माउथ पीस खुद मुँह से लगा लिया। उधर से अब भी सेठी का गर्जना सुनाई दे रही थी। वह कह रहे थे।

"कुंवर......।"

"मैं कैप्टन हमीद बोल रहा हूँ..." हमीद ने कहा "यहां पुलिस आफसर्स आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं...।"

कह कर उसने सम्बन्ध काट दिया और तरुन से बोला।

"आप जज साहब से क्या बात करने वाली थीं।"

"आपने टेलीफोन काट क्यों दिया।" तरुन ने झल्ला कर कहा "मैं उनसे सुरेश के बारे में...।"

"क्या मिस्टर सुरेश उनके लड़के हैं।" हमीद ने बात काट कर पूछा।

"नहीं...भतीजा...और मुझे ऐसा लग रहा है जैसे सुरेश को फँसाया जा रहा है।"

"सुरेश इस समय कहां होंगे।"

"सुरेश !" तरुन ने हाथ मलते हुये कहा "वह पागल है... उसका दिमाग खराब हो गया है। अब उसे कोई नहीं बचा सकता।"

"क्यों।"

"एक नौकर ने मुझे बताया है कि जज साहब की कार लेकर

जो आदमी आया था वह सुरेश ही था ।"

"क्या !" हमीद ने चौंकते हुये कहा "उनका नाम किसी ने नहीं बताया...क्या हवेली में उन्हें कोई नहीं पहचानता ।"

"अब मैं क्या बताऊँ..." तरुन ने कहा "वह मेरा मर्मज्ञ है। वह मुझसे झूठ नहीं बोल सकता। उसने सुरेश को पहचान लिया था। उसने नकली मौंछ दाढ़ी लगा रखी थी...।"

"और इस पर भी आप कहती हैं कि सुरेश को फँसाया जा रहा है..." हमीद ने शुष्क स्वर में कहा "आखिर उसे मेकअप में आने की क्या आवश्यकता थी। और फिर क्या वह इतना ही ना समझ है कि लाश की दुर्गन्ध और मछली की गन्ध में अन्तर न कर सके...जज साहब का ड्राइवर क्या हुआ...वह कोट उसको किसने दिया था...मुझे पहले ही से सुरेश पर सन्देह था।"

"मैं जानती थी कि केवल आप ही नहीं वरन सब यही बातें कहेंगे...मगर...।"

"सुनिये श्रीमती जी ! केवल सुरेश पर ही नहीं बल्कि मुझे आप पर भी सन्देह है...।" हमीद ने बात काट कर कहा "और अभी आपने मेरे एक प्रश्न का उत्तर नहीं दिया है। मैंने विगत रात्रि आप से पूछा था कि क्या आपको विश्वास है कि जालिम सिंह को महेंद्र सिंह ने कत्ल किया है—मगर उत्तर अधूरा रह गया था...अब मैं पूरा उत्तर सुनना चाहता हूँ।"

"क्या आप मेरी लाश भी देखना चाहते हैं ?" तरुन ने भयपूर्ण स्वरूप में कहा।

"आपकी रक्षा का भार मैं लेता हूँ..." हमीद ने कहा।

"मैं कुछ नहीं जानती..." तरुन ने कहा और पीछे मुड़ कर देखा। अचानक लहराई और फर्श पर गिर पड़ी। हमीद तेजी से बाहर निकला तो उसे कारीडर में कर्नल विनोद, कुँवर अमर सिंह तथा सुरेश नजर आये। वह तेजी से विनोद के पास आया।

"क्या तुमने सेठी साहब को सूचना दे दी ?" विनोद ने पूछा।

"हां...वह पहुँचने ही वाले हैं..." हमीद ने कहा "एक मिनिट। मैं आपसे एकान्त में कुछ कहना चाहता हूँ।"

विनोद वहां से हट गया और हमीद ने धीरे धीरे अपनी तथा तरुन की बातें दुहराने के बाद कहा।

"क्या अब भी सुरेश निर्दोष ही समझा जायेगा ?"

"सुरेश ने इस बात का समर्थन कर लिया है कि कार वही लाया था ?" विनोद ने कहा।

"क्या उसे मालूम था कोट में लाश है ?"

"नहीं...।"

"क्या वह इतना ही अबोध है ?" हमीद ने व्यंग भरे स्वर में कहा।

"मैंने अभी उससे खुल कर बातें नहीं की हैं...इसलिये विश्वास के साथ कुछ कह नहीं सकता..." विनोद ने कहा और कुँवर की ओर बढ़ा।

कुँवर बोखलाये हुये थे। बार बार माथे से पसीना पोंछ रहे थे और आंसू भी साफ करते जाते थे। विनोद ने उनसे कहा।

"रनजीत की खबर लीजिये कुँवर साहब। मुझे खतरा है कि कल तक वहीं हमें उनकी लाश भी न देखनी पड़े।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है कर्नल साहब .....अट्ठारह घन्टे में तीन लाशें...हे भगवान मैं क्या करूँ।"

"तरुन बेहोश है..." हमीद ने विनोद के कान से मुँह लगा कर कहा और विनोद जल्दी से हमीद के साथ उसी कमरे की ओर बढ़ा।

उसी समय हमीद ने उस कमरे से एक स्ट्रेचर निकलते हुये देखा जिसे कुछ नौकरानियां उठाये हुई थीं। कुछ दूसरी औरतें भी

तक आई थीं कोई पुरुष नहीं आया था। इस लम्बी बेहोशी का कारण कोई दुर्घटना या स्नायु की कमजोरी नहीं था बल्कि मार्फिया का इन्जेक्शन था जिसका प्रभाव नष्ट होने में अभी चौबीस घन्टे की देर थी। हमीद को निराशा तो अवश्य हुई मगर उसने भी निश्चय कर रखा था कि वह सुरेश से अवश्य मिलेगा, इसलिये उसने टैक्सी की और सेटी साहब की कोठी की ओर चल पड़ा।

मार्ग में उसे कैफे स्वीट ड्रीम का बोर्ड नजर आया। एक बज चुका था। उसने सोचा कि काफी पी कर ही चलना उचित होगा। उसने कैफे के दरवाजे के पास टैक्सी रुकवाई। पैसे ड्राइवर को दिये और कैफे में दाखिल हो गया। अन्दर पहुँचा तो उसे ऐसा लगा जैसे अभी अधिक से अधिक आठ या नौ बजे हैं। कैफे की बहार यौवन पर थी। बैठे हुये लोगों में अधिकतर विदेशीय ही नजर आ रहे थे। उसने अपने लिये कोने की एक मेज चुनी और काफी का आर्डर देकर पाइप सुलगाने लगा। फिर जब वेटर काफी की ट्रे लेकर आया तो उसने उससे पूछा।

"क्या यह कैफे रात भर खुला रहता है?"

"जी हाँ..." वेटर ने कहा।

"यहां बार भी है?"

"जी हां..."

"विदेशीय अधिक दिखाई दे रहे हैं--क्या बात है?"

"यहां तारागढ़ में भ्रमणकारी अधिक संख्या में आते हैं।"

"क्यों... यह कोई ऐतिहासिक स्थान तो है नहीं?"

"जंगल और शिकार का शौक विदेशियों को यहाँ खींच लाता है।"

"यहां पहाड़ियाँ भी तो हैं?"

"जी हाँ—निकट ही हैं...।"

"तब तो स्मगलिंग वाला धन्धा भी होता होगा?"

साथ थीं जिनमें चंचल भी थी। हमीद ने लपक कर चंचल को रोका और पूछा।

"आप लोगों को कैसे सूचना मिली?"

"हम लोग तरुन को तलाश कर रहे थे कि अचानक वह कहीं गायब हो गई। खोजते हुये जब हम इधर आये तो तरुन कमरे में फर्श पर पड़ी हुई नजर आई। होश में लाने का उपाय किया गया मगर होश नहीं आया। अब हम इसे हास्पिटल ले जा रहे हैं।"

—०—

तारागढ़ की हवेली में वह रात प्रलय की रात थी। इसलिये कि एक साथ तीन तीन अर्थियां उठाई गई थीं और लगभग आधी रात को जब सब लोग श्मशान घाट से लौट रहे थे तो हर एक भय भीत था। कुँवर की दशा सबसे खराब थी। सबसे बड़ी परेशानी की बात यह थी कि रनजीत अब तक लापता था।

पुलिस उस बूढ़े अब्राहम को तलाश कर रही थी जिसने कुँवर को धमकियां दी थीं और हमीद सुरेश की तलाश में था। विनोद का कहीं पता नहीं था।

हमीद लौटा तो सबके साथ ही मगर फिर चुपचाप बाहर निकल गया। उसे यह सूचना मिली थी कि तरुन अभी तक बेहोश है और हास्पिटल ही में पड़ी हुई है। उसे विश्वास था कि सुरेश भी वहीं कहीं आस ही पास होगा। दो बार ऐसा हो चुका था कि उसने तरुन से कत्ल के बारे में कुछ जानना चाहा था मगर दोनों बार असफल रहा था। पहली बार वह चोट खा कर खुद ही बेहोश हो गया था और दूसरी बार तरुन बेहोश हो गई थी। उसे पूरा विश्वास था कि तरुन धमकियों और हत्याओं के बारे में अवश्य कुछ न कुछ जानती है—और सुरेश का भी इन दुर्घटनाओं से सम्बन्ध है।

जब वह हास्पिटल पहुंचा तो बस इतना ही मालूम हो सका कि तरुन अभी तक बेहोश है। उसे देखने के लिये केवल औरतें ही अब

"पता नहीं साहब—" वेटर ने कहा और चला गया।

हमीद काफ़ी की घोटों के साथ साथ हाल का निरीक्षण भी करता जा रहा था और आसपास बैठे हुये लोगों की बातें भी सुनता जाता था। इस समय वह नाक वाले स्प्रिंग के मेकअप में था। लोग अधिकतर हवेली में होने वाली हत्याओं ही के बारे में बातें कर रहे थे। अचानक वह बड़े ज़ोर से चौंक पड़ा, क्योंकि सुरेश हाल में दाखिल हो रहा था। उसके साथ ट्रेन वाला झक्की बूढ़ा भी था। मगर उसे इस बात का सन्तोष था कि वह दोनों उसे पहचान नहीं सकेंगे··· और यह संयोग ही था कि उन दोनों ने हमीद के पीछे वाली ही मेज चुनी थी इसलिये हमीद उनकी बातें साफ़ तौर पर सुन सकता था। कुछ देर तक दोनों मौन थे—फिर बूढ़े ने कहा।

"फिर क्या करोगे?"

"सोचता हूँ भाग जाऊँ?" सुरेश ने कहा।

"यह कायरता होगी—क्या तुम्हें फिर कोई धमकी मिली है—।"

"नहीं—लेकिन मुझे इसका विश्वास है कि जब घर पहुँचूँगा तो खून का उबाला नजर आयेगा।"

"तुम्हें मालूम है कि पुलिस मुझे तलाश कर रही है···।"

"मैं केवल यह जानता हूँ कि पुलिस मुझे तलाश कर रही है···" सुरेश ने कहा।

"पुलिस वाले भी बामक ही हैं···रनजीत गायब है—उसे तलाश करने के बजाय हमें तलाश करते फिर रहे हैं।"

"तुम रनजीत के पीछे अकारण पड़े हो।"

"अकारण!" बूढ़े ने जहरीले स्वर में कहा "वह हरामी है और मेरी यह बात याद रखना कि हरामी—हरामीपन से बाज नहीं आता। रनजीत ने जो कुछ किया है, उसे केवल मैं जानता हूँ।"

"आखिर वह कहां गया?"

"मैं नहीं जानता..." बूढ़े ने कहा।

"कर्नल विनोद भी यहाँ आ गया है......तुम्हें मालूम है कि नहीं?"

"मैं यह बात पहले ही से जानता था।"

"कैसे?"

"जब मैं तारागढ़ आ रहा था तो उसका असिस्टेन्ट कैप्टन मेरे साथ यहां आया था।"

"तुम्हारे बच्चे कहां हैं?"

"बच्चे!" बूढ़ा का स्वर फिर जहरीला हो गया "मेरा कोई बच्चा नहीं है। जो लड़का मेरे नाम से प्रसिद्ध था वह वास्तव में ठाकुर की औलाद था।"

"तुम अपने किसी लड़के को पहचानते हो?"

"नहीं—मैंने पन्द्रह वर्ष से उन्हें नहीं देखा।"

"क्या वह हवेली में रहते हैं?"

"नर्क में रहते हैं..." बूढ़ा झल्ला कर कहता हुआ उठा "तुम उनकी बातें मुझसे न किया करो। मैं जा रहा हूँ और तुम को एक उपदेश देता जा रहा हूँ...वह यह कि चौबीस घन्टे तक तारागढ़ न छोड़ना।"

"सवेरे मुझे गिरफ्तार कर लिया जायेगा। चाचा जी ने कहा है कि परिस्थितियों ने मुझे संदिग्ध बना दिया है।"

"अगर तुम गिरफ्तार कर लिये गये तो तुम्हारे हक में अच्छा ही होगा।" बूढ़े ने कहा और दरवाजे की ओर बढ़ गया।

सुरेश ने अपने लिये काफी मँगवाई और फिर काफी पीकर उठने ही वाला था कि हमीद नाकों से स्प्रिंग निकाली और उठ कर उसकी मेज पर आ गया। सुरेश उसे देखते ही चौंक कर खड़ा हो गया और बोला।

"आप!"

"हां—तुम्हारी तलाश में तारागढ़ की सड़कें नाप रहा हूँ···" हमीद ने मुस्कुरा कर कहा।

"क्यों—क्या वारन्ट गिरफ्तारी है ?" सुरेश ने कड़वी मुस्कान के साथ कहा।

"नहीं···मैं तुम से कुछ बातें पूछना चाहता हूँ ?"

"पूछिये···।"

"बैठ जाओ—" हमीद ने उसी की मेज पर बैठते हुये कहा और जब वह भी बैठ गया तो हमीद ने उस से पूछा।

"तुम्हें कोट किसने दिया था ?"

"किसी ने नहीं···" सुरेश ने कहा।

"तुम जज साहब की कोठी से कार लेकर चले थे ?"

"जी नहीं ?"

"फिर ?"

"बात इस प्रकार है कि रात मैं देर से घर पहुंचा था। नींद नहीं आई। सवेरा होते ही मैं बाहर निकला और टैक्सी करके झील की ओर चला गया जहाँ मछलियों का शिकार होता है। वहीं टहलता रहा कि अचानक मुझे वही आदमी दिखाई पड़ गया जिसकी तलाश में मैं बहुत दिनों से में था।"

"कौन आदमी !"

"मैं नहीं जानता कि वह है कौन···बस एक बार मैंने अपनी आंखों से उसे खाँई पार कर के चारदीवारी द्वारा हवेली में दाखिल होते देखा था।"

"हवेली के अन्दर तुमने उसे कभी नहीं देखा ?" हमीद ने पूछा।

"जी नहीं···।"

"इस बात का उल्लेख तरुन से भी किया था !"

"नहीं···।"

"तो क्या तुम उस आदमी को बस इसी लिये खोजते फिर रहे थे कि उस से यह पूछो कि वह इस प्रकार हवेली में क्या दाखिल हुआ था।" हमीद ने पूछा।

"यह भी बात थी और इसके साथ एक दूसरी बात भी थी।"

"वह दूसरी बात क्या थी?" हमीद ने पूछा।

"परसों रात मैंने उसी आदमी को रनबीर सिंह...जालिम सिंह और महेंद्र सिंह के साथ यहां के एक ऐसे होटल में देखा था जो ऐयाशों का होटल है।"

"तुम उस होटल में क्या करने गये थे?" हमीद ने पूछा।

"उसी आदमी का पीछा करता हुआ गया था। वह सब होटल के जिस कमरे में गये थे उसी कमरे में मैंने कुछ देर बाद तीन सुन्दर लड़कियों को भी दाखिल होते हुये देखा था। फिर मैं वहां से यह सोच कर वापस आ गया था कि बाद में उन तीनों में से किसी एक से उस आदमी के बारे में पूछ लूंगा मगर अवसर नहीं मिल सका और वह तीनों ही मौत के घाट उतार दिये गये।"

"उस आदमी की हुलिया?" हमीद ने पूछा।

"साधारण आदमियों जैसा है। बस अन्तर इतना है कि वह देखने में अपाहिज मालूम होता है..."

"हां...तो वह आदमी तुम्हें झील पर दिखाई दिया था...।"

"जी हां...थोड़ी दूर तक मैं उसका पीछा करता रहा था, फिर मुझे एक जगह जज साहब की कार खड़ी नजर आई थी। मैं उस आदमी का पीछा छोड़ कर कार की ओर बढ़ा, कारण यह कि कार के कुछ निकट ही मुझे ड्राइवर जमीन पर पड़ा हुआ नजर आया था। जब ड्राइवर के निकट पहुँचा तो चौंक उठा, क्योंकि ड्राइवर एक हाथ से दूसरा हाथ पकड़े हुये बुरी तरह कराह रहा था। उसके एक हाथ में सख्त चोट आई थी। हाथ का हड्डा उखड़ गई थी और कुहनी फट गई थी।"

"उसे चोट कैसे लगी थी ?" हमीद ने पूछा ।

"उसने बताया था कि वह गाड़ी खड़ी कर के झील की ओर बढ़ रहा था कि किसी ने उसे बड़े जोर का धक्का दिया था । परिणाम में वह पथरीली धरती पर गिर पड़ा था और वह चोटें आई थीं ।"

"कार पर क्रेट कब रखा गया था ?" हमीद ने पूछा ।

"ड्राइवर का बयान है कि उसके चोट खाने पर क्रेट कार पर रखा गया था । मगर कुछ ही देर बाद कुछ दूसरे लोग वहाँ आये थे और उन्होंने पहला वाला क्रेट हटा कर उसकी जगह दूसरा क्रेट रखा था । ड्राइवर अपनी चोट से बदहवास था इसलिये उसने इस पर ध्यान नहीं दिया था और फिर उसे क्या मालूम था कि इस प्रकार कुछ घपला किया गया है । जब उसने मुझे देखा तो गिड़गिड़ा कर कहने लगा कि मछली की यह क्रेट हवेली तक मैं पहुँचा दूँ क्योंकि यह जज साहब की आज्ञा है । मुझे ड्राइवर पर तरस भी आया...यह भी ख्याल आया कि कार घर तो पहुँचनी ही है । ड्राइवर इस योग्य नहीं है कि ड्राइवर कर सके अगर उसका काम मैं कर दूँगा तो कोई छोटा नहीं हो जाऊँगा, इसलिये मैं तैयार हो गया था ।"

"और वह आदमी ।"

"वह कार से काफी दूर खड़ा कार ही की ओर देख रहा था, मगर अब मेरा ध्यान उसकी ओर नहीं था । मैंने सहारा देकर ड्राइवर को उठाया । उसे कार पर बैठाया और खुद स्टेयरिंग संभाल कर वहाँ से रवाना हो गया था । मार्ग में मैंने ड्राइवर को हास्पिटल के पास उतार दिया था और हवेली की ओर बढ़ा था । मार्ग में मुझे ध्यान आया कि मुझे हवेली के अन्दर नहीं जाना चाहिये और वह भी मछली लेकर । अब यह मेरे भाग्य की खराबी ही थी कि मैंने बाजार से नकली मोंछ और डाढ़ी खरीद कर अपने चेहरे पर लगा ली थी । ऐसा इसलिये किया था कि हवेली में कोई मुझे

पहचान न सके। मछली तो हर हाल में हवेली में पहुंचानी ही थी क्योंकि चाचा जी की आज्ञा थी।"

"फिर कार क्या हुई ?" हमीद ने पूछा।

"कार मैंने कोठी पर पहुँचा दी थी।"

"इस समय ड्राइवर कहां मिल सकेगा ?" हमीद ने पूछा।

"उसे जब यह मालूम हुआ कि क्रेट में मछलियों के बजाय लाश थी तब से वह गायब है—!"

"ड्राइवर को यह कैसे मालूम हुआ था कि क्रेट में लाश थी।" हमीद ने पूछा।

"मैं उस से फिर मिला था और मैंने ही उसे यह बात बताई थी।"

"क्या वह उन लोगों को पहचान सकता है जिन्होंने पहला क्रेट उतार कर दूसरा क्रेट लादा था ?" हमीद ने पूछा।

"जी हां...उनमें एक वह अपाहिज भी था जिसकी मुझे तलाश थी।"

"अच्छा...यह बूढ़ा कौन है ?" हमीद ने पूछा।

"रियासत का पूर्वकालिक सेक्रेटरी...यहूदी है...!"

"मगर चेहरे से तो हिन्दुस्तानी मालूम होता है !"

"कई पुश्त से उसका खानदान हिन्दुस्तान ही में रह रहा है।"

"उसका नाम क्या है।"

"अब्राहाम...।"

"क्या अब्राहाम हवेली ही में रहता है।"

"जी नहीं...हवेली में कोई बूढ़ा नहीं रह सकता।"

"तुम्हें मालूम है कि वह कहां रहता है।" हमीद ने उसकी आंखों में देखते हुये पूछा।

"जी नहीं...वैसे मैंने कभी कभी उसे अपनी कोठी की ओर से आते जाते देखा है। हो सकता है वहीं कहीं आस पास रहता हो।"

"तुमने उसके असली ठिकाने का पता लगाने की कोशिश नहीं की।"

"कोई आवश्यकता नहीं समझी…इसलिये उसके चक्कर में नहीं पड़ा।"

"इस समय तुम्हें बूढ़ा कहां मिला था।" हमीद ने पूछा।

"अचानक मार्ग में मिल गया था…।"

"और फिर तुमसे उसने चाय की फर्माइश कर दी है…… है ना।"

"जी नहीं…बल्कि मैंने खुद ही उससे प्रार्थना की थी कि वह मेरे साथ चाय पीये।"

"क्यों।"

"मुझे उससे कुछ आवश्यक बातें करनी थीं। इतनी रात को सड़क पर खड़े होकर बातें करना उचित नहीं लगा था इसलिये उसे इस कैफे में लाया था।"

"वह आवश्यक बातें क्या थीं।" हमीद ने पूछा।

"यही कि पुलिस हम दोनों को तलाश कर रही है…।"

"मुजरिम के दिल में सदैव यह भय समाया रहता है…" हमीद ने तीखी मुस्कान के साथ कहा।

"आप जो चाहें समझें…मगर सच्ची बात यह है कि पुलिस भ्रम के कारण हम दोनों के पीछे पड़ गई है।"

"इसका अर्थ यह हुआ कि तुम लोग किसी दूसरे पर अपराधी होने का सन्देह कर रहे हो।"

"मैं तो किसी पर सन्देह नहीं कर रहा हूँ…मगर बूढ़ा अवश्य करता है—सन्देह ही नहीं बल्कि उसे विश्वास है कि अपराधी कौन है।"

"वह किसको अपराधी समझता है।"

"रनजीत सिंह को…" सुरेश ने कहा।

"लेकिन यह भी तो हो सकता है कि अस्ल अपराधी खुद वही बूढ़ा हो और किसी रंजिश के कारण या अपनी जान बचाने के

लिये रणजीत सिंह का नाम ले रहा हो…।"

"जो भी हो…जितना मैं जानता था उतना आप को बता दिया।"

"इस समय बूढ़ा कहां मिलेगा।"

"मैं क्या बता सकता हूँ…" सुरेश ने कहा।

"अच्छा दोस्त…अब केवल दो प्रश्न रह गये हैं…" हमीद ने अंगड़ाई लेकर कहा "पहला प्रश्न यह है कि अरुन किसी से प्रेम करती थी या उसके जीवन में आने वाले तुम पहले पुरुष हो।"

"आप मुझे क्रोध दिलाने का प्रयास कर रहे हैं कप्तान साहब…" सुरेश ने मुस्कुराते हुये कहा।

"नहीं दोस्त…मैं केवल अपने प्रश्न का उत्तर चाहता हूँ…" हमीद भी मुस्कुराया।

"आप ही बताइये कैप्टन साहब कि यह बात कैसे मालूम हो सकती है कि मुझसे पहले तरुन किसी से प्रेम करती थी या नहीं। मुझे तो आशा नहीं है कि ऐसा रहा हो…वैसे अगर उसने किसी दूसरे से प्रेम किया भी होगा तो मुझे बतायेगी क्यों। मेरा विचार है कि औरतें इस प्रकार की बातें किसी से नहीं कहतीं। ऐसी बातों का समर्थन उस समय भी नहीं करतीं जब वह रंगे हाथों पकड़ी जाती हैं। कप्तान साहब! नारी को समझना दुष्कर है। पुरुष अपने भावनाओं की तृप्ति बुद्धि के प्रकाश में चाहता है। मगर नारी अपनी भावनाओं की तृप्ति के लिये इस प्रकार का कोई सहारा नहीं चाहती…।"

हमीद बड़े आश्चर्य से सुरेश की ओर देख रहा था, इसलिये कि सुरेश के बोलने का अन्दाज बता रहा था कि उसकी मानसिक रगों के तार छेड़ दिये गये हैं जिसके कारण वह भावनाओं के तूफान में बहा जा रहा है। हमीद ने उसे रोकना भी चाहा था मगर उसने हाथ उठा कर उसे चुप रहने का संकेत कर दिया था और कहे जा

"ऊपर बाईस कमरे हैं और पर एक कमरा एक एक लड़की के लिये है। नीचे बाईस बल्ब हैं और हर बल्ब एक एक लड़की के नाम से है। जो कमरा भर जाता है उससे सम्बन्ध रखने वाला बल्ब नीचे जल जाता है। इस समय इक्कीस बल्ब जल रहे हैं और एक बुझा हुआ है।"

"जो बुझा हुआ है वह किस लड़की का है?"

"फेनी का..." वेटर ने कहा।

"और यह साहब जिस लड़की के साथ गये हैं उसका क्या नाम है?"

"मिस क्यू ड..."

हमीद की आंखें चमकने लगी। उसने अँगुलियों में दबी हुई नोट वेटर को थमाई और हाल से बाहर निकल आया।

इस समय तीन बज रहे थे लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे अभी रात के कुछ ही घन्टे बीते हैं और पूरी रात बाकी पड़ी है। उसने टैक्सी की और सुरेश की कोठी की ओर रवाना हो गया।

सुरेश सेठी साहब ही की कोठी में रहता था। हमीद ने सोचा था कि कोठी के सामने किसी एक स्थान पर रुक कर सुबह होने की प्रतीक्षा करेगा और जज साहब से सुरेश के बारे में जानकारी प्राप्त करेगा। यह भी आशा थी कि हो सकता है उस बूढ़े झक्की से भी मुलाकात हो जाये क्योंकि सुरेश के बयान के अनुसार बूढ़ा जज साहब की कोठी के आस पास कहीं रह रहा था। वह उस बूढ़े को भी चेक करना चाहता था।

सुरेश की ऐयाशी और जब कभी तपन के कत्ल के बारे में कुछ बताना चाहा तो किसी न किसी दुर्घटना के हो जाने ने हमीद की नजरों में दोनों ही को संदिग्ध बना दिया था।

सेठी जज की कोठी के सामने वह टैक्सी रुकवा कर उतर पड़ा। पूरी कोठी खामोशी में डूबी हुई थी। सवेरा होने में अब

भी न देख सका और टैक्सी चल पड़ी ।

हमीद निराश होकर जब फिर हाल में आया तो सुरेश अपनी मेज पर नहीं था । उसने उस मेज के वेटर को संकेत से बुलाकर पूछा ।

"इस मेज पर जो साहब बैठे हुये थे वह कहाँ गये ।"

"ऊपर…" वेटर ने कहा ।

"ऊपर…क्या मतलब ?"

"ऊपर का अर्थ केवल ऊपर होता है साहब…" वेटर ने अर्थ पूर्ण मुस्कान के साथ कहा "जब लोग यहाँ बैठे बैठे थक जाते हैं तो ऊपर चले जाते हैं ।"

"ऐसे कमरे यहाँ हैं ?" हमीद ने पूछा ।

"जी हाँ—और अब केवल एक ही कमरा खाली है…।"

"वह साहब किस कमरे में मिलेंगे ?" हमीद ने पूछा ।

"यह हमारा सीक्रेट बिजिनेस है श्रीमान जी……।" वेटर ने कहा ।

हमीद ने जेब से दस रुपये की एक नोट निकाली ।

"बेकार है साहब—दस हजार में भी नहीं बता सकता…" वेटर ने कहा "इसलिये नहीं कि न बताना यहां का सिद्धान्त है—बल्कि इस लिये कि मैं जानता ही नहीं !"

"ऊपर कुल कितने कमरे हैं ?" हमीद ने पूछा ।

"बाईस…।"

"क्या यह बात यहां कोई नहीं जानता कि कौन किस कमरे में जाता है या गया है ?"

"जी नहीं—केवल वही औरतें जानती हैं जो पुरुषों को ले जाती हैं । हम वेटरों को तो ऊपर जाने की भी आज्ञा नहीं है ।"

"फिर तुमने यह बात कैसे कही थी कि बस एक ही कमरा खाली है ?" हमीद ने पूछा ।

प्रणाली यही होती कि वह उस आदमी के किसी इमारत में घुसने की प्रतीक्षा करता और फिर सवेरा होने पर उसी इमारत में उस आदमी को तलाश करता—मगर चूँकि छिपकिली रेंगने लगी थी इसलिये वह यह करने के बजाय यह सोचने लगा कि यह फरार भी तो हो सकता है…।"

और फिर वही छिपकिली उसे अपनी नजरों में हीरो बनाने लगी। सोचने लगा कि जब वह अचानक अपराधी को विनोद के सामने खड़ा करेगा तो विनोद स्तब्ध रह जायेगा।

और फिर बिना यह सोचे हुये कि आखिर वह उस आदमी को कैसे अपराधी साबित करेगा उसने उस पर हाथ डालने का निर्णय कर लिया। वह पेड़ की आड़ से निकला और सड़क पार करके उसी ओर बढ़ा जिधर वह आदमी जा रहा था—।

कुछ ही दूर चलने के बाद वह आदमी सड़क से उतर कर जज सेठी की कोठी की ओर बढ़ने लगा।

फिर उस गली में मुड़ गया जो जज की कोठी और उनकी बगल वाली कोठी के मध्य में थी।

बगल वाली कोठी में भी चार दीवारी थी।

गली में कुछ ही कदम चला होगा कि हमीद ने पीछे से रिवाल्वर की नाल उसकी ओर करते हुये मन्द मगर फुफकार भरी आवाज में कहा।

"अपने हाथ ऊपर उठा लो वर्ना मैं गोली मार दूँगा।"

उस आदमी ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये।

"मुड़ो!" हमीद ने कहा।

मुड़ने के लिये तो वह आदमी मुड़ गया—मगर मुड़ने के साथ ही उसका भरपूर घूँसा हमीद की कनपटी पर पड़ा—और इस से पहले कि हमीद सँभलता उसके सर पर कोई वजनी वस्तु पड़ी और वह जमीन पर ढेर हो गया।

———

केवल दो घन्टे रह गये थे। सड़क पर भी सन्नाटा था—ऐसा सन्नाटा कि अगर एक सूई भी गिरती तो उसकी आवाज सुनाई दे जाती। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी श्मशान में खड़ा हो। वह एक वृक्ष की आड़ में खड़ा हो गया।

उसकी छटीं इन्द्रिय कह रही थी कि कुछ न कुछ हो कर रहेगा और शीघ्र ही होगा। जिस हाथ ने सुरेश पर पहले प्लेट और फिर गिलास फेंका था वह उसके दिमाग से चिपक कर रह गया था। उस हाथ में न कोई अंगूठी थी और न कोई ऐसा चिन्ह था जो हमीद अपने मस्तिष्क में सुरक्षित रखता—किन्तु फिर भी वह हाथ ऐसा ही था जिसे हमीद लाखों में पहचान सकता था···और वही हाथ वास्तव में उसे इस ओर ले आया था।

अचानक सड़क किसी कार की हेड लाइट्स से नहा गई। हमीद पूरी तरह सावधान हो गया।

आने वाली कार उससे कुछ दूरी पर रुक गई और उसकी हेड लाइट्स बुझा दी गईं। उस पर से एक आदमी उतरा जिसके शरीर पर लम्बा ओवर कोट था। उसका चेहरा नहीं दिखाई दे रहा था। वह बड़ी सावधानी से कदम उठाता हुआ सेठ जज की कोठी की ओर बढ़ रहा था···।

दूसरे ही क्षण हमीद को अपने पूरे शरीर में सनसनी सी दौड़ती हुई महसूस हुई, इसलिये कि उसका कद उस नकाबपोश से मिलता हुआ था जिसे उसने हवेली की वाटिका में देखा था। जिसने तरुन का गला घोटने का प्रयास किया था और जिसने खुद उसके गले में भी रस्सी का फन्दा डाला था···।

तो यही अपराधी है···।

फिर हमीद के दिमाग में वही छिपकिली रेंगने लगी जो उसे विचार शक्ति से वंचित कर दिया करती थी। जिसके कारण वह विपत्तियों में पड़ जाता था—। साधारण स्थिति में हमीद की कार्य

कर्नल विनोद श्मशान घाट पर कुछ देर तक तो कुँवर अमर सिंह के साथ रहा था और फिर अचानक गायब हो गया था। उसके गायब होने का कारण वह आदमी था जो उस जन समूह में एक लड़की से कह रहा था।

"तुम भी औरत हो···।"

"फिर···?" लड़की ने पूछा।

"फिर यह कि जहां औरत होती है वहाँ यही सब होता है। तुम्हारी माँ भी औरत थी···।"

"तुम्हारी माँ भी तो औरत ही है या थी!" लड़की ने जल कर कहा।

"मेरी कोई माँ नहीं थी। लोग बिना बाप के पैदा होते हैं··· मगर मैं बिना माँ के पैदा हुआ था···।"

"क्या बात हुई।" लड़की ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"लोग जिसे मेरी माँ समझते थे उसे मैं अपना बाप समझता था···" उसने फीकी मुस्कान के साथ कहा और फिर लड़की को सलाम करके आगे बढ़ गया।

उस आदमी की आयु चालीस से कम ही थी। देखने में अपाहिज मालूम हो रहा था। बात करने में जबान लड़खड़ाती थी। हाथ सूखे हुये थे।

कुछ आगे बढ़ने पर उस आदमी ने एक दूसरी लड़की से कहा जो शायद उसी की प्रतीक्षा कर रही थी।

"अगर डायरी न मिली तो जानती हो क्या होगा।"

"क्या होगा!" लड़की ने पूछा।

"हम और तुम दोनों ही मार डाले जायेंगे।"

"तो मैं क्या करूँ—" लड़की ने कहा।

"तुम समझती क्यों नहीं सारा···।"

"मैं सब समझती हूँ—मगर विवश हूँ।"

"तुम कुँवर अमर सिंह से विवाह कर लो।"

"काश मैं ऐसा कर सकती...।"

"तुम अपने समय की सर्व सुन्दरी हो—।"

"बेकार बातें मत करो। कोई सुन भी सकता है।" लड़की ने कहा।

"रनजीत कहाँ है।"

"डर के कारण गायब है..." लड़की ने कहा।

"अच्छा—मैं डायरी चुराने जा रहा हूँ—।"

"किससे सहायता लोगे।" लड़की ने पूछा।

"ड्राइवर से—उसने तीन चार आदमी देने का वादा किया है।"

"अच्छी बात है——कब मुलाकात होगी——" लड़की ने कहा।

"भगवान से प्रार्थना करो कि हमें खून का उजाला न देखना पड़े—" उस आदमी ने कहा और लड़की को वहीं छोड़ कर आगे बढ़ गया।

भीड़ से निकल कर वह सड़क पर आया और एक टैक्सी पर बैठ कर चल पड़ा।

विनोद ने भी टैक्सी की और उसके पीछे लग गया। टैक्सी के अन्दर ही अन्दर उसने अपने चेहरे में कुछ ऐसा परिवर्तन कर लिया कि उसे पहचाना नहीं जा सकता था।

फिर वह लालगढ़ के एक ऐसे होटल तक पहुँचा जो काफी बदनाम था।

अगली टैक्सी वाला उतर कर होटल की इमारत तक बढ़ा था—मगर सदर दरवाजे ही के पास उसे एक आदमी मिल गया था, जिसने उसे देखते ही कहा।

"तुमने यहां तक पहुँचने में काफी देर कर दी रंजन।"

"क्या वह सब चले गये ?" उसने पूछा।

"नहीं रंजन! मैं बहरहाल ड्राइवर हूँ और ड्राइवर अपनी गाड़ी चलाना अच्छी तरह जानता है।"

"फिर अब क्या प्रोग्राम है।"

"वह तीनों तैयार हैं!"

"क्या करेंगे!"

"तुम्हारे साथ उस मकान में दाखिल होंगे—तुम डायरी तलाश कर लेना।"

"क्या वह मकान में मौजूद नहीं है।"

"नहीं—" ड्राइवर ने कहा।

"कहाँ गया है।"

"प्रेम और प्रतिशोध की भावना ने उसे अन्धा कर रखा है—" ड्राइवर ने कहा।

"तुम्हारे साथी कमजोर तो साबित नहीं होंगे।"

"उनमें से हर एक दस दस पर भारी है—" ड्राइवर ने कहा।

"वह सब क्या कर रहे हैं।"

"तुम यहीं ठहरो—मैं उन्हें बुला कर लाता हूँ।" ड्राइवर ने कहा और घूम कर अन्दर चला गया।

विनोद उनसे कुछ ही फासिले पर आड़ में कुछ इस प्रकार खड़ा था कि न तो उस पर ड्राइवर की नज़र पड़ी थी और न उस अपाहिज आदमी की जिसका नाम रंजन था। ड्राइवर के अन्दर जाने के बाद भी वह उसी जगह उसी प्रकार खड़ा रहा।

थोड़ी देर बाद ड्राइवर तीन दूसरे आदमियों के साथ बाहर निकला। उन तीनों का डील डौल यही प्रकट कर रहा था कि शायद ही उन्होंने जीवन में मारने के अतिरिक्त मार खाई हो।

"चलो—अब चला जाये—" ड्राइवर ने कहा।

"इनके साथ एक मकान में दाखिल होना है—" ड्राइवरने

रंजन की ओर संकेत करते हुये कहा।

"नहीं—" रंजन बोल पड़ा "मकान के अन्दर केवल मैं दाखिल हूँगा। तुम लोग बाहर ही रहोगे। मेरे बाद यदि कोई अन्दर दाखिल होने की कोशिश करेगा तो उससे समझ बूझ लेना—।"

"अर्थात् उसे कत्ल कर दिया जायेगा—क्यों—" एक ने लापरवाही से कहा।

"नहीं—कत्ल नहीं—" रंजन ने कहा "बस दो चार हाथ ऐसे जमा देना कि वह बेहोश हो जाये।"

"सारा कहाँ है।" ड्राइवर ने पूछा।

"मैं नहीं कह सकता कि इस समय यह कहाँ होगी—" रंजन ने कहा।

"सुरेश का क्या हुआ।"

"उसके साथ अब्राहम लग गया है—।"

"मेरा विचार है कि उस बूढ़े को भी खत्म कर दिया जाये—" ड्राइवर ने कहा।

"नहीं...मैं कत्ल और खून पसन्द नहीं करता—" रंजन ने कहा।

इसके बाद वह पांचों उसी टैक्सी पर बैठे और टैक्सी चल पड़ी। विनोद भी अपनी टैक्सी में बैठा और थोड़ा सा फासिला रख कर उनकी टैक्सी का पीछा करने लगा।

एक इलाके में पहुंच कर अगली टैक्सी रुकी। वह पांचों उतरे और टैक्सी वाले को विदा करके पांचों एक कोठी के कम्पाउन्ड में दाखिल हो गये। विनोद भी उनके पीछे कम्पाउन्ड में दाखिल हुआ।

कोठी के गेट पर लगी हुई नेम प्लेट देख कर उसके अधरों पर मुस्कान थिरक उठी थी। कोठी में सन्नाटा था। ऐसा लग रहा था जैसे कोठी में रहने वाले सो रहे हों। किसी नौकर का भी पता नहीं

था। कोई चौकीदार या पहरेदार भी नजर नहीं आया था। नौकरों की अनुपस्थिति से यह भी साबित होता था कि वह दाखिल होने वालों को इतने निकट से जानते रहे हों कि उनके आगमन पर उन्हें किसी प्रकार का आश्चर्य नहीं हुआ हो और वह मौन रह गये हों···या फिर सो रहे हों···।

विनोद बढ़ता गया। पोर्टिको के पास पहुँचा ही था कि उसे एक गुँजीली आवाज सुनाई दी।

"कौन है।"

विनोद ने उत्तर नहीं दिया बल्कि आगेही बढ़ता चला गया। यहां तक कि पोर्टीको में जलने वाले बल्ब का प्रकाश उसके चेहरे पर पड़ने लगा।

रंजन मौजूद नहीं था। वह तीनों ड्राइवर के साथ बराम्दे की सीढ़ी पर खड़े थे और विनोद को बड़े आश्चर्य से देख रहे थे··· फिर ड्राइवर ने कहा।

"यह वह नहीं है—यह कोई अपरिचित है।"

"कौन हो तुम।" इस बार पूछने वाले का स्वर कोमल था।

"एक आदमी···विनोद ने कहा।

"क्यों आये हो।"

"रंजन साहब से मिलना है—" विनोद ने कहा।

"यहां कोई रंजन साहब नहीं रहते। जानते हो यह किसकी कोठी है।"

"जिसकी भी हो···मुझसे कोई मतलब नहीं..."विनोद ने कहा। "मैंने मिस्टर रंजन को अन्दर दाखिल होते हुये देखा है और बिना उनसे मिले मैं वापस नहीं जाऊँगा।"

"शायद तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।"

"पहले तो नहीं था···हो सकता है अब खराब हो जाये···" विनोद कहता हुआ आगे बढ़ा।

"शायद तुम्हारी मौत ही आ गई है...।"

"हो सकता है..." विनोद ने लापरवाही से कहा।

"अच्छा ठहरो...मैं मिस्टर रंजन को बुला लेता हूँ..." ड्राइवर ने कहा और विनोद जहाँ था वहीं रुक गया।

ड्राइवर कोने वाले कमरे की ओर बढ़ा और फिर उसमें दाखिल हो गया। विनोद वहीं खड़ा उन तीनों पर नजरें जमाये रहा जो अब भी सीढ़ी पर ही खड़े थे।

थोड़ी ही देर में ड्राइवर कमरे से बाहर निकला। उसके साथ रंजन भी था। उसके हाथों में एक चौड़ी सी डायरी थी।

"क्या काम हो गया।" उन तीनों ने रंजन को देखते ही पूछा।

"हाँ..." रंजन ने कहा।

"यह साहब तुमसे मिलना चाहते हैं..." तीनों में से एक ने विनोद की ओर संकेत करते हुये रंजन से कहा।

रंजन ने विस्मय के साथ विनोद को देखा और भय तथा आश्चर्य के मिले जुले स्वर के साथ बोला।

"कौन हो तुम और मुझसे क्या काम है।"

"पिछली बार तुमने मुझसे भी ऐसा ही एक काम लिया था और दो हजार देने का वादा किया था...मगर एक पैसा भी नहीं दिया। मैं वही पैसा लेने आया हूँ।"

"क्या बकवास है— रंजन ने आँखें निकाल कर कहा "मैं तो तुम्हें पहचानता भी नहीं।"

"सुनो मिस्टर रंजन!" सीधे से रुपये दे दो वर्ना...।"

"वर्ना तुम क्या करोगे।"

"यह डायरी तुमसे छीन लूँगा...।" विनोद ने कहा।

"तुम्हें किसने भेजा है।" रंजन ने पूछा।

"ठाकुर रनजीत सिंह ने..." विनोद ने कहा।

"बिल्कुल झूठ…" रंजन चीख पड़ा और अपने साथियों की ओर देखा।

वह सब इस भाव में बढ़े जैसे विनोद को घेरे में लेना चाहते हों।

"क्यों…इसमें झूठ क्या है।" विनोद ने पूछा।

"कब कहा।"

"लगभग दो घन्टे पहले…।"

"क्या कहा था।"

"यही कि मैं तुम से डायरी छीन लूँ।"

रंजन ने संकेत किया और वह तीनों विनोद की ओर झपटे। ड्राइवर रंजन ही के पास खड़ा रहा।

विनोद ने ताड़ लिया था कि रंजन अपने आदमियों को उससे उलझा कर खुद निकल भागना चाहता है। उसे इसका भी अन्दाजा हो गया था कि परिस्थिति क्या होगी…इसलिये जैसे ही वह तीनों उस पर टूटे…वह झुकाई देकर उनके घेरे से निकल गया और रंजन की ओर झपटा। फिर उसका भरपूर घूंसा रंजन की पीठ पर पड़ा—घूंसा खाकर जैसे ही वह झुका…डायरी विनोद के हाथों में पहुँच गई।

रंजन ने फर्श पर पड़े ही पड़े उन तीनों को ललकारा और वह फिर विनोद की ओर बढ़े। उन्हें आशा थी कि विनोद भाग निकलेगा, मगर वह अपने स्थान ही पर खड़ा रहा।

"आओ आओ…मुझे भी देखना है कि तुम लोगों में कितना कस बल है…" विनोद ने मुस्कुरा कर कहा।

इस ललकार पर तीसरा तो रुक गया और शेष दो बाज के समान विनोद पर झपटे। एक ने विनोद की कमर थाम ली और दूसरे ने विनोद की गर्दन में अपनी भुजायें फंसा दीं और दोनों उसे गिराने की कोशिश करने लगे। तीसरा जो रुक गया था अब चाकू

खोल रहा था।

उधर ड्राइवर रंजन को उठा रहा था।

अचानक वह दोनों जो विनोद से लिपटे हुये थे, धरती पर आ रहे और तीसरा जो चाकू खोल रहा था घूंसा खा कर चाकू सहित धरती पर आ रहा। फिर तीनों बारी बारी उठे। विनोद का विचार था कि इस बार वह मिल कर हमला करेंगे मगर तीनों एक साथ गेट की ओर भागे···शायद उन्होंने रंजन और ड्राइवर को भागते हुये देख लिया था।

चूँकि विनोद की नजरों में रंजन और उस ड्राइवर का महत्व बढ़ गया था इसलिये वह उन्हें छोड़ना नहीं चाहता था। वह भी डायरी संभालता हुआ गेट की ओर दौड़ा।

जब सड़क पर आया तो रंजन और ड्राइवर टैक्सी में बैठ चुके थे और वह तीनों भी बैठ रहे थे। विनोद टैक्सी की ओर दौड़ा मगर टैक्सी चल पड़ी और वह रुक कर हाथ मलने लगा।

यह संयोग ही था कि फौरन ही उसे भी एक खाली टैक्सी मिल गई और वह उस पर बैठ कर उसी ओर चल पड़ा जिधर रंजन की टैक्सी गई थी।

"तेज चलो···मुंह मांगा इनाम दूंगा···।" उसने ड्राइवर से कहा और ड्राइवर ने टैक्सी की स्पीड बढ़ानी आरम्भ कर दी।

थोड़ी ही देर में रंजन वाली टैक्सी की पिछली लाल रोशनी दिखाई देने लगी।

"सौ गज का फासिला रख कर अगली गाड़ी के पीछे लगे रहो···" विनोद ने ड्राइवर से कहा।

"जी अच्छा—" ड्राइवर ने कहा।

मार्ग सुनसान था और अगली टैक्सी झील की ओर जा रही थी। उधर मछेरों की बस्ती थी।

रहा था।

"अगर किसी पुरुष की खुशामद की जाये या उसकी झूठी प्रशंसा की जाये तो वह सोच भी सकता है कि उसे मूर्ख बनाया जा रहा है—मगर नारी कुछ नहीं सोचती। वह अपनी प्रशंसा सुन कर हर्षित होती है। क्या आप यह नहीं जानते कि आज के जमाने मेंकेवल अपनी मन पसन्द एक साड़ी के लिये नारी अपने पति को भी धोखा दे देती हैं—अपने माता पिता को धोखा दे देती है—सबसे झूठ बोलती है। कप्तान साहब! मैंने अभी कहा था कि पुरुष अपनी भावनाओं की तृप्ति के लिये बुद्धि प्रयोग करता है…लेकिन मैंने गलत कहा था। पुरुष केवल अपनी भावनाओं की तृप्ति चाहता है… मगर नारी अपनी भावनाओं की तृप्ति नहीं चाहती। वह केवल अपने को संवारना चाहती है—और उसके इस संवरने में यदि कोई रोड़ा अटकाता है तो आप जानते हैं……वह उस रोड़ा अटकाने…।"

सुरेश के मुख से आगे की बात के बदले एक दर्द भरी कराह निकल पड़ी। क्योंकि उसके सर पर चीनी की एक प्लेट टूटी थी। उसने दोनों हाथों से अपना सर थाम लिया था। फिर एक गिलास सर पर पड़ा और छनाके के साथ टूट कर फर्श पर आ रहा और हमीद तेजी से दरवाजे की ओर दौड़ा, क्योंकि उसने उस हाथ को देख लिया था जो सदर दरवाजे के पर्दे के पीछे से निकला था और जिसने पहली बार प्लेट फेंकी थी और दूसरी बार गिलास।

सदर दरवाजे से बाहर निकला तो रात का भयानक सन्नाटा अपने अस्तित्व की अनुभूति दिलाने लगा। तीव्र प्रकाश से अचानक अन्धकार में आने के कारण पहले तो उसे कुछ दिखाई नहीं दिया… फिर उसे एक साया दिखाई पड़ा जो सड़क पर पहुँच चुका था—फिर जब वह सड़क पर पहुंचा तो उस साये को एक टैक्सी में बैठते हुये देखा। टैक्सी की टेल लाइट बुझी हुई थी इसलिये वह नम्बर

एक बड़े से मकान के सामने टैक्सी रुकी और पांचों उतर कर उसी मकान में दाखिल हो गये।

विनोद ने भी कुछ फासिले पर अपनी टैक्सी रुकवा दी और ड्राइवर को वहीं रुके रहने का आदेश देता हुआ उसी इमारत की ओर बढ़ा।

मकान का दरवाजा केवल भिड़ा हुआ था। उसने धीरे से खोला और अन्दर दाखिल हो गया। फिर पाँव दबाता हुआ आगे बढ़ने लगा।

एक कमरे की खुली खिड़की से प्रकाश बाहर आ रहा था। उसने खिड़की के निकट पहुँच कर बड़ी सावधानी से अन्दर झांका। अन्दर वही पांचों बैठे हुये थे और उनके सामने एक सुन्दर नवयुवक कुर्सी से बंधा बैठा हुआ था। रंजन उसे खा जाने वाली नजरों से घूर रहा था। कमरा काफी बड़ा था और एक किरोसिन लैम्प जल रहा था।

विनोद ने पूरी स्थिति अच्छी तरह समझने के बाद जेब से रिवाल्वर निकाल कर हाथ में लिया और पैर दबाता हुआ दरवाजे के पास आया। इस कमरे का दरवाजा भी भिड़ा ही हुआ था। उसने दाहिना हाथ सीधा किया और दरवाजे पर पैर से ठोकर मारी। दरवाजा आवाज के साथ खुल गया।

अन्दर वाले बड़े जोर से चौंके, फिर उठना ही चाहते थे कि विनोद ने ललकारा।

"नहीं···सावधान···जो जिस पोजीशन में है उसी पोजीशन में रहे···मेरे हाथ में ऐसा रिवाल्वर है जो आवाज नहीं करता और निशाना कैसा है···इसे भी देख लो।"

विनोद ने बात समाप्त कर के फायर किया और उन तीनों भाड़े के टट्टूओं में से एक के सर की फेल्ट हैट उड़ गई।

"देखा तुमने!" विनोद ने मुस्कुरा कर कहा "इसी प्रकार तुम

सब लोगों के सरों में सुराख भी हो सकते हैं···मगर मैं रिवाल्वर प्रयोग नहीं करूंगा।" बात समाप्त करके विनोद ने रिवाल्वर जेब में डाल लिया।

वह सब इस प्रकार भयभीत नजर आने लगे थे जैसे मौत का फरिश्ता उनके सरों पर चपत मार कर भाग गया हो। वह तीनों रंजन और ड्राइवर की ओर बार बार देखते और फिर सर झुका लेते।

"तुम कौन हो और क्या चाहते हो?" रंजन ने पूछा।

"मैं विनोद हूँ और मैं केवल यह चाहता हूँ कि तुम सच बोलो!"

"और अगर हम सच न बोलें तो।?"

"तो यह होगा कि तुम में से कुछ के हाथ टूटेंगे···कुछ के पैर टूटेंगे···किसी का सर फटेगा और किसी के दांत टूट कर मुँह में आयेंगे···और फिर सच भी बोलना पड़ेगा।"

"हम तीनों निर्दोष हैं···।" तीनों में से एक ने कहा।

"यह मैं जानता हूँ···" विनोद ने कहा "और मुझे तुम लोगों से कुछ पूछना भी नहीं है, इसलिये तुम लोग जा सकते हो।"

उन तीनों ने उठना चाहा। रंजन ने ड्राइवर की ओर देखा और ड्राइवर ने आंखें निकाल कर उन तीनों से कहा।

"तुम लोग वचन से विमुख हो रहे हो!"

"फिर हम क्या करें—" तीनों ने एक साथ पूछा।

"इसे मार डालो—इसका रिवाल्वर छीन लो—" उसने विनोद की ओर संकेत करके कहा।

"यह आदमी नहीं मालूम होता···" एक ने कहा "हम इसकी शक्ति देख चुके हैं।"

विनोद मौन खड़ा था। उसके अधरों पर बड़ी मोहक मुस्कान फैली हुई थी। धा हुआ युवक अपलक विनोद की ओर देख रहा

था और अब उसके चेहरे पर भय की जगह सन्तोष की झलकियां नजर आ रही थीं।

"तुम लोग इससे डर रहे हो—" रंजन ने कहा "धिक्कार है तुम लोगों पर ! अरे यह अकेला है और हम पांच हैं।"

"हम अगर दस होते तो तब भी यह हम पर भारी पड़ता। हम लोग वापस जा रहे हैं। तुम अपने पैसे वापस ले लो !"

"ठहरो——" विनोद बोला "इन्होंने तुम्हें कितने पैसे दिये थे ?"

"इस समय के सौ रुपये की कस—"

"इससे पहले तुमसे इन्होंने कौन सा काम लिया था और उसके कितने पैसे दिये थे।"

"कल रात इन्होंने एक लाश हमसे क्रेट में बन्द करवाई थी और सवेरे उसे क्रेट को एक कार पर चढ़वाया था। उसके दो सौ रुपये का कस इन्होंने हमें दिये थे।"

"यह लाश कहां मिली थी।" विनोद ने पूछा।

"इसी मकान में...।"

"इससे पहले भी इन्होंने तुम लोगों से काम लिया था ?" विनोद ने पूछा।

"इस ड्राइवर के साथ हमने कई बार सीमा तक की यात्रा की है... लेकिन किसी भी बार हमें यह पता नहीं चल सका था कि यह हमें क्यों ले गया था।"

"अच्छा—अब तुम लोग जा सकते हो। रुपये वापस करने की आवश्यकता नहीं है। रुपये मैं वापस कर दूंगा। तुम लोग केवल अपने पते बताओ।"

उन तीनों ने अपने पते बताये और फिर जैसे ही जाने के लिये आगे बढ़े ड्राइवर ने विनोद पर छलांग लगाई और चीख कर

"लेकिन आप इसी से पूछिये। जहां पर झूठ बोलेगा मैं आपको बता दूँगा।"

"रनबीर को किसने कत्ल किया था?" विनोद ने पूछा।

लेकिन रंजन ने उत्तर नहीं दिया। उसी प्रकार विनोद को घूरता रहा।

विनोद ने आगे बढ़ कर उसका कालर पकड़ा और उसे सीधा खड़ा करके बोला।

"बताओ! रनबीर को किसने कत्ल किया था?"

रंजन इस बार भी मौन रहा।

विनोद ने उसे एक हाथ से पकड़ा और दूसरे हाथ से उसकी कुहनी किरोसिन लैम्प पर रख दी।

रंजन बिलबिला उठा।

"मैं सब बता दूंगा—।"

विनोद ने लैम्प पर से उसकी कुहनी हटा दी और फिर अपना प्रश्न दुहराया।

"रनबीर को किसने कत्ल किया था?"

"यह मैं नहीं जानता—लेकिन लाश यही ड्राइवर ही लेकर आया था!"

"इस डायरी में क्या है?" विनोद ने पूछा।

"उस आदमी का रहस्य जो हम से काम ले रहा है।"

"क्या जो आदमी तुमसे काम ले रहा है उसे तुम नहीं जानते?"

"नहीं।"

"फिर तुम्हें इस डायरी के बारे में कैसे मालूम हुआ था?" विनोद ने पूछा।

"मुझे सारा ने बताया था।"

"क्या बताया था !"

"यही कि इस डायरी में उस अज्ञात आदमी के सम्बन्ध में सारी बातें दर्ज हैं और इसी से उसका असल व्यक्तित्व प्रकट हो जायेगा।"

"इसका मतलब यह हुआ कि सारा उस अज्ञात आदमी को जानती है...." विनोद ने कहा।

"सोचता मैं भी यही हूं लेकिन विश्वास के साथ नहीं कह सकता कि वह जानती ही होगी।"

"तुम लाश कहां से लाये थे ?" विनोद ने ड्राइवर से पूछा।

"हवेली के पिछले भाग से...." ड्राइवर ने कहा।

"तुम सेटी जज के ड्राइवर हो !" विनोद ने पूछा।

"जी हां....।"

"जज साहब के कितने बच्चे हैं !"

"एक ही लड़की थी वह भी मर गई।"

"कब देहान्त हुआ !"

"एक महीना पहले....।"

"कैसे देहान्त हुआ !"

"मैं नहीं कह सकता—वैसे लोग कहते हैं कि उसने आत्म हत्या की थी।"

"तुम स्मगलिंग करते हो !"

"जी हां...।"

"किस चीज की !"

"कोकीन की....।"

"क्या जज साहब को यह मालूम है।"

"अगर उन्हें मालूम हो जाये तो मुझे गोली मार दें।"

"तुम स्मगलिंग क्यों करते हो !" विनोद ने पूछा।

"उसी अज्ञात आदमी के कारण—।"

विनोद ने कहा।

"हवेली में बहुत से ऐसे लोग रहते हैं जिनका बाप कोई दूसरा है मगर वह किसी दूसरे के लड़के प्रसिद्ध हैं। बस यही हाल मेरा भी है। मैं अब्राहम का लड़का हूँ, लेकिन कहा यह जाता है कि मैं रनजीत का सौतेला भाई हूं और रनजीत की माँ मुझे गोद में लेकर आई थी।"

"तुम रनजीत को कत्ल करने वाले थे।" विनोद ने पूछा।

"हाँ।"

"क्यों।"

"उस शक्ति शाली अज्ञात आदमी की यही आज्ञा थी। कल सवेरे रनजीत को खून का उजाला देखना पड़ता। अभी रनजीत को चौबीस घन्टे और कैद में रहना पड़ता।"

"जिस समय चिताओं में आग लगाई जा रही थी... उस समय तुम सारा से बातें कर रहे थे ना।" विनोद ने पूछा।

"हां—"

"सारा कौन है।"

"वह अब्राहम की लड़की है और इस प्रकार मेरी सौतेली बहन होती है।'

"तब तो तुम सारा के बारे में और कुछ भी जानते होगे।" विनोद ने कहा।

"यह जानता हूँ कि कुँवर अमर सिंह सारा से प्रेम करता है। लोगों को इस बात का सन्देह है कि रनजीत भी सारा से प्रेम करता है—इसी कारणवश कुँवर ने सारा से शादी नहीं की।"

"मगर रनजीत और सारा...।"

"रनजीत को सारा से प्रेम करने का अधिकार है...।" रंजन ने बात काट कर कहा "सारा का बाप अब्राहम है—मां कोई दूसरी

"क्या मतलब ?"

"उसने पहले तो मुझे और रंजन को स्मगलिंग में फंसाया था और अब हमें ब्लैक मेल कर रहा है।"

"तुम्हें आदेश या आज्ञायें कैसे मिलती हैं।" विनोद ने पूछा।

"लिखित आदेश मिलता है—कभी कागज मेरी जेब में मिलता है और कभी कार के अन्दर।"

"जालिम सिंह कैसे मारा गया था।" विनोद ने पूछा।

"यह मैं नहीं जानता।"

"और महेन्द्र सिंह।"

"यह भी मैं नहीं जानता···हां इतना अवश्य है कि महेन्द्र की लाश मैंने ही चार दीवारी से हवेली में फेंकी थी।"

"क्या उस समय वह खतरनाक आदमी वहां मौजूद था।" विनोद ने पूछा।

"जी हां···मगर नकाब में था।"

"बहुत शक्ति शाली है।"

"जी हां—आप ही के समान।"

विनोद ने रंजन की ओर नजरें घुमाईं और बोला।

"क्या ड्राइवर ने सारी बातें सच कही हैं।"

"जी हां···।"

"तुम कहां रहते हो।" विनोद ने पूछा।

"हवेली में···।"

"कुँवर अमर सिंह से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है।"

"मैं रनजीत का सौतेला भाई हूँ—बस यही सम्बन्ध है···।"

"तुम रनजीत के सौतेले भाई हो और रनजीत कुँवर अमर सिंह का सौतेला भाई है···यह सम्बन्ध मेरी समझ में नहीं आया।"

थी। मेरी और रनजीत की माँ एक थी। मेरा बाप अब्राहम है—रनजीत का बाप कोई और था—कहने का मतलब यह है कि मैं और रनजीत दोनों ही हरामी हैं—लेकिन रनजीत का प्रेम करना बेकार ही है—।"

"क्यों।" विनोद उसे घूरने लगा।

"इसलिये कि सारा से वह अज्ञात शक्तिशाली आदमी भी प्रेम करता है—उसके सामने रनजीत की दाल नहीं गल सकती।"

"जब जालिम सिंह की हत्या हुई थी उस समय वह रहस्यपूर्ण शक्तिशाली आदमी हवेली में मौजूद था।"

"जी हां—मौजूद था।"

"ठीक है—" विनोद ने कहा "मैं तुम दोनों को बचाने की कोशिश करूँगा—वैसे विश्वास रखो—अब वह आदमी मेरे हाथों से नहीं बच सकता।"

इतना कह कर विनोद बैठ गया और डायरी खोल कर पन्ने उलटने लगा—।

फिर डायरी बन्द करके घड़ी देखी। रात के तीन बज रहे थे। उसने उठते हुये।

"आओ चलो रनजीत—।"

"कहाँ।" रनजीत ने पूछा।

"चलो…बताता हूँ—।"

"और यह दोनों।" रनजीत ने पूछा।

"यहीं रहेंगे…"

"नहीं—" रंजन ने गिड़गिड़ाते हुये कहा "वह हमें गला घोंट कर मार डालेगा और मैं अभी मरना नहीं चाहता।"

"ठीक है—तुम दोनों भी मेरे साथ चलो—" विनोद ने कुछ सोचते हुये कहा।

बोला।

"अरे हरामजादो! यह तुम्हें फांसी के तख्ते तक पहुंचा देगा। इसे मार डालो।"

लेकिन वह तीनों रुके नहीं आगे ही बढ़ते गये।

उधर विनोद का घूँसा ड्राइवर के जबड़े पर पड़ा और वह उलट गया।

रंजन ने अवसर देख कर निकल भागना चाहा, मगर विनोद के घूँसे ने उसे भी फर्श पर उलट दिया—और फिर विनोद की ठोकरों ने दोनों को बेदम कर दिया। फिर विनोद ने कुर्सी से जकड़े हुये आदमी को आजाद किया और बोला।

"मेरा विचार है कि तुम रनजीत हो...।"

"जी हां—।"

"तुम यहां कब से हो?"

"यह लम्बी कहानी है—।"

"तुम्हें यहां कौन लाया था?"

"रंजन—शायद मुझे भी खून का उजाला देखना पड़ता।"

"यह खून का उजाला क्या है?"

"मौत का एक नाम और एक कहानी!"

ड्राइवर फर्श पर बैठा हुआ अपनी आस्तीन से मुँह का खून साफ कर रहा था और रंजन फटी फटी आंखों से विनोद को घूर रहा था।

"क्या तुम मरना चाहते हो?" विनोद ने रंजन से पूछा।

उसने इन्कार में सर हिला दिया।

"तुम इसके बारे में क्या जानते हो?" विनोद ने रंजन की ओर संकेत करके रनजीत से पूछा।

"जानने को तो बहुत कुछ जानता हूँ—" रनजीत ने कहा,

बाहर निकल कर चारों उस ओर बढ़े जहाँ विनोद ने अपनी टैक्सी रुकवा रखी थी। ड्राइवर सीट पर बैठा सो रहा था। विनोद ने उसे जगाया और फिर चारों टैक्सी पर बैठ कर वापस लौटे—मार्ग वही था जिस मार्ग से वह यहाँ आया था।

फिर उसने उसी कोठी के पास टैक्सी रुकवाई जिस इमारत से रंजन वह डायरी लाया था।

मगर अब कोठी का फाटक बन्द था। विनोद ने रंजीत की ओर देखा और बोला।

"सुरेश आ गया होगा।"

"मैं कह नहीं सकता—।" रनजीत ने उत्तर दिया।

"मैं अन्दर पहुंचना चाहता हूँ और फाटक बन्द है—" विनोद ने कहा और रंजन की ओर देखने लगा।

"बाईं ओर गली से भी अन्दर जाने का मार्ग है—" ड्राइवर ने कहा।

"ठीक है–" विनोद ने कहा और उनको लिये हुये उसी गली में मुड़ गया। इस गली के दोनों ओर दो कोठियों की चारदीवारियाँ थीं।

गली में कुछ ही दूर चलने के बाद विनोद चौंक कर एकदम से रुक गया। कारण यह था कि एक आदमी लम्बा लम्बा पड़ा हुआ था। विनोद ने पेन्सिल टार्च जलाई और उसके मुख से आश्चर्य भरी आवाज निकल गई।

"हमीद—यहाँ।"

फिर उसने झुक कर हमीद को उठाया और लाकर टैक्सी की पिछली सीट पर डाल दिया।

फिर कोठी में दाखिल होने का इरादा छोड़ कर टैक्सी में बैठ गया। रंजन—ड्राइवर और रनजीत भी टैक्सी में बैठ गये।

"हवेली की ओर चलो—" विनोद ने ड्राइवर से कहा।

टैक्सी स्टार्ट होकर मुड़ गई और फिर सड़क पर फर्राटे भरने लगी।

"सुरेश तुम्हें पहचानता है?" विनोद ने रंजन से पूछा।

"नहीं—" रंजन ने कहा।

"क्यों—वह तो हवेली में आता जाता है।"

"हवेली में उसका आना जाना इधर ही आरम्भ हुआ है। दूसरी बात यह है कि मैं यहां था भी नहीं। दो दिन पहले आया हूँ।"

"कहां गये थे?" विनोद ने पूछा।

"राजधानी...वापसी में कैप्टन हमीद भी साथ थे।"

"सारा भी साथ थी।"

"जी हां...और अब्राहाम भी साथ था। हम सब उसी कम्पार्टमेंट में थे जिसमें कैप्टन साहब थे, मगर हम तीनों एक दूसरे से असम्बन्धित थे।"

"तुम राजधानी क्यों गये थे।" विनोद ने पूछा।

"उसी रहस्यपूर्ण शक्तिशाली आदमी ने सारा की जासूसी के लिये भेजा था।"

फिर खामोशी छा गई टैक्सी सुनसान सड़क पर फर्राटे भरती हुई हवेली की ओर उड़ी जा रही थी।

फिर टैक्सी हवेली में दाखिल हो गई।

—०००—

दूसरे दिन विनोद दिन भर गायब रहा और हमीद सोता रहा। तीसरे पहर बस कुछ देर के लिये हमीद से मिला था और हमीद ने रात का पूरा विवरण बताते हुये अपना सन्देह भी प्रकट कर दिया

था। जब वह चुप हो गया था तो विनोद ने कहा था।

"मुझे पूरी आशा है कि आज रात इस ड्रामे का अन्तिम सीन सामने आ जायेगा..." विनोद ने मुस्कुरा कर कहा।

"सच !" हमीद ने विस्मय के साथ कहा।

"हाँ हमीद...बस मैं फिङ्गर प्रिन्ट वालों की रिपोर्ट की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। उस प्लेट और उस गिलास के टुकड़े को भी फिङ्गर प्रिन्ट सेक्शन को भेज दिया था जो उस होटल में सुरेश के सर पर टूटे थे...।"

"सुरेश...।"

"मैं उससे मिल चुका हूँ और इस समय वह मेरी कैद में है..." विनोद ने कहा 'और यह भी सुन लो कि हत्यारा पकड़ा जा चुका है मगर उसके हाथों में हथकड़ियाँ तुम्हें डालनी होंगी।"

"तरुन का क्या हुआ ?" हमीद ने पूछा।

"मुझे उसका भी इन्तजार है..." विनोद ने कहा "डाक्टरों का कहना है कि उसे होश तो आ चुका है मगर स्नायु इतने कमजोर हैं कि अभी कुछ घन्टों तक उससे किसी प्रकार की बात नहीं की जा सकती।"

"उससे कोई मिलने गया था ?" हमीद ने पूछा।

"बहुत ऊँचे जा रहे हो..." विनोद ने मुस्कुराते हुये कहा "इतना चुभता हुआ प्रश्न किया है कि तुम्हारा मुँह चूम लेने को जी चाहता है...।"

"ऊई अल्लाह...तो अब आप मुझे छेड़ेंगे..." हमीद ने नारी स्वर में कहा।

"डफर !" विनोद ने उसकी पीठ पर प्यार से एक घूंसा जड़ दिया।

"आपने बताया नहीं।" हमीद ने कहा।

"तरुन के मिलनेके लिये सारा डयूड उर्फ चंचल... उसका बाप अब्राहाम...जज सेठी... कुँवर अमर सिंह तथा सुरेश गये थे...मगर डाक्टरों ने इनमें से किसी को भी तरुन से नहीं मिलने दिया था।"

"अगर आज्ञा हो तो मैं जाकर मिल जाऊँ।" हमीद ने पूछा।

"नहीं..." विनोद ने मुस्कुराकर कहा "कुछ घन्टे बाद वह यहीं आयेगी।"

इसके बाद विनोद फिर चला गया था।

सन्ध्या होते ही हमीद ने देखा कि हवेली में कारें आना आरम्भ हो गईं। एक कार से जज सेठी आया...दूसरी कार से मजिस्ट्रेट और एस० पी० उतरे! उसके बाद विनोद आया था।

हवेली में ऐसा लग रहा था जैसे कोई उत्सव समारोह मनाया जाने वाला हो।

कुँवर अमर सिंह के चेहरे पर हर्ष और उल्लास की रेखायें थीं जिन पर कभी कभी दुख और वेदना की छाया भी पड़ जाती थी।

जब सब लोग एक बड़े कमरे में पहुंच गये तो विनोद भी हमीद को लिये हुये उसी कमरे में दाखिल हुआ।

"क्या मामिला है भाई।" जज सेठी ने विनोद को देख कर गम्भीरता के साथ पूछा।

"जज हमेशा जज होता है..." विनोद ने भी गम्भीरता के साथ कहा "आज एक बहुत ही विचित्र और महत्वपूर्ण मुकदमा पेश होने वाला है और उसका फैसला आपको यहीं करना है।"

"मुझे।" सेठी ने चौंक कर पूछा।

"जी हां..." विनोद इस बार मुस्कुरा पड़ा "केस का मुजरिम एक ऐसा आदमी है जिस तक किसी का ख्याल भी नहीं पहुंच सकता

और न उसकी गिरफ्तारी सम्भव है...इसीलिये मैंने यह सोचा कि मुजरिम को आपके सामने गिरफ्तार करूँ ताकि जब उसका केस अदालत में जाये तो फिर वह छूट न सके।"

"तो क्या मैं यह समझ लूं कि तुम एक ड्रामा करने वाले हो..." जज सेठी ने कहा।

"यही समझ लीजिये..." विनोद ने कहा।

यह बड़ा कमरा इस समय बिलकुल अदालत का कमरा मालूम हो रहा था। एक ओर की दीवार से कुछ हट कर एक बड़ी मेज रखी हुई थी जिस पर हथकड़ियों का एक जोड़ा रखा हुआ था। दीवार की ओर दीवार और मेज के मध्य एक ऊँची कुर्सी रखी हुई थी। मेज के दाहिने और बायें एक एक कुर्सी पड़ी हुई थी और सामने की ओर पांच छः कुर्सियां रखी हुई थी।

"आप अपना आसन ग्रहण कीजिये..." विनोद ने ऊँची कुर्सी की ओर संकेत करते हुये जज सेठी से कहा।

जब जज सेठी बैठ गये तो मेज के दाहिने बायें पड़ी हुई कुर्सियों की ओर संकेत करते हुये विनोद ने मजिस्ट्रेट और एस० पी० से कहा।

"यह आप लोगों के लिये हैं।"

वह दोनों भी जब बैठ गये तो राजन ने कुंवर अमर सिंह से भी बैठने के लिये कहा और कुंवर साहब सामने पड़ी हुई कुर्सियों में से एक पर बैठ गये। शेष कुर्सियां खाली पड़ी रहीं।

"क्यों भाई। उपस्थित होने वाले लोगों में एक ही सज्जन हैं।" जज सेठी ने हँसते हुये विनोद से पूछा। शब्द सज्जन उन्होंने कुंवर के लिये प्रयोग किया था।

"यह कुर्सियां उपस्थित होने वाले सज्जनों के लिये नहीं हैं..." विनोद ने कहा।

"फिर।"

"यह उन लोगों के लिये हैं जिन पर अपराधी होने का सन्देह है..." विनोद ने कहा फिर बोला "प्रथम इसके कि कार्रवाई आरम्भ हो...मैं यह प्रार्थना करूंगा कि बिना जमानती वारन्ट पर दस्तखत कर दी जाये। जिस पर जुर्म साबित होगा उसका नाम बाद में लिख दिया जायेगा..."

इतने में एक आदमी कमरे में दाखिल हुआ और एक ओर खड़ा हो गया।

"क्या आ गये।" विनोद ने उससे पूछा।

"जी हां..." उस आदमी ने कहा।

"उन्हें अतिथि शाला में बैठाओ..."

"जो अच्छा..." कह कर वह आदमी चला गया।

"अब कार्रवाई आरम्भ की जाये श्रीमान जी।" विनोद ने जज सेठी से पूछा।

"आरम्भ करो..." जज सेठी ने कहा।

"श्रीमान जी! मैं ही वकील सफाई भी हूँ और मैं ही वकील इस्तगासा भी हूँ...इसलिये पहले मैं संक्षिप्त रूप से सारी बातें दुहराऊँगा उसके बाद उन लोगों को प्रस्तुत करूंगा जिन पर अपराधी होने का सन्देह है। उनके पक्ष या विपक्ष में बयान दूँगा......फिर आप जो फैसला करेंगे उसके अनुसार कार्य करूंगा...।"

इतना कह कर विनोद मौन हो गया और कमरे में गहरी खामोशी छा गई। फिर विनोद ने गला साफ करके कहना आरम्भ किया।

"यह केस यहाँ से आरम्भ होता है कि आज से लगभग पन्द्रह दिन पहले इस हवेली के मालिक कुंवर अमर सिंह को धमकियाँ मिलनी आरम्भ हुईं कि यदि उन्होंने अपनी नीति या व्यवहार नहीं

बदला तो उन्हें खून का उजाला देखना पड़ेगा। मिलने वाली किसी भी धमकी में कुंवर से कोई मांग नहीं की गई थी…बस धमकी ही धमकी थी। फिर आज से तीन दिन पहले अचानक एक रात में तीन कत्ल हो गये। जालिम सिंह…महेन्द्र सिंह और रनबीर सिंह। यह तीनों इसी हवेली में रहते थे। अब यह प्रश्न सामने हैं कि अपराधी अपनी धमकियों से अपनी कौन सी माँग कुंवर अमर सिंह से पूरी कराना चाहता था ?…यह तीन आदमी क्यों कत्ल हुये ?… खून का उजाला क्या है ?…अपराधी कौन है ? यही चार प्रश्न हैं जिनके प्रकाश में इस मुकदमे का फैसला होगा…अब मैं और सारी बातें बताने जा रहा हूँ।"

उसने संक्षिप्त में सारी बातें बता दीं, मगर डायरी और निरंजन वाली बात गोल कर गया, फिर हमीद की ओर मुड़ कर बोला।

"अतिथि शाला से ड्यूड अब्राहाम को ले आओ।"

हमीद चला गया और थोड़ी देर बाद अब्राहाम को साथ लेकर वापस आया। इस मध्य कमरे में गहरी स्तब्धता छाई रही थी और कुंवर अमर सिंह के चेहरे पर एक रंग आता रहा था और एक जाता रहा था।

"यह ड्यूड अब्राहाम हैं…" विनोद ने कहा "कुँवर अमर सिंह के दादा जी के प्राइवेट सेक्रेटरी थे। कुँवर जी के पिता जी के जमाने में भी उसी पद पर रहे। यह इस हवेली का हर भेद जानते हैं। यह उन लोगों में से हैं जो खाई पार करके हवेली में आ सकते हैं! आज से कई वर्ष पहले कुँवर अमर सिंह ने इन्हें हवेली से निकाल दिया था। इनको यह शिकायत थी कि कुँवर जी ने रनजीत को हवेली में क्यों जगह दे रखी है और इसालिये इन्होंने कुँवर साहब को धमकियाँ भी दी थीं…क्यों मिस्टर अब्राहाम! यह बातें मैंने गलत कही हैं या सच है।"

चौकी में रहा था।"

"वहां क्या कर रहे थे।" विनोद ने पूछा।

"मुझे यह सूचना मिली थी कि कुँवर को धमकियां मिल रही हैं। मेरा विचार था कि यह काम रनजीत का है। मैं पुलिस को इस पर तैयार कर रहा था कि वह सन्देह में रनजीत को गिरफ्तार कर ले और उसे यातनायें देकर सारी बातें उगलवा ले…।"

विनोद जज सेठी की ओर मुड़ा और बोला।

"मिस्टर डयूड अब्राहाम ने जो बयान दिया है वह सच है। मैंने पुलिस से इसकी तस्दीक कर ली है कि जिस रात जालिम सिंह… महेन्द्र सिंह और रनबीर सिंह की हत्या हुई थी…उस रात यह पुलिस चौकी ही में रहे थे…इसलिये यह कातिल नहीं हो सकते।"

"मैं इन्हें बरी करता हूं……।" जज सेठी ने मुस्कुरा कर कहा।

विनोद ने संकेत किया और अब्राहाम खाली कुर्सियों में से एक पर बैठ गया। वह कुंवर की बगल ही वाली कुर्सी थी।

विनोद ने फिर हमीद की ओर देखा और वह बाहर निकल गया।

फिर उस समय तक कमरे में सन्नाटा छाया रहा जब तक कि हमीद वापस नहीं आ गया। इस बार उसके साथ सुरेश था।

"यह आपके भतीजे हैं…" विनोद ने कहा।

"कोई भी हो…मैं हूँ…तुम हो या मेरा लड़का, हो या भतीजा हो…कानून की नजरों में सब बराबर हैं…" जज सेठी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मिस्टर हरीश तीन कारणों से सन्दिग्ध हैं…" विनोद ने कहा "हमीद ने इनको इस हवेली की वाटिका की चार दीवारी के पास तरुन से बातें करते हुये देखा था और उसके बाद ही महेन्द्र सिंह

की लाश दिखाई दी थी। सवेरे यह आपकी कार में हवेली तक आये थे। मेकअप में···और उस कार पर जो क्रेट रखी हुई थी उसमें मछलियों के बदले रनबीर सिंह की लाश थी···तीसरी बात यह कि यह भी खाई द्वारा हवेली में दाखिल होने का मार्ग जानते थे···मगर इन तीनों कारणों के बाद भी मिस्टर सुरेश अपराधी नहीं हो सकते। इसलिये कि गृह बाटिका में चारदीवारी के पास जिसने भी तरुन और हमीद का गला घोंटने की कोशिश की थी वह मिस्टर सुरेश नहीं थे। उस समय मिस्टर सुरेश मेरे साथ थे जब हमीद और तरुन का गला घोंटने की कोशिश की गई थी। क्रेट में मछलियों के बदले लाश कैसे निकली···यह कार कहाँ से लाये थे···नकली डाढ़ी मोंछ लगा कर हवेली में क्यों दाखिल हुये थे···यह सब बातें यह कैप्टन हमीद को बता चुके हैं···और यही बातें इन्होंने अपने बयान में पुलिस को भी बताई हैं। इन्होंने एक दुबले पतले अपाहिज आदमी पर अपना सन्देह प्रकट किया है।"

"श्रीमान जी!" हमीद ने जज सेठी को सम्बोधित किया "मैं मिस्टर सुरेश से कुछ प्रश्न करने की आज्ञा चाहता हूँ···।"

"आज्ञा है···।" जज सेठी ने कहा।

"आप पर जब होटल में प्लेट और गिलास फेंका गया था उसके बाद आप कहाँ चले गये थे।" हमीद ने सुरेश से पूछा।

"मैं ऊपर चला गया था···" सुरेश ने कहा।

"क्यों···किससे मिलने गये थे।" हमीद ने पूछा।

सुरेश का चेहरा पसीने से भीग गया और राहाँसा हो गया। बड़ी कठिनाई से उसने भर्राये हुये स्वर में कहा।

"विगत रात कोई कत्ल नहीं हुआ···लेकिन फिर भी विगत रात मेरे कहीं जाने के कारण मुझे यह सन्देह किया जा रहा है तो मुझे फाँसी दे दी जाये···लेकिन मैं अपने बिल्कुल एक निजी मामिले के बारे में कुछ नहीं बताऊँगा···।"

"सच है···" अब्राहाम ने कहा।

"अब यह बताइये कि आप रनजीत का हवेली में रहना क्यों नहीं पसन्द करते थे। उनको हवेली से क्यों निकलवाना चाहते थे।" विनोद ने पूछा।

'इसलिये कि रनजीत हरामी है। बड़े ठाकुर ने उसकी माँ से शादी नहीं की थी। वह बड़े ठाकुर की नाजायज सन्तान है।"

"आपके कितने बच्चे हैं।" विनोद ने पूछा।

"कई हैं मगर उनमें एक ही जायज है और शेष नाजायज अर्थात् हरामी हैं। जायज सन्तान का नाम सारा ड्यूड उर्फ चंचल है। कुँवर अमर सिंह सारा से शादी करना चाहते हैं······लेकिन रनजीत उनके मार्ग का रोड़ा बना हुआ है। वह सारा से प्रेम करता है और उसी से शादी करना चाहता है······यह मेरा अपना विचार है।"

"यह बकवास है···" कुँवर चीख पड़े।

"मैंने अपना विचार प्रकट किया है···" अब्राहाम ने शान्त स्वर में कहा "यह बात मुझे मालूम हो चुकी थी कि कोई व्यक्ति सारा से प्रेम करता है और उससे शादी करना चाहता है···मेरे विचार से वह रनजीत ही था जो अपने मार्ग से कुँवर को हटा देना चाहता था···इसी आधार पर मैंने रनजीत को हवेली से हटा देना चाहा था।"

"जिस रात जालिम सिंह···महेन्द्र सिंह और रनबीर का कत्ल हुआ था तो आप कहाँ थे।"

"मैं हवेली में आया था केवल यह देखने के लिये रनजीत है या नहीं···उसके बाद मैं चला गया था।"

"कहाँ गये थे।" विनोद ने पूछा।

"पुलिस चौकी···रात ग्यारह बजे से लेकर सुबह तक पुलिस

सुरेश कातिल या मुजरिम हैं…” विनोद ने कहा जज सेठी तो मौन रहे मगर मजिस्ट्रेट और एस० पी० ने कहा।

“कैप्टन हमीद के प्रश्नों और मिस्टर सुरेश के उत्तरों से हम भी उसी निष्कर्ष पर पहुँचे और जिस पर कर्नल विनोद पहुँचे हैं… अर्थात् मिस्टर सुरेश किसी प्रकार दोषी नहीं करार दिये जा सकते—।”

जज सेठी ने इस बार भी कुछ नहीं कहा। विनोद ने उसे खाली कुर्सियों में से एक पर बैठने के लिये कहा और हमीद को संकेत किया।

हमीद बाहर निकल गया और थोड़ी ही देर बाद रनजीत को लेकर वापस आ गया। विनोद ने उसकी ओर संकेत करते हुये कहना आरम्भ किया।

“यह युवक रनजीत सिंह न केवल सन्दिग्ध है बल्कि परिस्थिति ऐसी है कि मुझे भी इनको अपराधी समझना पड़ा है। यह कुँवर के सौतेले भाई हैं और हवेली के लोग इन्हें घृणा की नजरों से देखते हैं। यह उस रात गायब रहे जिस रात जालिम सिंह—महेन्द्र सिंह और रनधीर सिंह को हत्या हुई थी…।” विनोद ने इतना कह कर रनजीत सिंह की ओर देखा और कहने लगा “अगर आप अपनी सफाई में कुछ कहना चाहते हो तो कह सकते हैं।”

“मुझे अपनी सफाई में केवल इतना ही कहना है कि जिस रात यह तीनों आदमी कत्ल किये गये थे। उसी रात मुझे कैद कर लिया गया था और उस कैद से खुद कर्नल साहब ने मुझे मुक्ति दिलाई थी…और उन लोगों को गिरफ्तार कर लिया था जिन्होंने मुझे कैद कर रखा था। यह बिल्कुल सच है कि हवेली वाले मुझे घृणा की नजरों से देखते हैं। मुझे हरामी समझते हैं…कहते हैं कि मैं बड़े ठाकुर की जायज सन्तान नहीं हूँ…और यह सब झूठ है। कुँवर भैया जानते हैं कि सच्चाई क्या है लेकिन मैं यह नहीं जानता कि

"श्रीमान जी! अभी तरुन...सारा...निरंजन और आपके ड्राइवर बाकी हैं...लेकिन चूंकि इन लोगों के बयान में कोई विलक्षण नहीं है इसलिये मैं इन चारों को एक साथ बुलाता हूं...आज्ञा है?"

जज सेठी ने स्वीकारात्मक ढङ्ग से गर्दन हिलाई और विनोद ने हमीद को संकेत किया।

हमीद बाहर निकल गया और फिर तरुन...सारा...ड्राइवर और निरंजन को लेकर आ गया।

इनमें सबसे उदास चेहरा सारा का था। विनोद ने निरंजन और ड्राइवर की ओर देख कर पूछा।

"तुम दोनों स्मगलर हो ना?"

दोनों ने स्वीकारात्मक ढंग से सर हिला दिया।

विनोद ने जेब से एक कागज निकाला और उसे जज सेठी की ओर बढ़ाते हुये कहा।

"यह इन दोनों का बयान है। इन पर इनके हस्ताक्षर हैं। इन्होंने समर्थन किया है कि यह स्मगलिङ्ग करते हैं...।"

कागज जज सेठी को देकर विनोद ने ड्राइवर से पूछा।

"तुमने अपने बयान में किसी रहस्यपूर्ण आदमी का उल्लेख किया है?"

"जी हाँ..." ड्राइवर ने कहा।

"रात तुम उसी के यहां गये थे?"

"जी हाँ...।"

"उसने रनजीत सिंह को क्यों गिरफ्तार करवाया था?"

"कत्ल करने के लिये...।"

"वह रनजीत सिंह को क्यों कत्ल करना चाहता था?"

"यह मैं नहीं जानता।"

"तुमको या निरंजन को यह कैसे मालूम हुआ था कि डायरी

"आपको यह मालूम है कि कुँवर साहब सारा से प्रेम करते हैं।" हमीद ने पूछा।

"हाँ...मालूम है...और मैं यह भी जानता हूँ कि केवल कुंवर साहब बल्कि जालिम सिंह...महेन्द्र सिंह, रनबीर सिंह और रनजीत सिंह और रनजीत सिंह भी सारा को अपनाना चाहते थे...।"

कुंवर का चेहरा लाल हो गया मगर वह कुछ बोले नहीं। सुरेश कहता रहा।

"यह चारों बहुत ऐयाश थे और एक बार इन्होंने किसी लड़की का सतीत्वहरण भी किया था। यह चारों ही संयुक्त प्रेम के कायल थे मगर सारा के मामिले में यह सब एक दूसरे से अपनी बातें गुप्त रखते थे।"

"क्या इन चारों को भी यह बात मालूम थी कि कुंवर जी भी सारा से प्रेम करते हैं।" हमीद ने पूछा।

"नहीं...इसे स्वयं सारा जानती थी...तरून जानती थी और एक रहस्यपूर्ण आदमी जानता था...।" सुरेश ने कहा।

"और वह रहस्यपूर्ण आदमी खुद आप हैं...।" हमीद ने कहा।

"जी नहीं...मुझे तो हाल ही में तरून ने बताया था...मिस्टर ह्यूड अब्राहाम को भी यह बात हाल ही में मालूम हुई थी। वह रहस्यपूर्ण व्यक्ति कोई और है जिसे मैं नहीं जानता। तरून को यह बात खुद सारा ने ही बताई थी। सारा भी नहीं जानती कि वह रहस्यपूर्ण आदमी कौन है जो उससे प्यार करता है...क्योंकि वह हमेशा नकाबपोश के रूप में उससे मिलता रहा है।"

"बस श्रीमान जी! अब मुझे कुछ नहीं पूछना है..." हमीद ने जज सेठी से कहा।

"मिस्टर सुरेश के बयान से यह नतीजा तो निकाला जा सकता है कि यह कुछ छिपा रहे हैं—लेकिन यह साबित नहीं होता कि मिस्टर

कुँवर भैया ने इस रहस्य पर से आवरण क्यों नहीं हटाया। लोगों को यह क्यों नहीं बताया कि सच्ची बात क्या है…!"

रनजीत ने रुक कर कुँवर अमर सिंह की ओर देखा। उनका चेहरा काला पड़ गया था।

"लेकिन आज मैं सच बोलूँगा…" रनजीत ने एक एक शब्द पर ज़ोर देकर कहा "मैं बड़े ठाकुर की जायज सन्तान हूँ और इसका समर्थन मेरी माँ और बड़े ठाकुर दोनों ही कर चुके थे। इसी कारण कुँवर भैया ने मुझे भी अपना वारिस बनाया था। कुंवर भैया मुझे बहुत चाहते हैं। मैं भी न केवल उन्हें चाहता हूँ बल्कि हृदय से उन का सम्मान भी करता हूँ… इसी कारण से मैंने सदैव उनकी आज्ञाओं का पालन करता चला आया हूं। उन्होंने ही मुझे आज्ञा दी थी कि मैं सारा से प्रेम प्रदर्शन करूं और यह भी पता लगाऊं कि ज़ालिम सिंह… महेन्द्र सिंह और रनबीर सिंह सारा से प्रेम करते हैं या नहीं।"

"आपने कुंवर साहब की आज्ञा का पालन किया?" विनोद ने पूछा।

"जी हां……उनकी आज्ञा का पालन करना मेरा कर्त्तव्य था…।" रनजीत ने कहा "मैंने सारा से प्रेम प्रदर्शन करना भी आरम्भ कर दिया और उन तीनों के बारे में पता लगाने की भी कोशिश करने लगा। पता चला कि वह तीनों सारा से प्रेम करते थे मगर सारा उनकी ओर आकृष्ट नहीं थी। सारा कुंवर भैया से शादी करना चाहती है मगर किसी रहस्यपूर्ण आदमी से भयभीत है। मैंने कुंवर भैया की आज्ञा से उस रहस्यपूर्ण आदमी का भी पता लगाने की कोशिश की…इस प्रयास में असफल रहा या सफल रहा… यह कर्नल विनोद जी जानते हैं।"

विनोद ने रनजीत को बैठने के लिये कहा फिर जज सेठी से बोला।

फलां जगह रखी हुई है ?"

"सारा ने बताया था...।"

विनोद सारा की ओर मुड़ा।

"मिस सारा डयूड ! आपके बारे में यह सुना जाता रहा है कि तीनों हत्याओं में आप ही का हाथ है...कुंवर को धमकी देने वाली आप ही हैं...मगर मैंने इस पर विश्वास नहीं किया था...इसका विश्वास न करने का एक कारण था...।"

"आपने क्या क्या सुना और अब आप क्या कहना चाहेंगे इससे मुझे कोई मतलब नहीं है..." सारा ने बात काट कर कहा "मैं केवल यह कहना चाहती हूँ कि मुझे अपनी सफाई में कुछ नहीं कहना है।"

"मुझे आपकी सफाई की आवश्यकता भी नहीं है..." विनोद ने कहा "मैं केवल यह पूछना चाहता हूँ कि आपको उस डायरी के बारे में किसने बताया था ?"

"तरुन ने..." सारा ने कहा।

"और मैं तरुन से कुछ नहीं पूछूंगा..." विनोद ने ड्रामाई ढंग से कहा।

हमीद ने देखा सुरेश का चेहरा बिल्कुल धुआं हो गया है। कुंवर भी कांप रहे थे और तरुन उसके चेहरे से तो ऐसा लग रहा था जैसे वह बेहोश होकर गिरने ही वाली है...मगर जैसे ही विनोद की आवाज उभरी उसके चेहरे पर शान्ती नजर आने लगी। विनोद कह रहा था।

"एक रहस्यपूर्ण व्यक्ति का उल्लेख लगभग सब के बयान में है...और यह भी निश्चित है कि वह रहस्यपूर्ण व्यक्ति नारी नहीं वरन् पुरुष है। मैं उस रस्सी पर अंगुलियों के निशानों के प्रिन्ट देख चुका हूं जिससे महेन्द्र का गला घोंटा गया था...मेरे पास वह डायरी भी है...और वह डायरी...।"

सेठी की लड़की को हर ले गये थे। उन तीनों ने रात भर उसे अपने साथ रखा और उसकी नंगी तस्वीरें खींची। उसकी लड़की ने आत्म हत्या कर ली। जब सेठी को यह बात मालूम हुई तो उसने निश्चय कर लिया कि वह इन तीनों को कत्ल कर देगा। उसने इसके लिये एक प्रोग्राम तैयार किया और निरंजन से सहायता ली। निरंजन ने सेठी के ड्राइवर से सहायता ली। सेठी कुंवर का गहरा मित्र था लेकिन चूंकि वह भी सारा से प्रेम करता था और वह भी जानता था कि कुंवर भी सारा से प्रेम करता है—इसलिये उसने कुंवर को धमकियां देना आरम्भ किया ताकि कुंवर भयभीत होकर सारा का विचार अपने दिल से निकाल दे। सारा से सम्बन्ध विच्छेद कर ले और तब वह सारा को प्राप्त कर ले। खाई द्वारा हवेली में दाखिल होने वाला मार्ग वह भी जानता था और वही नकाब पोश के रूप में सामने आता रहा था सुरेश ने उसे पहचान लिया था। उस रात उस होटल में भी सुरेश ने उसे देख लिया था और डर के मारे छिप गया था। तुम्हें याद होगा कि होटल में सुरेश ने तुमसे कहा था कि अब मैं कोठी जा रहा हूं और वहां मुझे खून का उबाला देखना पड़ेगा। सुरेश ने इस बात का समर्थन कर लिया है कि वह जानता था कि सेठी ही असल मुजरिम है और यह बात उसने तरून को बता दी थी। तरून सारा की सहेली थी। तरून सारा को और कुछ तो न बताया था मगर इतना अवश्य बता दिया था कि अगर वह डायरी मिल जाये तो असल मुजरिम का पता लग सकता है।"

"उस डायरी में है क्या?" हमीद ने पूछा।

"वह डायरी सेठी की लड़की है जो उसने अपनी आत्म हत्या वाली रात को लिखी थी। डायरी में उसने सारा से सेठी के प्रेम करने वाली भी बात लिखी है...और उस परिस्थिति के बारे में लिखा है जिस परिस्थिति के अन्तर्गत आलिम, महेन्द्र और रनबीर उसे हर ले गये थे...उसने यह भी लिखा है कि वह परिस्थिति सेठी ही के

विनोद ने रुक कर जज सेठी की ओर देखा और कोमल स्वर में बोला।

"अगर आप यह चाहते हैं कि इस जनसमूह में वह डायरी न पढ़ी जाये तो वह वारन्ट जिस पर अभी तक मुजरिम का नाम नहीं लिखा गया है उस पर आप अपना नाम लिख दीजिये।"

एक क्षण के लिये ऐसा लगा जैसे पूरे कमरे में सनसनी फैल गई हो। कुंवर को तो विश्वास ही नहीं हो रहा था। तरुन और सुरेश के चेहरे से हार्दिक वेदना टपकने लगी थी।

विनोद ने फिर हमीद को संकेत किया और वह तेजी से बाहर निकल गया। वापस आया तो इस बार उसके साथ हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस और आई० जी० साहब थे।

जज सेठी अपनी कुर्सी पर उसी प्रकार तथा बैठा हुआ था। उसका चेहरा सफेद पड़ गया था। फिर जैसे ही आई० जी० साहब ने हथकड़ियों का जोड़ा उठाकर उसके हाथों में डालना चाहा वैसे ही वह कुर्सी सहित नीचे गिरा। लोग उसी ओर दौड़ पड़े। कुंवर भौंचक्का होकर विनोद की ओर देख रहे थे......फिर मर्राई हुई आवाज में बोले।

"हार्ट फेल हो गया...।"

"नहीं कुंवर साहब..." विनोद ने कहा "इसने आत्म हत्या कर ली है।"

हमीद ने विनोद की ओर देखा और विनोद कहने लगा।

"सेठी ने जो कुछ भी किया गलत किया, लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि उसकी लड़की का रहस्य खुले डायरी उसकी लड़की की थी। कहानी यह है कि जालिम सिंह...महेन्द्र सिंह और रनबीर सिंह

कारण पैदा हुई थीं। उन तीनों को सेठी ने ही उकसाया था कि वह सारा से प्रेम करें। जो तलवार वह सारा पर चलाना चाहता था वह खुद उसकी लड़की ही पर चल गई। दिलचस्प बात यह है कि जहाँ सेठी की लड़की ने डायरी समाप्त की है वहां सेठी ने खुद डायरी लिखनी आरम्भ कर दी है।"

"निरंजन को कैसे पता चला था कि डायरी किस जगह रखी है?" हमीद ने पूछा।

"डायरी सुरेश ने चुरा ली थी। उसने यह बात तरून को बताई थी…तरून ने सारा को और सारा ने निरंजन को बताया था। अब कुवर और सारा…।"

"की शादी होने वाली है…" हमीद ने जल्दी से बात काट कर कहा। फिर लम्बी सांस लेकर बोला "इस दुनिया में सब का जोड़ा पैदा किया गया है मगर…।"

"तुमने फिर बकवास आरम्भ कर दी।" विनोद ने रूखे स्वर में कहा और खुली हुई खिड़की की चौखट पर कुहनियाँ टेक कर बाहर शून्य में देखने लगा। आकाश पर बादलों के छोटे छोटे टुकड़े तैर रहे थे।

—०:: समाप्त ::०:—

जासूसी दुनिया हिन्दी

का

आगामी उपन्यास

विशेषांक

आग की परियाँ

लेखक :—इब्ने सफी बी० ए०

अनुवादक :—प्रेम प्रकाश

• एक नया नगर बन रहा था और दो विदेशियों ने उत्पात मचा रखा था। पुरुष का नाम था चार्ल्स योगेन्दर और नारी का नाम था डेनी गायत्रा! यह दोनों योगी थे—यह दोनों हिप्पी थे—यह दोनों अपराधी थे। एक सनसनी फैल गई कि नारी पुरुष में समा गई और पुरुष गायब होगया—लेकिन···?"

• एक बार उस औरत ने हाथ बढ़ाया और वह भयभीत हो गया···औरत के सुन्दर शरीर पर वह झुलसा हुआ हाथ जिस पर नोकीले काँटों के समान बाल उठे हुये—"।

• विचित्र कोलाहल था···जानवर नाच रहे थे···रीछ हाथी की पूँछ मरोड़ रहा था···लोमड़ी फुदक रही थी···अचानक रीछ लोमड़ी को उठा कर भागा और लोमड़ी ने रिवाल्वर निकाल लिया।

• आग के शोले भड़क रहे थे और उन शोलों में वह नाच रही थी···कदाचित इसी लिये उन्हें आग की परियाँ कहा गया था। वह

आग आग नकली नहीं थी…बल्कि असली थी…एक ने उस आग से अपनी सिगरेट जलाई और फिर वह अपना गला घोंटने लगा—संसार का सबसे अनोखा कत्ल।

• हमीद के लिये विस्फोटक सूचना…कासिम और उस की पत्नी कुछ क्षणों के लिये प्रेम पूर्ण सम्बन्ध।

• हमीद और आसिफ में झगड़ा…हमीद ने आसिफ को चोर साबित कर दिया था।

• विनोद के सामने के केवल एक ही मार्ग रह गया था…या हमीद की मौत या देश की मर्यादा तथा प्रतिष्ठा का सौदा।

यह अनुपम विशेषांक **"आग की परियाँ"** जिस की एक एक पंक्ति रहस्य, विस्मय तथा मनोरंजन से परिपूर्ण है **दिसम्बर ७१** के अन्तिम सप्ताह में प्रकाशित हो रहा है।

वार्षिक मूल्य	इस का मूल्य :—
१२ रूपये ५० पैसे	**२ रूपये**

प्रकाशक :—

जासूसी दुनिया प्रकाशन

इलाहाबाद—३

धारावाहिक कहानी—नम्बर ५०

सहर होने तक

श्री शकील जमाली

सूरज डूब चुका था। यमुना की चँचल लहरें शान्त थी। मल्लाहों की नौकायें धीरे धीरे घाट की ओर बढ़ रही थी। किनारे दूर तक मछलियों के जाल फैले हुये नजर आ रहे थे कुछ बड़ी नवकायें जो पहले ही से घाट पर लगी हुई थीं—उन पर मल्लाह आग जला कर भोजन बनाने लगे थे।

मोटर से उतरने के बाद जावेद कहकशाँ को लिये हुये यमुना ब्रिज की ओर बढ़ गया।

यमुना ब्रिज अपने सौन्दर्य और नजर से निकट होने के आधार पर एक विशेष महत्व रखता है। सन्ध्या को लोग नगर के उत्पातों से घबड़ा कर खुली हवा में सांस लेने के लिये वहाँ चले आते हैं। वहाँ से यमुना का दृश्य बड़ा आकर्षक लगता है।

जावेद और कहकशाँ भी यमुना ब्रिज पर टहलते हुये बड़ी दूर तक चले गये और फिर एक स्थान पर खड़े होकर वह नदी के पूर्वीय तट की ओर देखने लगे जहाँ यमुना के हलके नीले जल पर आने वाली नौकायें रूक रही थी। काफी दूरी पर नदी के किनारे अकबर के बनवाये हुये इलाहाबाद के प्रसिद्ध दुर्ग का कुछ भाग नजर आ रहा था जिस पर वायर लेस के ऊँचे ऊँचे लोहे के छड़ लगे हुये थे। यह दुर्ग मुगल साम्राज्य की एक ऐसी यादगार है जिस की बुनियादों में मैं अशोक के युग के भी बहुत उभरे हुये चिन्ह दिखाई देते हैं। अब इस मे गन फैक्ट्री है और मिलेट्री के बड़े बड़े आफिसर भी रहते हैं। किले से थोड़ी दूर पर गङ्गा यमुना का प्रसिद्ध सगम है।

इससे आगे की कहानी आगामी अंक "आग की परियाँ" में पढ़िये।

ग़ज़ल

श्री मजाज़

सारा आलम गोश बर आवाज है !
आज किन हाथों में दिल का साज है !!
हाँ जरा जुरअत दिखा ए जज्बे दिल !
हुस्न को पर्दे पर अपने नाज है !!
हम नशीं दिल की हकीकत क्या कहूँ !
सोज में डूबा हुआ इक साज है !!
आप की मखमूर आँखों की कसम !
मेरी मै ख्वारी अभी तक राज है !!
हँस दिये वह मेरे रोने पर मगर !
उन के हँस देने में भी इक राज है !!
छिप गये वह साजे हस्ती छेड़ कर !
अब तो बस आवाज ही आवाज है !!
सारी महफिल जिस पर झूम उठी मजाज !
वह तो आवाजे शिकस्ते साज है !!

—:०:—

प्रेम लीग

जासूसी दुनिया हिन्दी में यह स्तम्भ इसलिये स्थापित किया गया था कि जासूसी दुनिया के प्रेमियों के पते इसमें प्रकाशित हो और पाठक एक दूसरे से पत्र-व्यवहार करके आपस में एकता और बधुत्व स्थापित करें। यह स्तम्भ काफी दिनों तक चलता रहा, मगर फिर हमारे सामने कुछ ऐसी विवशतायें आ गईं कि यह स्तम्भ स्थगित कर देना पड़ा था।

मगर इधर काफी दिनों से हमारे पाठकों का बराबर हम पर दबाव पड़ रहा था कि प्रेम लीग स्तम्भ फिर से स्थापित किया जाये, पाठकों के अनुरोध को टालना हमारे वश की बात नहीं थी, इसलिये इस अंक से फिर प्रेम लीग स्तम्भ स्थापित किया जा रहा है।

कृपया पोस्ट कार्ड पर अपना नाम और पता बिल्कुल साफ साफ ठीक लिखिये। पते केवल हिन्दी में लिखे जायें और पते के अतिरिक्त यदि किसी दूसरी भाषा मे पते लिखे जायेंगे तो वह प्रकाशित न हो सकेंगे।

पते का क्रमानुसार प्रकाशित होते रहेंगे इसलिये आगे पीछे छपने की शिकायत किसी भी प्रेमी को नहीं होनी चाहिये।

—रमेश कुमार "गौर्खाली"
'सुन्दर स्टोर्स
सुन्दर निवास
बीरगंज (नेपाल)

—नस्तासे दि ग्रेट
सुन्दर निवास
मेन रोड
बीरगंज (नेपाल)

—लोकेश "गोर्खाली"
मेन रोड
पर्सा, बिरगंज (नेपाल)

—लोकेश "गोर्खाली"
'स्टेशन रोड'
मुरली, बिरगंज (नेपाल)

समाचार

आगरा-कानपुर मार्ग पर दुस्साहसिक कार्य

(निज सम्वाददाता द्वारा)

आगरा, १५ नवम्बर। आगरा जिले तथा उसकी आस पास की सीमाओं पर दो दुस्साहसिक घटनाएं घटित होने के समाचार मिले हैं, जिनमें एक लूट की घटना में पुलिस अपराधियों का पता लगाने का प्रयास कर रही है तथा दूसरी में पुलिस ने एक एडवोकेट को सन्दिग्धावस्था में गिरफ्तार कर लिया।

प्राप्त विवरण के अनुसार लूट की दुस्साहसिक घटना आगरा-कानपुर राजमार्ग पर घटित हुई, जिसमें अपराधियों ने मतौरा ग्राम के समीप सड़क पर पेड़ काट कर रास्ता रोक दिया तथा आगरा-लखनऊ जाने वाली दो रात्रिकालीन बसों, एक जीप, ट्रैक्टर तथा ११ ट्रकों को लूट लिया। लगभग एक दर्जन सशस्त्र बदमाशों का यह गिरोह लगभग १० हजार रुपये का माल लूट कर ले जाने में सफल रहा। डाकू लूट के सामान में पुलिस के हेड कानेस्टेबिल की वर्दी भी लूट ले जाने में सफल रहे।

बताया जाता है कि दूसरी घटना में पुलिस ने सन्दिग्धावस्था में एक एडवोकेट को मथुरा के बंगाली घाट पर एक गाड़ी स्टार्ट करने का प्रयास करते हुये हिरासत में ले लिया। कहा जाता है कि बाद में तलाशी पर उक्त कार में चोरी के औजार तथा कार की असली नम्बर प्लेट बरामद हो गई।

दलजीत सिंह पंजाबी
लछमण होटल
पटेल बाबू रोड,
भागलपुर—१
(विहार)

—दीनानाथ प्रसाद साहु
साहु मार्ग
बगहा
जि० —चम्पारण
(बिहार)

रामबहादुर "प्रतिनिधि"
'मीना बजार'
नारायणी अंचल
बिरगंज (नेपाल)

—गुलशन पामर
आजद भवन,
मुक्तसर
(पंजाब)

-रन्धीर सिंह 'प्रबोध'
द्वारा श्री बृजमोहन सिंह
'हेड-स्टोर कीपर'
अजुध्या शुगर मिल्स
राजा का सहसपुर
(उ० प्र०)

—कु० जगजीत कौर
द्वारा एस० जे० सिंह
दूसरी मजिल, दूसरी बिल्डिंग
हमीदिया स्कूल के सामने
गिन्नोरी रोड
भोपाल (म० प्र०)

—राम बहादुर "प्रतिनिधि"
'मीना बाजार'
बीरगंज (नेपाल)

—विजय कुमार
बगहा
चम्पारण (बिहार)

-एम० के० "गोर्खाली"
नारायणी अंचल
बीरगंज (नेपाल)

—रमेश कुमार "गोर्खाली"
नारायणी अंचल
बीरगंज (नेपल)

-बी० एन० भारती
द्वारा पोस्ट मास्टर नया टोला
बेतिया, चम्पारण (बिहार)

—हरमिन्दर सिंह सचदेव
कचौरी गली
पटना सिटी (बिहार)

—शत्रुघ्न प्रसाद गुप्ता
द्वारा लक्खी बाबू एन्ड ब्रदर्श
२, मुन्शी बाजार रोड
कलकत्ता-१५

—रमेश कुमार गोर्खाली
बीरगंज (नेपाल)
मीना बाजार
नारायणी अंचल

Jasoosi Duniya January. 72
Registered with Registrar of News papers for India
Regd. No. 2156/57, Phone No. 5120 Allahabad-3

इब्ने सफ़ी की अमर कृति तथा अप्राप्य विशेषांक

लोहे का आदमी

द्वितीय संस्करण के क्रम में
१५ दिसम्बर ७१ ई० को प्रकाशित होगा

मूल्य 2 रुपये

जासूसी दुनिया प्रकाशन
इलाहाबाद-३